फादर कोन्सटंट लीवन्स

और

दिघिया

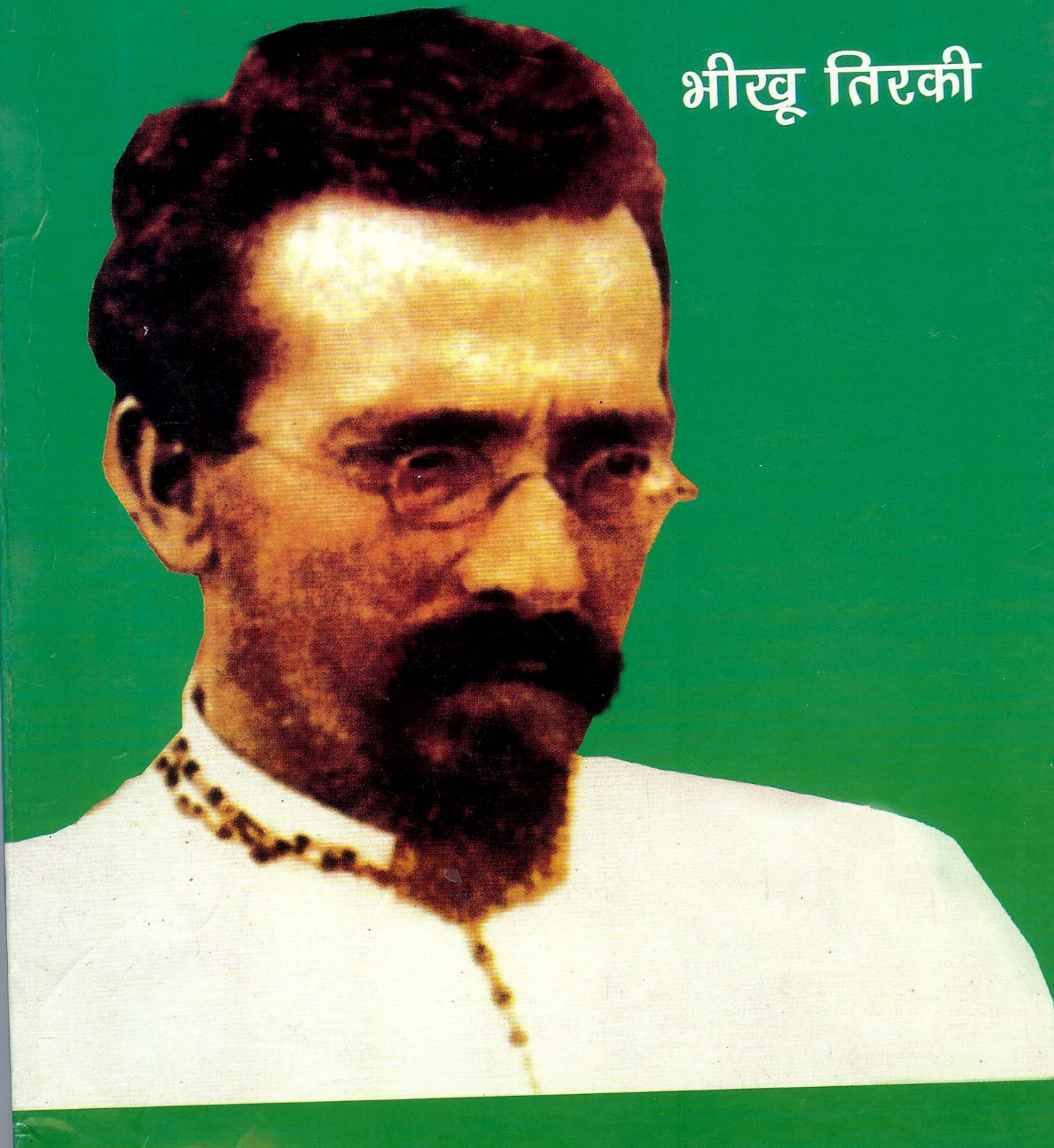

भीखू तिरकी

2

फादर कोन्सटंट लीवन्स
और
दिघिया

लेखक
भीखू तिरकी

झारखण्ड झरोखा, राँची

ISBN : 978-93-85595-58-5

प्रथम संस्करण : 2016

सर्वाधिकार © : लेखक

प्रकाशक : झारखण्ड झरोखा
शोप नं.- डी. जी. 03, न्यू बिल्डिंग, न्यू मार्केट,
रातू रोड, राँची, (झारखण्ड), पिन नं. 834001
मो. 09973112040, 09471160792
E-mail : jharkhandjharokha@yahoo.com

(किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक जिम्मेवार नहीं है।)

अजिल्द : 200.00
सजिल्द : 450.00

Father Constant Lievens Aur Dighia

by Bhikhu Tirkey

दो शब्द

इस पुस्तक के पूर्व मैंने पाँच पुस्तकों को लिखकर प्रकाशित किया है। इस पुस्तक का छठा स्थान है। फादर लीवन्स बेल्जियम के मूर्सलेड गाँव में 1856 ईस्वी में जन्में ग्यारहवें भाई-बहनों में इनका स्थान सातवाँ था। ये येसुइट समाज में पढ़-लिखकर 1885 में छोटानागपुर आये। तोरपा में मुंडा क्षेत्र में तीन वर्षों तक कार्य कर हजारों-हजार लोगों को काथलिक बनाया। इसके बाद जून 1888 में राँची-दिघिया आकर हजारों-लाखों लोगों को काथलिक धर्म में लाया। जंगलों-पहाड़ों, नदी नालों की रमणिक भूमि और आदिवासियों का प्यार और उनका काथलिक धर्म की ओर झुकाव लीवन्स के मन को मोह लिया। इसीलिए ये मरने के पहले यहाँ आने की कामना करते थे। इनकी मृत्यु 7 नवम्बर 1893 गुरूवार 2:30 बजे अपराहन को बेल्जियम में हो गई। काथलिक धर्म और संगठन का श्रेय इन्हीं पर जाता है।

दिघिया बेड़ों थाने का एक खुशहाल मौजा है। इस गाँव में चार महतो-शासक और चार पहान-पुजारी थे। गाँव संगठित और सरना धर्म पर अडिग था। 1888 में बाहर से आकर पठान परिवार बसा और घोड़े को मार डालने के बहाने में तीन टोलों के उराँवों को गाँव से मार भगाया और इनके खेतों एवं श्मशानों को दखल कर लिया। इनका अत्याचार गाँव में पूरा रहा।

राय सहेब बन्दी राम उराँव राँची के पुरानी राँची में 1872 में जन्मे। राँची जिला स्कूल में नवीं क्लास तक पढ़कर सामाजिक काम में लग गये। इन्होंने देहात के लोगों के लिए 40-50 रूम का छात्रावास बनवाया। बाद में ये राजनीति में प्रवेश किये और आदिवासी महासभा बनाया। बैठकी के लिए हिन्दपीड़ी में महासभा भवन भी बनवाया। आदिवासी पत्रिका निकाली। इन्होंने ही छोटानागपुर को बिहार से अलग करने का पहला नारा लगाया।

गानों में आदिवासी सभ्यता और जीवन के दृष्टिकोण की तस्वीर झलकती है। कुछ-कुछ गाने शिक्षाप्रद भी हैं। इनके जीवन के कार्य-कलापों एवं वातावरण के अनुरूप से ही गानों का उदगारपूर्ण प्रादुर्भाव हुआ है। नाचने-गाने के लिए जोड़ी साथी और सम्बन्धित बाजों का होना जरूरी है। तब देखिये इनके आनन्द को। इनको खाने-पीने की कोई चिन्ता नहीं। नाच-गान देखने वालों का मन भी गद-गद हो उठता है।

भीखू तिरकी

विषय सूची

1. फादर कोन्सटंट लीवन्स की संक्षिप्त जीवनी और छोटानागपुर में काथलिक धर्म का प्रचार 07–35

2. ग्राम दिघिया 36–49

3. राय साहेब बन्दी राम उराँव 50–57

4. जतरा डंडी, जदुरा डंडी, जदुरा लुझरी, माठा और झूमर 58–124

5. राज गांगपुर–उड़ीसन ता चाजिका ठड़िका कुँड़ुख़ डंडी 125–176

अध्याय - 1

फादर कोन्सटंट लीवन्स का बचपन और छोटानागपुर में कार्य

(1885 से 28 अगस्त 1892 तक)

फादर कोन्सटंट लीवन्स का जन्म बेल्जियम के मूर्सलेड गाँव में 11 अप्रील 1856 को हुआ था। इनके पिता का नाम जॉन लीवन्स था। यह एक किसान परिवार का था। इनके करीब 40 एकड़ का फारम था। इनके पास गाय-बैल और घोड़े थे जिससे परिवार का काम-काज चलता था। जॉन लीवन्स के ग्यारह बेटे-बेटियाँ थीं। इनमें इनका सातवाँ स्थान था। इतने बड़े परिवार के पालन-पोषण में इनको दिक्कत होती थी। फादर कोन्सटंट लीवन्स अपने भाई-बहनों के साथ अपने पल्ली के प्राइमरी स्कूल में पढ़ने जाया करता था। इनके पिता जी काथलिक धर्म को मानने वाले थे। ग्यारह वर्ष की उम्र में इन्होंने प्रथम परम प्रसाद ग्रहण किया। उसी वर्ष उनकी माँ बीमार पड़ गई। वह 'कोमा' में रह गई थी। लीवन्स माँ को देखने गये, माँ उन्हें पहचान तक नहीं सकीं, आशीर्वाद देना तो दूर रहा। कुछ महीनों के बाद उनका देहान्त हो गया।

माँ की मृत्यु के बाद कोन्सटंट लीवन्स को प्राइमरी स्कूल छोड़ना पड़ा। वह अपने पिता के फारम में काम करने लगा। गाय और घोड़ों की देख-रेख इन्हीं के जिम्मे में था। वह घोड़े की सवारी भी करता था। पिता के कन्धे में इतने बड़े परिवार को चलाना बहुत मुश्किल हो रहा था, इसलिए लीवन्स को पढ़ने के लिए स्कूल नहीं भेज रहा था। एक दिन वहाँ के पल्ली पुरोहित ने इनको खेतों में काम करते देखा और इनके पिता जॉन लीवन्स को कहा कि मैं इन्हें स्कूलों में मिशन के खर्चों से पढ़ाउँगा। उनके पिता ने जबाब दिया मैं इन्हें अपने खर्च से पढ़ा नहीं सकूँगा। आप इन्हें पढ़ाने के लिए ले जा सकते हैं।

पल्ली पुरोहित ने उन्हें रूसलार के उच्च विद्यालय में नामांकन करा दिया। इस समय वह 14 (चौदह) वर्ष का हो गया था। लीवन्स छः वर्षों के अन्दर ही लातिन, यूनानी, फ्रान्सिसी, जर्मन और अंग्रेजी सीख ली। उन्होंने पल्ली फादर से पुरोहित

बनने की इच्छा जाहिर की इसलिए उन्हें मिशनरी शिक्षा देना शुरू कर दी गई। वह बेल्जियम के येसु समाज में चला गया। येसु समाजी फादर डेस्मेट उस समय अमेरिका के रेड इन्डियनों के बीच काम कर रहे थे। इन्होंने कोन्सटंट लीवन्स को अमेरिका ले गया। वहाँ इन्होंने रेड इन्डियनों के बीच अपना मिशनरी काम-काज एवं सेवा को दिखाया। इस सेवा कार्य से प्रभावित वह अमेरिका में ही पुरोहित बनना चाहता था। उनकी भेंट एक समय के सहपाठी से हुई जो उनके गाँव मूर्सलेड का था उन्होंने उन्हें सलाह दी कि कलकत्ता जो भारत की राजधानी है वहाँ का मिशन बेल्जियम फादरों के अधीन है। भारत के छोटानागपुर में बहुत से सीधे-साधे गरीब आदिवासी रहते हैं वहाँ का मिशन बेल्जियम फादरों के अधीन है। भारत के छोटानागपुर में बहुत से सीधे-साधे गरीब आदिवासी रहते हैं वहाँ आप को वहाँ के आदिवासियों की सेवा करने का अच्छा मौका मिलेगा। इन्होंने उनकी बात को मान लिया। उस समय येसु समाजियों को बंगाल मिशन में भेजा जाता था। लीवन्स बुग्ग सेमिनरी के येसु समाज में प्रवेश कर लिया। उन्हें सेमिनरी की शिक्षा के लिए नवशिष्यालय में भेजा गया। लीवन्स येसु समाज के संस्थापक सन्त इग्नातियुस की त्याग और सेवा भावना के अनुरूप अपने को ढालना शुरू किया और एक सच्चा येसु समाजी बना।

इनकी सेवा भावना की प्रबल इच्छा को परखकर इन्हें भारत भेजने में कोई संकोच नहीं हुआ। 22 अक्टुबर 1880 में ब्रुसेल्स में पहला व्रत धारणा कर लिया और 28 अक्टुबर 1880 में आपने नौजवान पाँच साथियों के साथ पानी जहाज में बैठकर 2 दिसम्बर 1880 को वे कोलकत्ता (कोलकाता) पहुँचे। वहाँ के आर्चबिशप गुथौल्स ने इन्हें सन्त जेवियर्स स्कूल में ठहराया। बाद में यह स्कूल सन्त जेवियर्स कॉलेज का रूप ले लिया है। कोन्सटंट लीवन्स सन्त जेवियर्स के दस-बारह बच्चों को पढ़ाया करता था। यहीं वह बंगला भाषा भी सीख लिया। यहाँ पर इनकी नियुक्ति एक वर्ष के लिए थी। विद्यार्थियों से बंगला और हिन्दी भाषा के साथ-साथ यहाँ के लोगों के चाल-चलन, रहन-सहन और धर्म-कर्म को सीख लिया। इनको नयी-नयी चीजों को सीखने की चाह थी। दो वर्षों में ही उन्होंने अपने को हिन्दुस्तानी ढाँचा में ढाल लिया। समय पाकर वह आस-पास के पल्लियों में भी जाकर अनुभव प्राप्त कर लेता था।

धर्माध्यक्ष ने इन्हें थेओलोजी पढ़ने के लिए आसनसोल भेजा। थेओलोजी

की पढ़ाई दो वर्षों की थी। धीरे-धीरे थेओलोजी की इनकी पढ़ाई पूरी होने लगी। इनका पुरोहिताभिषेक कोलकत्ता (कोलकाता) के काथेड्रल में 14 जनवरी 1883 को बड़े धूमधाम से सम्पन्न हुआ। प्यार के रूप में उनके घर बेल्जियम से भी कुछ पैसे उपहार के रूप में भेजे गये थे। पुरोहिताभिषेक के बाद वह पक्का येसु समाजी, येसु ख्रीस्त के उपदेशों का पालनहारा बना। उनके साम्राज्य को बढ़ाने का संकल्प लिया। येसु ख्रीस्त का पक्का चेला बना। इस समय उनकी उम्र सत्ताइस साल की थी। फादर लीवन्स को आसनसोल से कोलकत्ता (कोलकाता) बुलाया गया। वे सन्त जेवियर्स कॉलेज के निचले क्लास में पढ़ाने लगे। एक साल तक पढ़ाने के बाद इन्हें आखिरी थेओलोजी की पढ़ाई के लिए पुनः आसनसोल भेजा गया। थेओलोजी की पढ़ाई की समाप्ति के बाद इन्हें स्वतंत्र रूप से रानीगंज का पल्ली पुरोहित बनाया गया। यहाँ मात्र 20-21 काथलिक थे। कड़ी मेहनत से इनकी संख्या बढ़ायी। इसी अवधि में सुपीरियर फादर ग्रोजाँ ने कोलकत्ता (कोलकाता) बुलाकर इनको छोटानागपुर के जमगांई पल्ली में जाने का आदेश दिया। कोन्सटंट लीवन्स को पहले से ही छोटानागपुर के आदिवासियों के बीच काम करने की प्रबल इच्छा थी। वह खुशी से फूले नहीं समाया।

फादर लीवन्स के पहले 1764 में अंग्रेजी शासन के होने पर सबसे पहले जर्मन लुथेरन मिशन सन् 1845 में छोटानागपुर के आदिवासियों के बीच ईसाई धर्म प्रचार करने के लिए आया। इन्होंने डोम्बा और गोबिन्दपुर को ईसाई धर्म प्रचार का अड्डा बनाया। पाँच वर्षों तक एक भी ईसाई नहीं बने। सन् 9 जुन 1850 में राँची जिला के हेत्था-कोटा के दो उराँव परिवारों को ईसाई बनाया गया उसके बाद चिता कोना के केशो और बन्धु भगत तथा कंरौदा के पूरन उराँव को ईसाई धर्म में लाया। 24 जनवरी 1855 में जर्मन मिशन का पहला गिरजा घर क्राइस्ट चर्च राँची में बना। इसके बाद लोहरदगा, चट्टी और चाईबासा तथा अन्य जगहों में चर्च स्थापित किये गये। ये कोर्ट केशो में मदद करने लगे जिससे ईसाइयों की संख्या बढ़ी। अभी इस चर्च का विस्तार 12 (बारह) राज्यों मे है।

जर्मन मिशन के बाद काथालिक मिशन के जेसुइट फादर आगस्ट स्टाँकमैन जो बेल्जियम के येसु समाजी थे मिदनापुर से बैलगाड़ी द्वारा 10 जुलाई 1869 में चाईबासा पहुँचे। इन्होंने चाईबासा, बन्दगाँव, सर्वदा, जमगाँई में खेमा गाड़ा। डोरंडा में कैम्प किये हुए फौजियों के लिए एक अलग गिरजा घर बना कर पल्ली बनाया।

1877 में जॉन वैप्टिस्ट जर्मन येसु समाजी भारत आये और 1892 में बन्दगाँव के नव नियुक्त पुरोहित फादर हुए। इसके बाद ये सर्वदा गये। डोरन्डा पल्ली 1877 में बना उसके पुरोहित फादर डेकोक थे।

फादर लीवन्स जो नौजवान हृष्ठ-पुष्ट चतुर चलाक और सोचबुझ वाले व्यक्ति थे। इनको छोटानागपुर के जमगांई पल्ली भेजा गया। सोलह वर्ष के कार्यकाल में करीब 2500 काथलिक ईसाई बन चुके थे। रेल से 200 मील की दूरी तय करके फादर लीवन्स गिरीडीह पहुँचे। उसके आगे रेल लाइनें नहीं थीं। मोटर गाड़ी की सवारी भी नहीं रही। उस समय पुस-पुस ही एक मात्र साधन था जिसको आगे से चार आदमी खींचते थे और चार व्यक्ति पीछे से ढकेलते थे। रास्ते भी सही नहीं थे। रास्ते उबड़-खबड़ और नदी-नालों तथा जंगल-पहाड़ों से भरे थे। रास्ता अत्यन्त भयावाह था, जहाँ बाघ-भालू की आवाज आती थी। ऐसे दुर्गम रास्ते से होकर भाया बरही 62 किलोमिटर की दूरी तय करके फादर लीवन्स 16 मार्च 1885 के एक बजे रात में हजारीबाग पहुँचे। रात के समय जंगली जानवरों से बचने के लिए पुस-पुसवाले जोर-जोर से हल्ला करते थे। पुस-पुस गाड़ी चलाने वालों के लिए ठहराव की जगह निश्चित थी जहाँ ये अदल-बदल होते थे। फादर लीवन्स पुस-पुस में कभी जागते और सोते थे। रात के समय जंगली जानवरों के शोर-गुल से भयभीत भी होते थे, पर उत्साहित नौजवान को इसका कोई गम नहीं होता था। जो भी दिक्कत हुई पर ये अपने निश्चित जगह पर पहुँच गये। हजारीबाग में 16 मार्च 1885 से दो दिन लोरेटो के सिस्टरों के यहाँ ठहर कर उनके चलाये जाने वाले कार्यों को देखा और वहाँ आराम किया। तीसरे दिन उसी पुस-पुस की सवारी से टेढ़ी-मेढ़ही रामगढ़ घाटी को पार किया छकड़ा गाड़ी चलाने वाले सामने रात में बत्ती जलाये रखते थे ताकि जंगली जानवर रास्ते से हट जाये। फादर लीवन्स 19 मार्च 1885 के बड़े तड़के सुबह डोरन्डा पहुँचने वाला था लेकिन वहाँ पहुँचने तक में अंधियाली ही थी। डोरन्डा पारिस पहुँच कर उन्होंने फादर के दरवाजे को खटखटाया, तो एक बूढ़े फादर करीब 70 वर्ष की आयु वाले मोमबत्ती का उँजियाला दिखाकर फादर लीवन्स का हाथ मिलाकर स्वागत किया और घर के अन्दर लेकर बैठाया। उन्हें स्वरूचि खाना खिलाया। उस बूढ़े फादर का नाम सपार था। रात में वहीं आराम किया। फादर सपार ने उनके जमगांई जाने के लिए एक घोड़े को तैनात रखा था। जंगलों-पहाड़ों को पारा करते हुए डोरन्डा से नौ मील में स्थित जमगांई

पहुँचा। जमगांई में फादर डेकांक पदस्थापित था। फादर लीवन्स जमगांई के क्षेत्रों का निरीक्षण घूम-घूम कर किया और वहाँ के आदमियों की मुंडारी भाषा और रहन-सहन को ध्यान लगा कर देखा। मुंडा लोग न हिन्दी न बंगला ही समझ पाते थे। वे केवल मुंडारी भाषा ही बोलते और समझते थे। फादर लीवन्स को मुंडारी भाषा की जानकारी कोलकत्ता (कोलकाता) में ही हुई थी। वे टूटी-फूटी भाषा में मुंडारी बोलते और समझ लेते थे। 1885 के अन्त में जमगांई को दो भागों में बाँट दिया गया। दक्षिणी-पश्चिमी भाग को फादर सपार के अधीन दिया गया। जमगांई के बचे भाग की देख-रेख फादर कोन्सटंट रात-दिन घूम-घूमकर चारों दिशाओं में खीस्त की ज्योति जगाता था। सन् 1885 के अगस्त महीने तक में अपने इलाके का स्वतंत्र भार सम्भाल लिया। उसने कान्ति गाँव को भी जाकर देख लिया जहाँ टूटा-फूटा गिरजा बना था। नदी-नालों तथा खेतों में वह घोड़े को लेकर पैदल ही चलता था। वह झम-झम वर्षा पानी और बिजली की चमक और बादल की कड़क के समय पेड़ के ओसारे में खड़ा रहता था। उनको अधिक से अधिक ईसाई बनाने की धुन थी चाहे जैसा भी हो। वे अपने शरीर की परवाह नहीं करते थे।

तोरपा में फादर लीवन्स की दोस्ती वहाँ के दरोगा से हुई जिससे फादर को बड़ी मदद मिली। उन्होंने अपना मुख्यालय जमगांई को छोड़कर तोरपा में रखा। वह चालाक-चतुर था। वह प्रशासन की आड़ में रहकर धर्म प्रचार करना चाहता था। दरोगा अपने ही कैम्पस में डेरा बनवा दिया एक भाग में छोटा-सा चर्च भी बनवाया। तोरपा के दरोगा ने उनके भ्रमण के लिए एक घोड़ा भी दे दिया। इन्होंने ही ईसाई बनाने का मूल मंत्र दिया। उन्होंने फादर लीवन्स से कहा कि आप के घूमने और धर्म प्रचार करने से लोग ईसाई नहीं बनेंगे। आप को उनके दुःख-तकलीफों में साथ देना होगा, उनकी मदद करनी होगी। उन पर लगे मुकद्दमों में पैसा खर्च करके पैरवी करनी है। जमीनदारों और ठीकेदारों ने उनके जमीन-जायदाद को लूट लिया है, इसे वापस कराना होगा। आदिवासी लोग सरकारी पदाधिकारियों की मनमानी कार्य से भी त्रस्त हैं। सूद खोरों के सूद से भी दबे हुए हैं। सूद चूका नहीं सकने से उनकी खेती और खेत को हड़प लेते हैं। आप के इस दिशा निर्देश से काम करने पर वे स्वयं ईसाई बन जायेंगे। आप को उन्हें ढूँढना नहीं पड़ेगा। उनकी समस्या हल हो जायेगी तो वे ईसाई बनकर धर्म का प्रचार करेंगे। इस प्रकार ईसाइयों की संख्या बढ़ेगी।

फादर लीवन्स, दारोगा के दिये मूल मन्त्र पर ही चलना शुरू किया। सर्व

प्रथम उन्होंने सरना समाज से निकाले लोगों को ईसाई बनाया, साथ ही साथ जर्मन मिशन के लोगों को काथलिक धर्म में लाया। ये दोनों तरह के लोग इनके प्रचारक बने और सरना धर्म की कमजोरियों से फादर लीवन्स को अवगत कराया। ये फादर लीवन्स के चमचे और सलाहकार बन गये। वे घूम-घूम कर आदिवासियों की समस्याओं और लाचारी का पता लगाकर लोगों को फादर लीवन्स के पास लाते थे। फादर लीवन्स उनकी मदद कर ईसाई बनाने लगा। ये लोगों के बीच फादर लीवन्स का गुण-गान करने लगे। वे कहने लगे कि फादर लीवन्स ही आदिवासियों का उद्धार कर सकता है।

समस्याओं में कोर्ट केश की पैरवी को मुख्य मुद्दा माना। इसी के द्वारा जमीनदारों, ठीकेदारों और सूदखोरों द्वारा हड़प्पी जमीन की वापसी हो सकती है। उन्होंने कानूनी धाराओं का अध्ययन किया। वह आदिवासियों के केशों में खड़ा होकर जिरह और बहस करने लगा। केश में मिशन की ओर से पैसे की भी मदद करता था। केश का फैसला आदिवासियों के पक्ष में होने लगी। परिवार के परिवार और गाँव के गाँव लोग ईसाई बनने लगे। इन्होंने जमीनदारों के बेठ-बेगारी पर भी अड़चन डाला। इससे ईसाइयों का खेमा खड़ा होकर जमीनदारों और ठीकेदारों के विरूद्ध हो गया। जमीनदारों की सुविधा छीनी गई। ये बौखला उठे। सूझ-बुझ रखने वाला फादर लीवन्स ऐसे समय में आदिवासियों के बीच आया जिस समय जमीनदार और ठीकेदार हरेक तरह से इन आदिवासियों को परेशान कर रहे थे। यही काथलिक धर्म में अधिक से अधिक आने का मुख्य कारण था।

तोरपा में सफलता
(1885 से 1888 तक)

फादर लीवन्स का डेरा तोरपा के दरोगा के कैम्पस में था। लीवन्स दरोगा की सलाह के मुताबिक कोर्ट केश में पैरवी करने को मुख्य मुद्दा बनाया और क्षेत्र की जानकारी के लिए समाज से निकाले गये सरना समाज के लागों तथा जर्मन मिशन के लोगों को काथलिक धर्म में लाना शुरू किया। कुछ ही समय में काथलिक ईसाइयों की संख्या 50 से 300 तक की हो गई। 23 दिसम्बर 1885 को बेल्जियम के प्रोभिन्सियल कोलकत्ता पहुँचे और कोलकत्ता के सुपीरियर फादर ग्रोजाँ को लेकर तोरपा आये। फादर लीवन्स ने तोरपा के बने काथलिक ईसाइयों की जानकारी दी, साथ ही साथ अपने लिए आवास और चर्च बनाने की जिज्ञासा की। उन्होंने आवास और चर्च बनाने वाले जमीन को भी दिखाया। फादर लीवन्स के उत्साह पर प्रभावित होकर प्रोभिन्सियल फादर ने 500 (पाँच सौ) रूपये मदद स्वरूप दिये। उन्होंने ख्रीस्तमस के समय उन्हें राँची बुलाकर उनके आवास और चर्च के लिए पैसे का जोगाड़ कर उन्हें उत्साहित किया।

फादर लीवन्स इन पैसों से अपना आवास, चर्च के लिए एक बड़ा कमरा और स्कूल के लिए दो छोटे-छोटे कमरे बनवाये। अब वह अपने आवास, गिरजा और स्कूल के लिए इत्मीनान हो गया। उनकी जो चिन्ता थी वह मिट गई। अब वह लोगों की सेवा और इसी के मारफत ईसाई बनाना शुरू किया। वह लोगों के जमीन सम्बन्धी शिकायतों पर अध्ययन करता था। केश से सम्बन्धित कानून का मनन करता था। और जज से अनुमति लेकर कोर्ट में स्वयं बहस और जिरह करने लगा। केशों में आदिवासियों की डिग्री होने लगी। आदिवासी फादर लीवन्स के इस प्रकार की मदद को देखकर केशों से पीड़ित लोग दल के दल फादर लीवन्स के डेरे में आने लगे। वह उनके केशों का अध्ययन करके कोर्ट में केश कराने लगा। वह कोर्ट में बहस और जिरह करके केश को जीतवा लेता था। इसी पर वह उनके परिवार के लोगों को ईसाई बना लेता था। इस प्रकार फादर लीवन्स को ईसाई बनाने का सुनहाला अवसर मिल जाता था। लोग केश मुकद्दमों के सम्बन्ध में दिन-रात झुंड के झुंड सलाह लेने के लिए फादर लीवन्स के डेरे में आने लगे। इस प्रकार फादर लीवन्स ने आदिवासियों का दिल मोह लिया। काथलिक ईसाइयों की संख्या बढ़ती

गई। हजारों-हजार की संख्या में आदिवासी ईसाई बनने लगे। इस प्रकार धर्म परिवर्तन तोरपा क्षेत्र में भारी संख्या में हुआ।

आदिवासियों के ईसाई बनने से जमीनदारों और ठीकेदारों को भारी क्षोभ हुआ। आदिवासी जो ईसाई बन गये उनका एक गुट बना जो फादर लीवन्स के संचालन में था। वे जमीनदारों का काम करना और बेठ-बेगारी करना भी छोड़ दिये और जमीनदारों के बिरूद्ध खड़े हो गये। इस प्रकार इनकी सुविधा छीनी गई। ये फादर लीवन्स के बिरूद्ध बौखला उठे और कहा कि फादर लीवन्स क्षेत्रों में विद्रोह करवा रहे हैं। वह जर्मन मिशन के लोगों को काथलिकों की जनसंख्या बढ़ने के लिए अपने समूह में लाने लगा। ये भी तो येसु ख्रीस्त के अनुनायी थे। ऐसा करने से रोकने के लिए जर्मन मिशन के फादर नोट्रोट फादर लीवन्स से उलझ गये। आपस में तू तू मैं होने लगी लेकिन फादर लीवन्स ने ऐसा करना नहीं छोड़ा और जर्मन मिशन के ईसाइयों को वह काथलिक दल में लाता ही गया। काथलिकों की संख्या और क्षेत्र भी बढ़ गया। इनकी देख-रेख में इनको दिक्कत होने लगी इसलिए इन्होंने एक घोड़ा खरीदा ओर इसका नाम पुलिस रखा। यह दिखाने के लिए कि यह घोड़ा पुलिस का है। नाम सुनकर इनके दुंश्मन डरेंगे। ईसाई बनाने के लिए इन्होंने 15 प्राइमरी स्कूल खोला। पढ़ाई करना तो केवल अक्षर का ज्ञान था। भीतर से तो गुढ़ मतलब ईसाई बनाना था। वह इसी पुलिस घोड़े पर चढ़ कर क्षेत्र का भ्रमण करता था। क्षेत्र भ्रमण के बाद बेल्जियम और अपने सुपीरियर के पास पत्र लिखता है कि इस भ्रमण के समय मैंने 1000 (एक हजार) लोगों को काथलिक बनाया। वह प्रतिदिन का रोजमर्रा लिखता था और अपने उच्च पदाधिकारियों को अवगत कराता था। एक साल के अन्दर में अर्थात् 1886 में 86 गाँव के 2500 लोग काथलिक धर्म में आये हैं।

फादर लीवन्स ने अपने सुपीरियर फादर ग्रोजाँ के पास पत्र लिखा कि मुझ से अकेला मिशन का प्रचार एवं देख-रेख का काम हो नहीं पा रहा है शीघ्र एक सहायक फादर भेज दें। फादर ग्रोजाँ ने फादर लीवन्स की मदद के लिए फादर गेंगलर को तोरपा भेज दिया। इसके बाद फादर डेस्मेट भी तोरपा आकर काम करने लगे। फादर डेस्मेट और फादर लीवन्स बेल्जियम में सहपाठी थे। वे साथ-साथ पढ़ते थे। फादर डेस्मेट दिसम्बर माह में तोरपा आये और काम के बोझ से अप्रील महीने में बीमार पड़ गये। इन्हें राँची बुलाकर स्वास्थ्य लाभ के लिए हिल स्टेशन भेज दिया गया। अब फादर लीवन्स पर काम का बोझ पड़ गया। लीवन्स ने फिर पत्र लिखा,

इस पर दो नौजवान येसु समाजी फादर कॉजेट और फादर सीट्स को तोरपा भेजा गया। ये तोरपा क्षेत्र के गाँव-गाँव में जा-जाकर प्रेरिताई करने लगे। ये चार गाँवों में 500 लोगों को बपतिस्मा दिये। प्रचारक 400 गाँवों में प्रचार का काम कर रहे हैं। यहाँ 10,000 ईसाई काथलिक हैं और 30 स्कूल भी चल रहे हैं। समूचा छोटानागपुर को मैं काथलिक बनाना चाहता हूँ। मुझे मेहनत करना है। फादर कॉजेट और फादर सीट्स वर्षा-पानी में घूम-घूम कर लोगों को बपतिस्मा देने लगे। बरसात का समय था तोरपा लौटते समय जोरों की बारिश होने लगी। फादर कॉजेट घोड़े के साथ नदी के उस पार ही रह गये। फादर सीट्स बारिश में भींजते हुए किसी प्रकार तोरपा पहुँच गये। फादर कॉजेट घोड़े पर चढ़कर नदी पार कर रहे थे उसी समय घोड़े के पैर फिसल गये जिसके कारण वे नदी में गिर पड़े। चोट तो नहीं लगी। वह किसी तरह घोड़े पर चढ़ कर तोरपा पहुँच गया। बारिश से भींगने और नदी के पानी में गिरने से फादर कॉजेट को तेज बुखार चढ़ गया। फादर लीवन्स ने इन्हें दवा-दारू के लिए राँची पहुँचा दिया। राँची में सेवा-श्रुषा किया गया फिर भी वह बच नहीं सका। 25 सितम्बर को दम तोड़ दिया इन्हें डोरंडा के कब्रस्थान में दफना दिया गया। फादर सीट्स को भी मलेरिया का तेज बुखार था इसलिए वह तोरपा लौट नहीं पाया। फादर डेस्मेट अकेला ही तोरपा लौटा और वहाँ के ख्रीस्तीय काम को सम्भाले रखा। फादर लीवन्स ने क्षेत्र के कामों को संभालने के लिए फादरों की माँग की। फादर गुथौल्स ने प्रोभिन्सियल के पास पत्र लिखकर जल्द फादरों को भेजने का आग्रह किया। पत्र पाते ही उन्होंने तीन नये फादरों और एक ले. ब्रदर को लीवन्स की सहायता के लिए तोरपा भेज दिया। इस प्रकार लीवन्स के निर्देशन में तीन फादर और एक ले. ब्रदर काम करने लगे। तीन आये नये फादरों में लुइस हँगेन बेक को दिघिया, फादर होयगे को डोड़मा और फादर डेस्मेट को तेतरा का प्रभार दिया गया और ले. ब्रदर कोरेमन्स को जहाँ गिरजा और स्कूल घर बनाना था, वहाँ इनको भेजा जाता था। इस प्रकार फादर लीवन्स की ही चलती थी। वही समूचे क्षेत्र के लिए योजना बनाता था। फादर और पैसे कोलकत्ते से भेजे जाते थे। पैसे रोम से बेल्जियम और बेल्जियम से कोलकत्ता आते थे। जरूरत के मुताबिक और भी पैसे छोटानागपुर में स्कीम के मुताबिक आता था।

1886 में छोटानागपुर में सरकार का प्रशासन हेडक्वाटर लोहरदगा से राँची आ गया था। फादर मोतेत ने राँची में 50 एकड़ कैशर हिन्द की जमीन को

सरकार से लीज में लिया। इसलिए फादर लीवन्स तोरपा में न रहकर मनरेसा हाऊस ही में रहते थे। यहीं से ये समूचे छोटानागपुर का कार्य देखते थे। जैसे वे तोरपा में रहकर मुकद्दमों के केसों की पैरवी करते थे वैसे ही मनरेसा हाऊस में रहकर जरूरतमन्द लोगों से मिलते और राँची के कोर्ट में उनके केसों को देखते थे। केसों के खर्चों को मिशन वहन करती थी। बाकी समय में ये मनरेसा हाऊस में रहकर ही समूचा कार्य करते थे। बीच-बीच में क्षेत्रों का दौरा करते थे। बन्दगाँव में फादर फीरेन्स पदस्थापित थे इन्हें फादर स्टाकमैन जो अति बूढ़े थे, की मदद के लिए इन्हें चाईबासा भेज दिया गया। चतुर्भुज स्टेशनों को मिलाकर एक नया स्टेशन बनाया गया था उसका संचालन फादर मुलेन्डर करने लगे। सरवदा के फादर डेस्मेट को फादर लीवन्स की मदद के लिए तोरपा भेज दिये गये। फादर लीवन्स अपना अधिकांश समय बंगले के बरामदे में ही बैठकर बाहर से आये लोगों की बातों को सुनकर नोट करने में ही बिताते थे। सन् 1887 में तोरपा क्षेत्र में पचास धर्म प्रचारक और इतने ही स्कूल मास्टर थे। इनके खर्च का वाहन मिशन करता था। सन् 1887 के अन्त तक में सात और मिशन के सर्कल पूरे हो गये। ये थे वामिनी, डेकेला, डोड़मा, दुमंदिरी, लापा, मंरगहदा और सोदे।

11 जून को सुपीरियर फादर ग्रोजाँ दौरे पर राँची आये। उन्हें लेकर फादर लीवन्स दिघिया, तोरपा, बसिया (तेतरा) डोड़मा, बन्दगाँव और चाईबासा गये। फादर सुपीरियर को वहाँ की प्रगति से अवगत कराया। इस लम्बे-चौड़े क्षेत्र तथा ईसाइयों की बढ़ती संख्या के लिए फादर लीवन्स ने एक अलग डिस्ट्रिक सुपीरियर की माँग की। कोलकत्ता लौटने के पहले फादर ग्रोजाँ ने मनरेसा हाउस के सुपीरियर फादर मोतेत को डिस्ट्रिक सुपीरियर और फादर लीवन्स को डिस्ट्रिक डाइरेक्टर नियुक्त किया। आर्च बिशप गुथौल्स ने ग्रोजाँ की नियुक्ति आदेश की सम्पुष्टि की और इनके शासन और विशेष अधिकारों की सीमा निर्धारित कर दी। फादर लीवन्स का मुख्यालय राँची रहेगा। ये यहीं से समूचे छोटानागपुर के मिशन के कार्यों की देख-रेख करेंगे। आदेश तुरंत लागू हुआ।

1 अगस्त 1888 को फादर लीवन्स छोटानागपुर के डायरेक्टर बने। उस समय काथलिक ईसाइयों की संख्या 11,291 थी। सब मिलाकर 7139 गाँवों में 50,351 व्यक्ति थे। इनके बीच 189 प्रचारक काम कर रहे थे। उस समय 95 गिरजाघर और 77 स्कूल थे। इतने बड़े काथलिक क्षेत्र और काथलिकों के बीच मात्र

पाँच पुरोहित थे। तोरपा में 45,000 काथलिक ईसाई थे। चतुर्भज स्टेशनों, बन्दगाँव, सरवदा, चाईबासा तथा दिघिया में 1200 काथलिकों की संख्या थी। इनमें तोरपा मिशन सबसे बड़ा था, इसलिए आर्च बिशप ने तारेपा को चार भागों में बाँट दिया। ये हैं- तोरपा, कर्रा, डोड़मा और तेतरा। उस समय कर्रा में 1910 बपतिस्मा प्राप्त लोग और 50000 नवविद्यार्थी थे। डोड़मा में बपतिस्तमा प्राप्त लोग 2326 और 2263 विद्यार्थी तथा तेतरा में 295 बपतिस्मा प्राप्त लोग तथा 1000 विद्यार्थी थे। इन सबकी देख-रेख फादर लीवन्स करते थे। फादर मोतेत डिस्ट्रिक्ट सुपीरियर की हैसियरत से राँची के मनरेसा हाऊस में दो बड़े-बड़े हाल, डेरा, स्कूल और गिरजा घर बनवाये। फादर लीवन्स इसी मनरेसा हाऊस में रहकर दूर-दूर से आये लोगों से मिलते और उनके मुकद्दमों की पैरबी करते और लोगों को ईसाई बनाते थे। सारे उराँव क्षेत्र में फादर लीवन्स का नाम फैलने लगा। लोग फादर लीवन्स-लीवन्स कहने लगे।

फादर लीवन्स जब डिस्ट्रिक्ट डायरेक्टर हुए तो उन्होंने सर्वप्रथम प्रचारकों को क्षेत्र में काम करने के लिए प्रशिक्षण देना शुरू किया। उन्होंने दिघिया, तोरपा, डोड़मा, सरवदा और तेतरा के प्रचारकों को प्रशिक्षण के लिए राँची के मनरेसा हाऊस में बुलाया और प्रशिक्षण के द्वारा क्षेत्र में काम करने का तरीका बतलाया। फादर लीवन्स स्वयं प्रशिक्षण देते थे। यहाँ आये बपस्तिमा प्राप्त लोगों की संख्या जुलाई 1888 में 430 हो गई। फिर फादर मोतेत ने राँची में 250 लोगों को बपतिस्मा दिया। सन् 1888 में फादर लीवन्स घोड़े पर सवार होकर तेतरा गया। वहाँ फादर डेस्मेट 10,000 लोगों को प्रचारकों द्वारा धर्म शिक्षा दिला रहा था। फादर लीवन्स कोयल नदी से उस पार दो सप्ताह तक रह कर 1300 लोगों को बपस्तिमा दिया। वहाँ के जमीनदार ने खेतों में काम नहीं करने वाले लागों में एक को मार डाला। फादर लीवन्स ने जमीनदार पर मुकद्दमा चलवाया। जमीनदार को राँची कोर्ट में पेश किया गया। उन्हें सजा के रूप में 6000 रू. जुर्माना देना पड़ा तथा केस देखने वाले पालकोट के दारोगा को नौकरी से बर्खास्त करवाया गया।

दिघिया पारिश
(1886 से 1893 तक और उसके बाद)

ग्राम दिघिया में 1886 ही में मिशन स्टेशन बना था। दिघिया मिशन उराँव क्षेत्र का मुख्यालय था। इस पारिश के अन्दर में मांडर, लोहरदगा, चैनपुर, महुवाडाँड़, बीरू, बरवे का सारा क्षेत्र तथा सुरगुजा, जशपुर, गांगपुर भी आता था। फादर डीकोक दिघिया मिशन के प्रथम पारिश प्रीस्ट थे उसके बाद लुईस हगेनबेक यहाँ के फादर हुए। फादर लीवन्स और ये दिन-रात दिघिया बस्ती में ईसाई बनाने के लिए घर-घर घूमते थे लेकिन फादर लीवन्स के कार्यकाल में एक भी इस गाँव के उराँव ईसाई नहीं बने। काथलिक मिशन के 45 वर्ष पूर्व से ही जर्मन मिशन के पादरी दिघिया बस्ती में घर-घर जाकर धर्म प्रचार करते थे, लेकिन एक भी व्यक्ति ईसाई नहीं बना। यह मौजा रातू महाराजा के अधीन था। यहाँ किसी भी प्रकार का जमीनदारी रोब-दाब नहीं रहा। गाँव महतों और पहानों के शासन में संगाठित था। ये अपने धर्मों में डटे हुए थे। गाँव शान्त और सम्पन्न था।

फादर लीवन्स जून 1888 में तोरपा को छोड़कर राँची आये। राँची मनरेसा हाऊस को मुख्यालय बनाया। यहीं से दिघिया मिशन क्षेत्र में काथलिक धर्म प्रचार करने का चिराग जलाकर बिगुल बजाया। फादर लुईस हगेनबेक ने अपने क्षेत्र के सभी प्रचारको को प्रशिक्षण के लिए फादर लीवन्स के मनरेसा हाऊस में भेजा। फादर लीवन्स ने तीन दिनों तक प्रशिक्षण दिया और पुरन प्रसाद की अगुवाई में अपने चुने-चुने मंजे प्रचारकों को दिघिया मिशन के उराँव क्षेत्रों में भेजा। पुरन प्रसाद उराँव नहीं थे परन्तु उराँव क्षेत्र में इनका काफी प्रभाव था। वह हाल के चान्हों प्रखण्ड के रघुनाथपुर का रहनेवाला था। पुरान प्रसाद उराँव नहीं थे परन्तु राँची कोर्ट में मुंशी का काम करता थे। फादर लीवन्स का सम्पर्क पुरान प्रसाद से राँची कोर्ट में केसों की पैरवी के दौरान हुआ। फादर लीवन्स ने इनको कोर्ट का कार्य छोड़वा कर इन्हें काथलिक ईसाई बना लिया और 50 रू. प्रतिमाह देकर प्रचारक का काम सौंपा। शुरू में इसने जर्मन मिशन के ईसाइयों तथा सरना समाज से निष्कासित लोगों को फादर लीवन्स के पास लाया और रोमन काथलिक में बपतिस्मा दिलाया इन्होंने ईसाई बनाने में फादर लीवन्स को तोरपा के दरोगा जैसा मदद किया। कर्मठ प्रचारकों में पुरन प्रसाद, मार्टिन बड़ा, बुद्धू लोहार, मोरिश-गंगा और तोरपा क्षेत्र में

कार्य किये चुने-चुने कर्मठ प्रचारकों के साथ बहुत से अन्य प्रचारकों को सारे उराँव क्षेत्रों में प्रचार करने के लिए भेजा। वे प्रचार करते और फादर लीवन्स के तारणहार होने का डंका पीटते थे। पुरान प्रसाद ने फादर लीवन्स से कहा कि उनके गाँव और आस-पास के प्रोटेस्टेन्ट काथलिक बनना चाहते हैं। उन्होंने दिघिया के फादर हगेनबेक को अपने गाँव रघुनाथपुर ले गया और अपने गाँव के लोगों के बीच धर्म प्रचार के सम्बन्ध में बात-चीत कराया।

3 जून को फादर लीवन्स की अध्यक्षता में बैठक हुई करीब चालीस-पचास गाँवों के महतो और मुखिया भाग लिए। पुरान प्रसाद और फादर हगेनबेक जनकपुर पुलडीह, पकना और लुंडरी गये। वहाँ धर्म प्रचार करने के बाद फादर हगेनबेक दिघिया लौट गये। दिघिया मिशन क्षेत्र में प्रचारकों की संख्या करीब चालीस-पचास कर दी गई। फादर लीवन्स भी दो सप्ताह तक इस काम में लग गये। फादर ग्रोजाँ को छोटानागपुर की खबर मिलती रहती थी। फादर लीवन्स कोयल नदी पार जाकर 1300 लोगों को ईसाई बनाया तथा एक ही दिन में 650 स्त्री, बच्चे और पुरुषों को बपतिस्मा दिया। प्रचारक धर्म शिक्षा देकर तैयार रखते थे। फादर लीवन्स उन तैयार रहे लोगों को बपतिस्मा देकर ईसाई बनाता था। ये काथलिक ईसाई जमीनदारों के विरोधी बन जाते और उनका कहना नहीं मानते थें वे जमीनदारों को मालगुजारी देना भी बन्द कर दिये। रैयतों को जमीनदरों से डर था। फादर लीवन्स ने जन आन्दोलन चलाया। ईसाइयों की संख्या बढ़ती गई।

सन्त पापा लेओ तेरहवें ने खुश में येसुइट जेनेरल के मारफ 10,000 बेल्जियम फ्रैक दिये और येसु संघी कार्डिनल फ्रासेंलिन ने 5000 फ्रैंक भेंट की जिससे फादर लीवन्स बम-बम हो गये। धर्म प्रचार के लिए और चार घोड़े खरीदे गये। पुरोहितों की कमी थी लेकिन नवम्बर 1888 में दो पुरोहित भेजे गये। अनुदानों से प्रचारकों के वेतन दिये गये तथा गिरजा घर बने। फिर दो खेपों में बारह पुरोहित और दो ब्रदर आये। मिशन डाइरेक्टर की मदद के लिए फादर कार्डों, डेहों और लौंरेट आये। इस प्रकार लोहरदगा मिशन में सात फादर काम कर रहे थे।

कुछ दिनों के बाद फादर लीवन्स घोड़े में चढ़ कर पुरूलिया गये। वहाँ उन्होंने संथालियों के लिए काथलिक समुदाय स्थापित किया। 25 मई 1889 में फादर लीवन्स ने बरवें से आये 42 लोगों को बपतिस्मा दिया। इन्होंने दिघिया बनपुर, दोब्बा, लोहरदगा, कुसुम्बा, सिंगराऊली और काठचाचो के आये लोगों को बपतिस्मा

दिया। शीघ्र ही बरवे, पनारी, नवागढ़ और बीरू से दल के दल लोग अपने-अपने केसों को सुलझाने और ईसाई बनने के लए आने लगे। प्रचारक लोगों को लीवन्स के पास बपतिस्मा के लिए भेजते थे मार्च 1889 में फादर ग्रोजाँ ने छोटनागपुर का दौरा किया। 10 मार्च 1889 में दोनों दिघिया गये। वहाँ दिघिया के पारिश फादर हगेनबेक से भेंट कर ईसाइयों की प्रगति पर बिचार-विमर्श करने के बाद लोहरदगा के लिए प्रस्थान किये। वहाँ से टोटो, पालकोट होते हुए तेतरा-नवाटोली की हाल-चाल ली। नवाटोली से आगे जाकर बसिया और सालेगुट को देखते हुए तोरपा पहुँचे। 17 मार्च 1889 को तोरपा के बने, नये गिरजा घर को आशीष दी। तोरपा के नये गिरजा घर को बनाने में 3,000 रूपये लगे। फादर ग्रोजाँ राँची होते हुए कलकत्ता लौट गये। फादर लीवन्स के हाथ में छोटानागपुर की बागडोर थी। फादर लीवन्स ने गंगापुर, जशपुर और सुरगुजा में भी प्रचारकों को भेजा था। ये फादर लीवन्स की महिमा गाते थे, इसलिए वहाँ से भी लोग अपना-अपना केस लेकर फादर लीवन्स के पास दल के दल आकर ईसाई बनने लगे। फादर लीवन्स को केसों की पैरवी कर ईसाई बनाना मुख्य मुद्दा था।

जुलाई से नवम्बर तक फादर लीवन्स राँची के आस-पास और लोहरदगा तक के क्षेत्रों का दौरा करते रहे। इसी अवसर पर इन्होंने 322 बच्चों और लोगों को बपतिस्मा दिया। एक दिन वे दौरे में मुड़मा होकर जा रहे थे। उस समय एक औरत चिल्ला-चिल्ला कर कह रही थी - फादर मेरे पति को बचाइये नहीं तो गाँव के लोग उन्हें मार डालेंगे। यह केस जाहेर-बरगड़ी का था। फादर उन्हें लेकर वहाँ पहुँचे तब लोगों ने कहा कि चाप्पा उराँव मिशन बनकर गाँव के देवी-देवताओं को अपमानित किया। इन्हें बकरा और मुर्गी बलिदान चढ़ाने के लिए कहा गया जिसको उन्होंने नहीं किया। इसलिए गाँव वालों ने दोनों को घेर लिया और मारने को दौड़ा दिया। मामले को गड़बड़ देखकर चप्पा उराँव को लेकर फादर लीवन्स घोड़े पर झटपट चढ़ कर भाग गया। यहीं पर सरना वालों ने लीवन्स का विरोध किया था।

मुड़मा आदिवासियों के नियम-कानून के बनाने और उराँव समाज के संगठनों को मजबूत करने की जगह है। यहाँ साल में एक बैठक आश्विन महीने की पुर्णिमा में हुआ करती है। इस बैठक में जाहेर-बरगड़ी मुख्य रोल अदा करता है इसलिए इस गाँव के संगठन को तोड़ने और सत्यानाश करने के लिए जर्मन, रोमन, अंग्रेजी तथा अलेलुया मिशन ने ताबड़-तोड़ पैसा खर्च किया। यहाँ चारों के चार

गिरजा घर हैं। गाँव करीब हजार उराँव परिवारों का है। गिरजा घर सरना धर्म के देवस्थलों पर भी बना दिया गया है। यह जुल्म समाज विरोधी था। ऐसा जुल्म होने पर भी अभी पचास प्रतिशत सरना धर्म को मानने वाले उस गाँव में बच गये हैं। यह सरना धर्म को कुचल कर ईसाई धर्म को फैलाने की नीति रही।

राँची के निकटवर्ती गाँवों के दौरे के बाद फादर लीवन्स और हगेनबेक ने पनारी और नवागढ़ की यात्रा की। इस दौरान दोनों मिलकर 2,888 लोगों को ईसाई बनाया। इन्होंने तिलसिरी पोड़हा, सुलुआ, सोगड़ा, कसादमोस, करौंदाजोर अंम्बेरा, पंडरिया, लखिया, बदौउली, सिसई, कटरा सरगाँव और डोम्बा का दौरा किया। दिघिया पनारी और नवागढ़ क्षेत्र का दौरा सितम्बर में समाप्त हुआ। फादर लीवन्स 1889 में राँची मनरेसा हाऊस लौट गये।

फादर लीवन्स बीरू के लिए निकलने वाले थे उसी समय बीरू के फादर बुखार से काँपते हुए राँची पहुँचे। उन्होंने उनके जल्दी चंगा होने की उम्मीद नहीं देखी। इसलिए उन्होंने अपने बीरू दौरे को स्थगित नहीं किया और उनके सहयोगी फादर डेहों को लेकर बीरू का सारा क्षेत्र छान लिया। जमीनदार के ताव को देखकर वहाँ किसी को ईसाई नहीं बनाया वहाँ के 800 परिवार तेतरा जाकर बपतिस्मा ले लिए। जमीनदार, प्रचारकों और काथलिकों को परेशान करते थे। जमीनदार प्रचारकों को मार भगाते थे। इस प्रकार वहाँ की अजीब स्थिति देखकर वे राँची वापस आ गये। उसके बाद तीन प्रचारकों को धर्म प्रचार करने के लिए बीरू भेज दिया। मोरिश-गंगा जो साहसी और हठा-कट्ठा प्रचारक था, उसने नये बने ईसाइयों का एक संगठन बनाया और क्षेत्र में धर्म प्रचार करने लगा। नये बने ईसाई लोगों को प्रचारक गंगा के कारण हिम्मत बढ़ा।

बरवे की पहली यात्रा
(16 अक्टुबर 1889 से नवम्बर 1889 तक)

फादर लीवन्स ने अपने प्रचारकों को पूर्व में ही धर्म प्रचार के लिए बरवे भेजा था। वे वहाँ जोर-शोर से काम कर रहे थे। बरवे के बहुत से उराँव जमीन के मुकद्दमों में आकर राँची में बपतिस्मा लिए हुए थे। लोहरदगा के कुछ क्षेत्रों को मिलाकर बरवे की आबादी करीब 35,000 थी।

16 अक्टूबर 1889 में अपने घोड़े जेनेरल में सवार होकर फादर लीवन्स जंगलों-पहाड़ों को पार करते हुए 30 घंटे में बरवे पहुँचे। मिशन का प्रवेश बरवे में पहले नहीं हुआ था। यही उनका यह पहला मौका था। बरवे के लोग एक वर्ष पहले अदालती मामलों में राँची आये थे और फादर लीवन्स की पैरवी से जमीन के केसों में जीत कर ईसाई काथलिक बन गये थे। इस प्रकार सैकड़ों बपतिस्मा लिए हुए उराँव काथलिकों से फादर लीवन्स की भेंट बरवे में हो गई। अब तो खुशी का ठिकाना नहीं! केस-मुकदमा जीते लोगों ने प्रोपोगन्डा किया कि फादर लीवन्स अदालती केसों में पैरवी करके केस को जीतवाते और केसों का सारा खर्च वहन करते हैं। ये सही में मदद करने वाले हैं। इसका प्रोपोगन्डा समूचे बरवे में फैल गया। इन्होंने प्रोटेस्टैन्ट से काथलिक बने प्रचारकों को बरवे भेजा। ये 180 मील दूर से दल के दल केस की पैरवी कराने के लिए राँची आने लगे। ये यहाँ आकर ईसाई बन जाते थे। फादर लीवन्स अपने नौकर बारथे और ब्रिटिश सेना के सेवा निवृत सार्जेंट यंग को बरवे साथ ले गये थे। 1889 अक्टूबर के अन्त तक में 3071 लोगों को ईसाई बना लिया। उन्होंने फादर मोतेत को चिट्ठी लिखा कि मैंने एक ही दिन में 1357 लोगों को बपतिस्मा दिया। 7 नवम्बर को फिर फादर मोतेत के पास पत्र लिखा - हम बेन्दोरा में हैं यहाँ हमने 9000 लोगों को बपतिस्मा दे दिया है। बरवे की यात्रा एक सप्ताह रही। यहाँ ईसाइयों की संख्या 13,000 हो गई है। करीब 10,000 लोग बपतिस्मा लेने के लिए तैयार हैं। फादर मोतेत ने फादर लीवन्स के पास पत्र लिखा कि आप शीघ्र राँची लौट जायँ। पत्र पाकर वह 17 नवनम्बर 1889 को बरवे से राँची वापस चला आया।

राँची आने पर पता चला कि जमीनदारों ने उन पर दोषारोपन किया कि फादर लीवन्स के बहकावे में आकर काथलिक मिशन के लोग उपद्रव कर रहे हैं।

फादर मोतेत ने फादर लीवन्स और सहयोगी फादरों को छोटानागपुर के कमिश्नर मिस्टर ग्रिमले के सामने सफाई देने को कहा। ये सफाई दिये पर जाँच-पड़ताल के बाद सरकार ने निर्णय लिया कि मिशनरीज भूमि के सम्बन्ध में जमीनदारों और किसानों के बीच नहीं पड़ें। मिशनारियों के बहकावे से किसान सरकार द्वारा बढ़ाये टैक्स को देना बन्द कर दिये। जमीनदार टैक्स-मालगुजारी रैयतों से वसूल करते और सरकारी खजाना में जमा करते थे। मालगुजारी नहीं देने से सरकार को घाटा होने लगा। साथ-साथ ईसाइयों ने ज़मीनदारों का काम करना छोड़ दिया। उनका हुक्म नहीं मानने लगे। दोनों के बीच अनबन हो गया। इससे सरकार को चिन्ता हो गई। मालगुजारी नहीं देने से जमीनदार और ठीकेदार जमीन पर कब्जा कर लेते थे। किसान अपने खेतों में खेती करते थे उसके पकने पर काटने जाने पर झगड़ा तथा मारमीट होती थी जिसके लिए जमीनदार थाना में केस कर देते थे। इस प्रकार जमीनदारों और काथलिक ईसाइयों के बीच उपद्रव हो जाता था। सरकार ने फादर लीवन्स को जमीन के मामलों में नहीं पड़ने के लिए सतर्क किया। जमीनदार नहीं चाहते थे कि लोग ईसाई बन कर उनके चंगुल से निकल जायँ। सितम्बर और नवम्बर में फादर लीवन्स ने बीरू और बरवे में कुछ ही दिनों में हजारों-हजार लोगों को काथलिक ईसाई बना कर एक जबरदस्त गुट बनाया जो जमीनदारों के हित के विरूद्ध था। इस सम्बन्ध में जाँच-पड़ताल के बाद मिशन के विरूद्ध फैसला सुनाया फिर भी फादर ने अपने ईसाई बनाने के कार्यों को नहीं छोड़ा। वे ईसाई बनाने में तुल गये थे।

जमीनदार लोग दल के दल जमा हो कर सरकार के पास शिकायत की कि फादर लीवन्स क्षेत्रों में काथलिक ईसाइयों द्वारा उपद्रव करा रहे हैं। संकट का संदेश पाकर छोटानागपुर के कमिश्नर मिस्टर ग्रिमले ने तुरन्त कार्रवाई शुरू कर दी। लोहरदगा के डिप्टी कमिशनर मिस्टर लिलिन्सस्टन की छुट्टी के समय पलामू के डिप्टी कमिश्नर मिस्टर रेन्नी प्रभारी हुए। इस आफत को देखकर फादर मोतेत ने फादर लीवन्स को राँची बुलाया लेकिन इस आफत पर ध्यान न देकर अपना कार्य जारी रखा। इससे फादर लीवन्स और मिशन के कार्यों का अस्तित्व संकट में पड़ गया। छोटानागपुर के कमिश्नर ने जाँच-पड़ताल के लिए दो सरकारी अफसरों को इलाकों में भेजा। इसकी जाँच छोटानागपुर के डिप्टी कमिश्नर मिस्टर रेन्नी और पुलिस अधीक्षक मिस्टर पैच ने किया। वे जाँच के लिए 14 नवम्बर को विद्रोह के केन्द्र बीरू

गये। वहाँ से कुछ दिनों में बसिया में पड़ाव रखा। उस समय बसिया के फादर कारडों थे जिन्होंने पुलिस अधीक्षक पैच से मुलाकात की और कहा कि कहीं कोई विद्रोह नहीं है। फिर फादर कारडों ने मिस्टर रेन्नी से भेंट की और क्षेत्र की स्थिति का जायजा लिया। मिस्टर रेन्नी ने फादर कारडों के दलील को नहीं माना। मिस्टर रेन्नी ने कहा कि येसुइटों को छोटानागपुर में रहकर ईसाई बनाने का कोई अधिकार नहीं है। आपको मालूम हो कि जर्मन सरकार काथलिक मिशनारियों से कैसे पेश आयी थी। फादर कारडों ने कहा जी हाँ, पर यह न्याय संगत नहीं था। वह क्रूर तानाशाह था।

इसके बाद मिस्टर रेन्नी और उनकी टुकड़ी बीरू चली गई। इस वृतान्त को फादर कारडो ने फादर लीवन्स को भेजा। जमीनदरों और रैयतों के बीच का झगड़ा मिशनरियों के करतूतों के कारण है। उन्होंने दोषी लोगों को अपने कैम्प में बुलवाया और मिस्टर रेन्नी ने उन्हें कड़ी से कड़ी सजा देने लगा। दोषी लोगों को कैद कर लिया। उस समय उनको बचाने वाले कोई फादर नहीं थे। फादर लीवन्स और कारडो ने इस क्षेत्र में 5,000 लोगों को काथलिक बनाया था। मिस्टर लिलिंगस्टन छुट्टी से लौट कर 2 दिसम्बर को कार्यभार ग्रहण करके मिस्टर रेन्नी को बरवे जाँच-पड़ताल के लिए भेजा। मिस्टर रेन्नी जाँच के बाद राँची लौट आये। मिस्टर लिलिगंस्टन दक्षिण में देहातों का दौरा करके वे भी राँची लौटे।

जाँच-पड़ताल के बाद दोनों ने शिविरनुमा अदालत में 66 लोगों को कैद की सजा दी जिसे फादर लीवन्स ने अपनी आँखों से देखा और एक चिट्ठी के द्वारा आर्च बिशप गुथौल्स को इसकी सूचना दी। आर्च बिशप ने फादर लीवन्स से केसों का नकल माँगा। ये सभी खेतों से सम्बन्धित थे। एक केस जादू-टोना का था। जाँच-पड़ताल से आर्च बिशप और फादर लीवन्स चिन्ता में पड़ गये। इन्होंने कोलकत्ते के आर्च बिशप से सरकार को पैरवी करने का विचार करके उन्होंने फैसले और इनसे सम्बन्धित कागजातों की सच्ची प्रति निकाल कर आर्च बिशप गुथैल्स के पास भेजा और नये काथलिकों के सुरक्षा के विषय में कहा। ऐसा नहीं करने से मिशन को भारी क्षति एवं बदनामी होगी। इस पर आर्च बिशप गुथौल्स सहमत हो गये। उन्होंने भारत के सर्वोच्च अधिकारी-वाइसराय के पास पैरवी की। जिन्होंने इस कार्य को सुलझाने के लिए लेफिटनेन्ट गवर्नर को सौंपा।

सरकार ने फादर लीवन्स को बरवे जाने से मना कर दिया क्योंकि इन्होंने

हजारों-हजार की संख्या में उराँवों को ईसाई काथलिक बना कर उनकों संगठित कर दिया था जिससे जमीनदारों और उराँवों के बीच असंतोष फैल गया था और विद्रोह होनी की शंका बन रही थी। सरकार के आदेश के कारण फादर कोन्सटंट लीवन्स एक साल के लिए नवम्बर 1889 से नम्बर 1890 बरवे जा नहीं सके। वे राँची के मनरेसा हाऊस में रहकर लोगों के जमीन सम्बन्धी केसों को देखते और लोगों को सलाह-मशविरा देते थे। कभी-कभी आस-पास के क्षेत्रों का दौरा करते थे।

आर्च बिशप गुथौल्स सत्यता को जानने के लिए 19 जनवरी 1890 को वे कोलकत्ता से छोटानागपुर आये। उन्होंने आपनी यात्रा सिंहभूम से आरम्भ करके चाईबासा, बन्दगाँव सरवदा तथा तोरपा मिशन स्टेशनों का निरीक्षण किया और 27 जनवरी 1890 को राँची पहुँचे। राँची में रहकर एक सप्ताह तक फादर लीवन्स से बिचार-विमर्श किया और इलाके का दौरा शुरू कर दिया। उन्हें जाँच-पड़ताल तथा स्थिति को अपने आँखों से देखना था। आर्च बिशप गुथौल्स फादर लीवन्स के साथ दिघिया गये। वहाँ फादर कनोय से भेंट हुई। ये दोनों लोहरदगा, गुमला, पनारी होते हुए तेतरा पहुँचे। फादर लीवन्स ने बीरू, नवागढ़, पनारी और बरवे के हजारों लोगों को तेतरा बुलाया। ये यहाँ 5,000 लोग जुटने वाले थे लेकिन करीब 1,000 लोग ही पहुँच सके। ये दोनों तेतरा से बिदा लेकर तोरपा, डोड़मा और कर्रा की ओर चले। आर्च बिशप ने सैकड़ों लोगों को दृढ़ीकरण संस्कार दिया। ये दोनों 15 फरवरी 1890 को राँची पहुँच गये। राँची में आर्च बिशप ने मैत्रीपूर्ण भाव से छोटानागपुर के कमिश्नर मिस्टर ग्रिमले के पत्र का जबाब दिया।

दौरे के बाद दोनों के राय-मसूरों से मिस्टर काउले छोटानागपुर के न्यायिक कमिश्नर के न्यायालय में अपील पेश किया गया। इसमें इस अपील को राँची में सुनवाई करने की अर्जी की। फादर लीवन्स ने सुझाव दिया कि दो अलग-अलग अपील किया जाय। एक कैदियों के लिए और दूसरा मिशनरियों के बचाव के लिए हो। जिरह-बहस के लिए नामी वकील मनमोहन घोष को रखा जाय। वकील मनमोहन घोष के देर से आने के कारण कुछ केसों की सुनवाई हुई पर वकील के आने तक मिस्टर काउले ने फैसले को स्थागित रखा। मनमोहन वकील ने तीन दिनों के जिरह-बहस के द्वारा आधे से अधिक कैदियों को मुक्त करा लिया और पच्चीस कैदियों की सजा कम करा दी। कानून-व्यवस्था और जमीन से सम्बन्धित सजा के केसों को रहने दिया। सजा से छूटे हुए सभी कैदी मनरेसा हाऊस आकर जश्न

मनाये। कैदियों के छूटने की खबर सभी मिशन स्टेशनों में तेजी से फैल गयी। जीत के कारण सभी मिशनों को अमन-चैन मिला। मनमोहन घोष ने दूसरी अपील कोलकत्ते में करने की सलाह दी इसको फादर लीवन्स और आर्च बिशप गुथौल्स ने मान लिया। ये अपने मिशन की सुरक्षा चाहते थे। बाद में मनमोहन घोष ने हाई कोर्ट में अपील करने से मना कर दिया और कहा कि वे राँची जाकर मामले का निष्पादन लेफिटनेन्ट गवर्नर मिस्टर स्टूआर्ट से कर लेंगे। उन्होंने कहा दोषी अफिसरों की निन्दा सरकार की निन्दा होती है। मिशन के विरूद्ध सरकार का रवैया आदिवासियों के लिए मुसीबत का इसारा होता है। केसों से किसी के देश द्रोह होने का कारण साबित नहीं होता है। ये कानून और जायदाद के मामूली जुर्म थे। कैम्प कोर्ट में अभियोगियों को गवाह और सफाई देने को मौका नहीं मिला। इसलिए ये दोषी नहीं हैं।

मिस्टर रेन्नी और लिलिगंस्टन ने काथलिक मिशनरियों पर कड़ा दोषारोपन किया है कि ये केवल बपतिस्मा देकर अपने समूह को बढ़ाते हैं और उनको धार्मिक और नैतिक उपदेश नहीं देते हैं। मिस्टर रेन्नी का दोषारोपन था कि काथलिक ईसाई बिना समझ-बूझ वाले बच्चों को बपतिस्मा देते हैं तथा बेठ-बेगारी और लगान कम कराने तथा बढ़े हुए लगान को नहीं देने का प्रलोभन मात्र ईसाई बनाकर अपने समूह को बढ़ाना रहता है। आर्च बिशप गुथौल्स 23 फरवरी 1890 को कोलकत्ता लौट गये। उपराज्यपाल ने आर्च बिशप को बतलाया कि वे स्वयं कैदियों के लिए बात करेंगे। उन्होंने यह भी आश्वासन दिया कि प्रशासनिक कार्रवाई के द्वारा मिशन की मदद के लिए हाथ बटाएँगे। इसके लिए व्यापक कार्य करेंगे। कोलकत्ते के प्रसिद्ध बैरिस्टर बुढ़रफ इस कार्य के लिए आर्च बिशप को उपराज्यपाल के पीछे लगने की सलाह दी। यह पैरवी सरकार से मिशन कार्य को सुचारू रूप से करने के लिए किया गया। उप-राज्यपाल के सामने सर स्टूआर्ट ने जो वादा किया था उसको पूरा करने में तत्परता दिखायी। बंगाल के उप-राज्यपाल अपने दो सचिवों को लेकर 8 मार्च 1890 को राँची आये। इन्होंने न्यायिक आयुक्त मिस्टर काउले के साथ मुकदमों की जाँच फिर शुरू कर दी। सबसे पहले इन्होंने उन पच्चीस कैदियों की ओर से दी गई याचिकाओं की जाँच की जो पहली अपील के बाद कैदी जेल में थे। फिर उन्होंने चार बिचाराधीन मुकदमों पर गौर से जाँच किया। इसके बाद फैसला सुनाया गया। 15 मार्च 1890 को उप-राज्यपाल ने कुछ लोगों की सजा बहुत कम कर दी। उन 25

कैदियों में 12 की सजा घटायी गई और चार को सजा से मुक्त कर दिया गया। इसके बाद कुछ दिनों तक रह कर जमीनदारों और रैयतों तथा आदमियों के बीच की शत्रुता को देखकर उनसे साक्षात्कार लेकर मामले को शान्त करने के लिए छोटानागपुर के आयुक्त से घोषणा करा दी - कि जमीनदार आदिवासियों से अतिसमय और अनाधिकृत काम नहीं करावें। वे मिस्टर ग्रिमले द्वारा मुकरार किये गये विधान के अनुसार ही आदिवासियों से पेश आवें। ऐसा नहीं करने से उनको कड़ी सजा मिलेगी। इस प्रकार बंगाल के उप-राज्यपाल ने फादर लीवन्स के लिए विजय का संकेत दिया। आर्च बिशप गुथौल्स का पैरवी अंग्रेज सरकार के पास काम कर किया। वह बम-बम हो गया। छोटानागपुर के आयुक्त की घोषणा को अखबारों में प्रकाशित करा दिया गया ताकि जमीनदार और विरोधी डर जायँ। नाजायज काम न होने पावे।

उपराज्यपाल के फैसले से मिशनरी फादरों को काम करने का साहस और बल मिला। फादर कारडो और फादर डेहों अपने-अपने मिशन इलाके के दौरे पर निकले। बीरू नवागढ़ और पालकोट ही केसों से प्रभावित था। बहुत से लोग मिशन छोड़ दिये थे। वे पुनः बड़ी संख्या में ईसाई धर्म में लौट आये। फादर लीवन्स राँची में ही पूर्ववत् काम करने लगे। इनकी मदद के लिए तीन फादर आये। ये फादर लीवन्स के निर्देशानुसार काम करने लगे।

बरवे, जशपुर, गांगपुर, और सुरगुजा से दल के दल लोग फादर लीवन्स और अन्य स्टेशनों में ईसाई बनने के लिए आने लगे। मिशनरियों ने इसमें सर्तकता बरती। वे सरकार की सद्भावना के बिना ईसाई बनाना नहीं चाहते थे। फिर भी लोग राँची और अन्य मिशन स्टेशनों में आकर बपतिस्मा लेने लगे। फादर लीवन्स का दौरा आम तौर से दिघिया इलाके के देहातों में होता था। फादर लीवन्स मई 1890 में फादर क्लेमेन्ट के साथ ब्राम्बे, सिसई और मांडर गये। उनकी यात्रा पाँच दिनों की थी। इस समय दिघिया क्षेत्र के दस व्यक्तियों को बपतिस्मा दिया। जुलाई में बरवे से आने वाले बत्तीस लोगों को लोहरदगा में बपतिस्मा दिया। केस मुकदमों की पैरवी और थकान के बाद राँची में आराम करने तथा मन की शान्ति होने पर फादर लीवन्स दूसरी बार बरवे का दौरा करने के लिए कमर कस लिये क्योंकि बरवे से दल के दल लोग राँची आकर उन्हें बरवे ले जाने के लिए तुले हुए थे।

बरवे की दूसरी यात्रा
(1 दिसम्बर 1890 से 5 जून 1891)

दिसम्बर 1890 को फादर लीवन्स ने खुशी-खुशी पूरे जोश के साथ यात्रा आरम्भ की। सबसे पहले वह नवाटोली गया और वहाँ का हाल समाचार लिया और वहाँ के फादर कारडो को अपने साथ किया। दूसरे फादर डेहो देहात के दौरे पर थे। उन्हें बरवे आने का संदेश देकर वे दोनों बरवे के बेन्दोरा गाँव पहुँचे। यहीं इन्होंने बरवे में धर्म प्रचार का खेमा गाड़ा। बेन्दोरा को ही बरवे का मुख्यालय बनाया। वे 2 दिसम्बर को बेन्दोरा पहुँचे। दो-चार दिनों के बाद फादर डेहो भी बेन्दोरा आकर उनसे मिले। ये तीनों दो सप्ताह तक गाँव-गाँव का दौरा करके छेछाड़ी आये। छेछाड़ी में सिर्फ दो दिन रहे। फादर कारडो खीस्तमस मनाने के लिए नवाटोली लौटे और फादर लीवन्स तथा डेहो बेन्दोरा वापस आये। ये दोनों बरवे के काथलिकों के साथ बेन्दोरा में जन्म पर्व मनाये और 6097 लोगों को बपतिस्मा दिये।

जनवरी 1891 में राँची लौट आये। कठिन परिश्रम करने के कारण फादर लीवन्स की तबीयत खराब हो गई इसलिए फादर सुपीरियर हंगेनबेक ने उन्हें आराम करने की सलाह दी। थोड़ा ठीक होने पर फादर लीवन्स डेरे में पूर्ववत काम करने लगे। दौरे से लौटे दो महीना भी नहीं हुए थे कि ये अपने घोड़े जेनेरल पर सवार होकर 3 फरवरी 1891 को पनारी, नवागढ़ और गुमला के तेलगाँव से फादर डेहो को लेकर बेन्दोरा पहुँचे। इस यात्रा में इन दोनों ने 218 शादियों पर आशीर्वाद दिया और 1677 लोगों को बपतिस्मा देकर ईसाई बनाया। 8 मार्च को फादर लीवन्स राँची लौट आये। कुछ समय तक फादर लीवन्स राँची में रहने के बाद फादर ग्रोजाँ को लेकर 20 अप्रैल 1891 को बरवे चले गये। फादर ग्रोजाँ को बरवे की प्रगति की जानकारी दी। वापसी यात्रा में इन्होंने छिछवानी, कांसिर, लोहरदगा और दिघिया का जायजा लिया। 29 अप्रैल 1891 को फादर ग्रोजाँ नवाटोली होते हुए राँची लौट गये।

फादर लीवन्स ने बरवे की यात्रा को जारी रखा। उस समय तक ईसाई काथलिकों की संख्या 23,000 तक हो गई थी। फादर लीवन्स और फादर वनेदेर केइलन 5 जून 1891 को राँची लौट आये। इस यात्रा में फादर लीवन्स की हालत और बिगड़ गई। गले में घाव हो गया था तथा खाँसी भी जोर पकड़े रहा, फिर भी ये फादर ग्रोजाँ को साथ लेकर जेनेरल पर चढ़कर बरवे के दौरे पर रहे। फादर लीवन्स

बरवे के मुख्य-मुख्य गाँव गये। गर्मी का समय था, चिलचिलाती धूप पड़ रही थी। वे गाँव में जाकर उपदेश देते थे। देहातों में खाने और सोने का इन्तजाम भी ठीक से नहीं रहता था। इनकी हालत और भी बिगड़ती गई। ये फादर ग्रोजाँ के साथ 5 जून को राँची पहुँचे। अपनी बीमारी को दिखाने के लिए 15 जुलाई 1891 को फादर लीवन्स कोलकत्ता गये। डाक्टर राय ने जाँच के बाद इनको लम्बे समय तक आराम करने भी सलाह दी। ये एक ब्रदर को साथ लेकर आराम करने के लिए 28 जुलाई को दार्जिलिंग पहुँचे। इनको वहाँ आराम करने के लिए सही जगह नहीं मिली। इसलिए वहाँ चार सप्ताह रहने के बाद ये 26 अगस्त को कार्सियांग आये। वहाँ इनकी मुलाकात पूर्व परिचित फादर होपमैन से हुई। यहाँ उनके साथ रहने से खूब आनन्द मिला। दवा-दारू के बाद भी स्वास्थ्य में कोई सुधार नहीं हुआ। ऐसी हालत में भी वे छोटानागपुर के काथलिक मिशनरियों की चिन्ता किया करते थे। वे राँची लौट कर उनके बीच में काम करना चाहते थे। उनका ध्यान हमेशा नये मिशनरियों की ओर रहता था।

छोटानागपुर के मिशनरियों से खबर मिली कि बरवे में संकट की स्थिति हो गई है। बरवे में काथलिक लोग लूथरन मिशन की ओर खिंचाये जा रहे हैं। ऐसी खबर सुन कर फादर लीवन्स चिंतित हो उठे। कोलकत्ते के डाक्टर ने इनके बीमारी का खुलासा नहीं किया। मिशनरी के डाक्टर भी इनकी बीमारी को जानते हुए भी नहीं बतलाते थे। एक दिन फादर लीवन्स की अर्जी पर फादर शेफर ने सच्चाई को बतलायी। उन्होंने कहा कि आप क्षय रोग से ग्रसित हैं। यह सुनकर फादर लीवन्स को दुःख हुआ। उसने कहा मेरा भी यही ख्याल था। फादर शेफर ने बतलाया कि आप की जिन्दगी मात्र दो साल की है। यह सुन कर वह चिंतित होते हुए भी साहस बटोर कर कहा - अगर मैं चंगा नहीं हो सकता हूँ तो यहाँ रहना बेकार है। अच्छा है कि मैं छोटानागपुर जाकर लोगों की सेवा करूँ। वहाँ मुझे बहुत कुछ करना है। दो साल का समय बहुत बड़ा नहीं है। उनके बीच काम करने से मुझे शांति मिलेगी।

बरसात बीत गई थी। जाड़े का मौसम इनके लिए सुहावना हो गया। फादर लीवन्स 2 अक्टूबर को कार्सियांग छोड़कर कोलकत्ता के लिए रवाना होकर 8 अक्टूबर को राँची पहुँच गये। इनको यहाँ पहुँचने पर अपनों से मिलकर बड़ी खुशी हुई। वे दिल में ताजगी महसूस करने लगे।

बरवे की अन्तिम यात्रा
(दिसम्बर 1891 से जनवरी 1892)

कार्सियांग से आने के दो दिन बाद 10 अक्टूबर को फादर कारडो और फादर डेहो राँची आकर फादर लीवन्स से मिले। वे कुछ दिन तक के लिए बरवे में रहे थे। उन्होंने बतलाया कि लूथरन मिशन का प्रभाव काथलिकों पर पड़ रहा है। वे चैनपुर में जमीन खरीद कर स्कूल बना रहे हैं उनका दूसरा स्कूल कांसिर में भी बन कर पूरा हो रहा है। इस प्रकार बरवे क्षेत्र में इन्होंने मोर्चा बाँध लिया है।

इन सब बातों की खबर फादर ग्रोजाँ को मिली। फादर ग्रोजाँ 23 अक्टूबर को राँची आ धमके और फादरों से विचार-विमर्श किया कि बरवे के सभी स्टेशनों में स्कूल खोला जाय। फादर लीवन्स ने कहा कि केवल बरवे में ही नहीं, समूचे छोटानागपुर में आवासीय स्कूल हो और यह मिशन की देख-रेख में रहे। फादर लीवन्स की सलाह पर फादर बोड़सोन और फादर कारडो बरवे भेजे गये। इन्होंने भटके लोगों को काथलिक मिशन में लाने के लिए जी तोड़ प्रयास किया लेकिन बहुत से लोग वापस आने में आना-कानी किये। हारकर ये दोनों फादर राँची लौटे और फादर लीवन्स से मिले। फादर लीवन्स को चिन्ता हुई। उन्होंने बरवे को बिना फादरों के छोड़ना भी अच्छा नहीं समझा। तबीयत खराब होने पर भी उसकी चिन्ता न कर बरवे जाने के लिए कमर कस लिये। अपने घोड़े पर सवार होकर वे यात्रा बाहर बरवे से शुरू किये। इन्होंने सेमला किलदी ओर खुखराडीह जाकर 20 और 21 दिसम्बर को 27 लोगों को बपतिस्मा देकर ईसाई बनाया उसके बाद बरवे के मुख्य-मुख्य गाँव जैसे कथारी और पादासीमा तक पहुँचे। उसके बाद चिरगाँव तथा संख नदी के उत्तरी किनारा बकराकोना तक भ्रमण किये। फिर टोंगो होते हुए बेन्दोरा पहुँच गये। वहाँ से संख नदी को पार करके नवाडीह इलाके के सभी गाँवों को देखा और जशपुर तथा सुरगुजा के खूँटा कोना में 57 लोगों को बपतिस्मा देकर ईसाई बनाया। इस प्रकार नवाडीह इलाके में दस दिनों तक रहे और लोगों को ईसाई बनाते गये। कटकही के उत्तर अकासी गाँव में 121 लोगों को काथलिक बनाया। दूसरे दिन वे केडेंग पहुँचे और उसके निकटवर्ती गाँव सुगासरवा तथा डड़गाँव में बहुतों को बपतिस्मा दिया। इस दौरान में बरवे में करीब 1241 लोग ईसाई बने। बरवे की यात्रा करते समय उनके सुपीरियर हगेनबेक ने राँची वापस लौटने का आदेश दिया पर वे राँची न लौट

कर बरवे क्षेत्र में ही घूमते रहे। वे अपने घोड़े जेनेरल में सवार होकर 29 जनवरी 1891 को मनरेसा हाऊस पहुँच गये। इतने दिनों तक रहकर बरवे क्षेत्र से थके - मन्दे, रोग से ग्रसित थे। आदेश के मुताबिक राँची नहीं लौटने पर उनके सुपीरियर ने उन्हें खरी-खूटी सुनायी। उन्हें सजा के रूप में आठ दिनों तक मौन धारण करने को कहा। तबीयत खराब होने के कारण वह क्षेत्र में जा नहीं सकता था। मनरेसा हाऊस में ही रहकर बाहर से आये लोगों को सलाह-मशविरा देकर उनके तकलीफों को दूर करता था।

सरकार के उच्च पदाधिकारी भी इनको मदद नहीं करने लगे। नये उपायुक्त मिस्टर गोरडोन भी कोई मदद नहीं करने लगे। कचहरी में लोग मुकदमा हारने लगे। इनके सुपीरियर फादर बोसोन की मृत्यु 36 वर्ष की उम्र में हो गई। अन्तिम समय में इनके पूर्व के उमंग में पानी फेर गया। सब तरफ निराशा ही निराशा दिखने लगा। क्षय रोग के कारण शरीर भी जबाब दे रहा था। डाक्टरों का विचार हुआ कि ये अपने देश बेल्जियम जाते तो वहाँ की आबोहवा से कहीं ये निरोग हो सकते हैं। यह सुनकर उन्हें बेहद खुशी हुई। वे स्वदेश लौटने के लिए तैयार हो गये। इसी समय किसी ने बतलाया कि कुछ लोग बरवे से आकर मिलना चाहते हैं। लीवन्स की तबीयत बहुत खराब हो गई थी इसलिए कमरे के भीतर से ही उनको आशीर्वाद दिया और कहा मैं बहुत दूर जा रहा हूँ वहाँ से चंगा होकर आने से मैं आप लागों की मदद करूँगा।

उसके बाद ही बेल्जियम के प्रोभिन्सिल से संवाद आया कि फादर लीवन्स को जल्दी बेल्जियम भेज दीजिये। फादर हगेनबेक ने दिनांक 28 अगस्त 1892 को इन्हें कोलकत्ता पहुँचाया। वह गोलकुंडा नामक पानी जहाज में चढ़कर ब्रदर कैटर्स के साथ स्वदेश के लिए चल पड़े। वे नेपल्स बन्दरगाह में 26 सितम्बर को उतरे।

बीमारी और मृत्यु
(सितम्बर 1892 से 7 नवम्बर 1893)

फादर लीवन्स पानी जहाज से 26 सिम्बर को उतर कर वहाँ के डाक्टर की देख-रेख में चार दिन ठहरे। डाक्टर ने इलाज के लिए रोम जाने की सलाह दी। रोम के डाक्टर ने उन्हें बेल्जियम जाने को कहा। प्रोभिन्सियल ने उनके साथ एक ब्रदर को भेजा। वे द्रोगेन पहुँचे। यहाँ फादर लीवन्स की भेंट पुराने मित्रों से हुई। उन्हें द्रोगेन में रोगियों के रहने का कमरा मिला। यहाँ उनके पुराने मित्र और घर के संबंधित लोग मिलने आते थे। मिलकर इन्हें बहुत खुशी होती थी। अपनी लापवाही और कठिन कार्यों के कारण इन्हें छोटानागपुर में क्षय रोग की बीमारी हो गई। फादर लीवन्स शीत काल और बसंत का समय द्रोगेन में बिताये। इन्हें इनकी इच्छानुसार लुभेन जाने की अनुमति मिली। ये वहाँ युनिवर्सिटी के डाक्टरों से इलाज कराना चाहते थे। यहाँ इन्हें तरह-तरह के नामी डाक्टरों से इलाज कराया गया। यहाँ तक कि इनके लिए वर्लिन से दवा मँगायी गई पर इनके सेहत में कोई खास सुधार नहीं हुआ ये कमजोर होते गये। मिस्सा के बाद इन्हें ढोकर कमरे में लाना पड़ता था। ये द्रोगेन से भी चल पड़े और रूस्सलार पहुँचे। रूस्सलार में ये अपने भतीजे जेरमानुस के यहाँ ठहरे। अपने परिवार वालों से मिलने के लिए इन्हें गाड़ी से घुमाया गया। इनकी अपनी बहन लुईसा अपने नन्हें पुत्र को लेकर रोती हुई अपने भाई से मिली। उन्होंने अपने छोटे भाई हेनरी के पास पत्र लिखा जो अपने पैत्रिक गाँव के फार्म मूर्सलेड में रहता था। 5 नवम्बर में जानस्सेन्स उन्हें देखने आये। उनकी हालत को गम्भीर देखकर उसी दिन उन्हें बीमारी का संस्कार दिया गया। उनके साथ एक फादर हमेशा मदद के लिए रहते थे क्योंकि उनके मरने का आभास मिल गया था। फादर लीवन्स ने पहरेदार फादर से कहा - बैठे-बैठे मैंने द्रोगेन में आपने कृत का नोट लिखा है उन्हें फाड़ कर फेंक दें नहीं तो जलाकर नष्ट कर दें। नोट तीन कोपियों में था। दूसरे दिन वे छोटानागपुर में रहते समय सन्त मरिया का स्कापुलर जिसे वे अपने गले में टाँगे रहते थे। उन्हें अपने हाथों से थाम लिया उनकी उम्र 37 वर्ष थी पर वह 70 वर्ष की आयु जैसा दिखता था और झुक कर चलता था। उन्हें स्वर्ग जाने का ख्वाब होने लगा। 7 नवम्बर को उनके साथ रहे ब्रदर ने घंटी बजाकर फादर लीवन्स के मरण की सूचना दी। फादर कौश जो बंगाल के थे, तुरन्त जाकर उनका

अन्तिम संस्कार किया।

धरती माँ ने कहा, आपने छोटानागपुर में काथलिक ईसाई भाइयों के लिए अथक काम किया। आप थक गये हैं अब आप मेरे कोख में आकर सदा के लिए आराम करें। सो जायँ। उन्हें लुभेन नगर के उपनगर हेभरले की धरती-कब्रिस्तान में सदा के लिए सुला दिया गया। मरने के पहले वे सौभाग्य से अपनी धरती पर आ गये थे।

सौ साल पहले फादर लीवन्स ने छोटानागपुर आकर खीस्त धर्म की एक अमिट छाप छोड़ दी। प्रथम विश्व युद्ध के बाद फादर लीवन्स की जन्म भूमि मूर्सलेड के लोगों ने आरोही लीवन्स की प्रतिमा को मुख्य स्थान पर क्रूस पकड़वा कर ऊँचे चबूतरे में स्थापित करके उनका सम्मान बढ़ाया। सन् 1951 ईस्वी में यह तय किया गया कि इस महान आत्मा के शरीर को जेसुइट गृह लुभेन लाया जाय। जुलाई 1951 में उनके कब्र को खोदकर परीक्षण से सन्तुष्ट होकर एक अपार भव्य समूह में प्रार्थना करते जुलूस के साथ इनके पार्थिव शरीर को 8 जून 1952 रविवार को लुभेन लाकर जेसुइट गृह में दफनाया गया। इस शव यात्रा का नेतृत्व छोटानागपुर के आर्च बिशप महामान्यवर निकोलस कुजूर ने किया। फादर लीवन्स के पार्थिव शरीर को नागपुर के बिशप फलान्डर्स ने बेल्जियम के लोगों के साथ श्रद्धापूर्वक लुभेन पहुँचाया। इनसे फादर लीवन्स का मान सम्मान बढ़ा।

बेल्जियम यात्रा के दौरान सन् 1979 में आर्च बिशप पियुस केरकेट्टा ने फादर लीवन्स के पार्थिव शरीर को पवित्र अवशेषों को छोटानागपुर में लाने की इच्छा व्यक्त की। इसलिए उनकी इच्छा के पालन में आर्च बिशप और महामहिम कार्डिनल तेलेस्फोर पी. टोप्पो के नेतृत्व में 31 अक्टूबर 1993 को फादर लीवन्स के पवित्र पार्थिव शरीर के अवशेषों को हरेक काथलिक गिरजा घरों में घुमाकर 7 नवम्बर को भावी पीढ़ी के काथलिक ईसाइयों के प्रेरणा एवं यादगारी के लिए पुरूलिया रोड के प्रमुख चर्च सन्त मरिया गिरजा घर में सुरक्षित रख दिया गया है।

फादर लीवन्स बेल्जियम के मूर्सलेड में 11 (ग्यारह) भाई-बहनों के बीच जन्मे गरीबी के कारण जेसुइट समाज में पादरी बने। इनकी पढ़ाई-लिखाई का सारा बोझ मिशन ने उठाया। इनको धर्म प्रचार के लिए भारत भेजा गया। भारत में काथलिक येसु समाजी का मुख्यालय कोलकत्ते में था। क्षेत्र की जानकारी और प्रशिक्षण देकर इन्हें छोटानागपुर के आदिवासियों के बीच धर्म प्रचार करने के लिए

लाया। यहाँ के जंगल-पहाड़ों, नदी-नालों, साँप-बिच्छू और बाघ-भालुओं से भरे क्षेत्रों में इन्हें घोड़े पर चढ़कर जाना पड़ता था। खाने-पीने का कोई ठिकाना नहीं, पर करीब 29-30 वर्ष के गठीले शरीर वाले नौजवान के येसु ख्रीस्त के नाम पर दुःख तकलीफ का बीड़ा उठाने के लिए तैयार हो गया। इस प्रकार मिशन के कृतज्ञता का बदला चुकाया।

फादर लीवन्स छोटानापुर के सभी आदिवासियों को काथलिक बनाना चाहता था। इसके लिए वह दिन-रात अथक परिश्रम करता था। धर्म प्रचार सर्वप्रथम इन्होंने खूँटी के तोरपा में मुंडाओं के बीच किया। इसके बाद उराँव क्षेत्र के लिए ग्राम दिघिया में खेमा गाड़ा और यहीं से मांडर, लोहरदगा, सिसई, गुमला, बरवे, महुआडांड, बीरू, जशपुर, गांगपुर, सुरगुजा के उराँवों और खड़िया आदिवासियों के बीच धर्म प्रचार किया। यहाँ के बाद इन्होंने पुरूलिया और संथाल पगरना का भी दौरा किया और संथाल-आदिवासियों को काथलिक बनाया। इनकी योजना के तहत सभी क्षेत्रों में प्रचारक और पुरोहित तैनात किये गये।

इनके मरने के बाद भी काथलिक मिशन योजनाबद्ध काम कर रहा है। सारे क्षेत्र को कई डायसिसों में बाँटा गया है - ये है सम्बलपुर, रायगढ़, अम्बिकापुर, डाल्टेनगंज इसमें हजारीबाग और पलामू जिले शामिल हैं। इनके बाद गुमला, सिमडेगा और खूँटी डायसिस बनाये गये हैं। इन डायसिसों में पाँच कॉलेज, पाँच कॉमर्सियल कॉलेज, एक टेकनिकल कॉलेज, 37 उच्च विद्यालय, 47 मध्य विद्यालय, 73 प्राथमिक विद्यालय, 4 मांटेसरी स्कूल, 23 इंगलिश मीडियम स्कूल चलाये जा रहे हैं। इनके अलावे 14 कल्याणार्थ संस्थायें, पाँच अस्पताल, 20 डिस्पेंसरी तथा बुजूर्ग, बीमार और निःसहायों के लिए चार संस्थायें हैं। संत जेवियर्स संस्थान भी खुला है।

मिशनरी कामों के लिए असंख्या पुरोहित, मदरस और सिस्टर्स हुए हैं और होते जा रहे हैं। इनके कामों की देख-रेख के लिए 31 धर्माध्यक्ष, 3 महाधर्माध्यक्ष, एक कार्डिनल तैनात हैं। काथलिक मिशन का कार्य रोम के पोप के निर्देशन एवं सहायता पर सुचारू रूप से चल रहा है। काथलिक देशों का भी सहयोग रहा है।

फादर लीवन्स का येसु समाजी रोमन-काथलिक मिशन के लिए किये कार्य उस समाज के लिए क्रेडिट है पर इन्होंने पुराने संगठित समाज को दो भागों में बाँट दिया जो समाज के लिए कलंक हो गया। दोनों समाज अलग-अलग विपरीत दिशाओं

में चल रहे हैं।

किसी धर्म का वहीं व्यक्ति स्वर्ग जायेगा या स्वर्ग का सुख भोग करेगा को अपने आप में ठीक है जिसमें इन्सानियत है जिसमें धार्मिक भावना है। यह दुनिया कर्म भूमि है जो जैसा कर्म करेगा वैसा ही फल पायेगा कर्म के आधार पर ही वह स्वर्ग या नरक जायेगा। किसी के किसी धर्म में जाने मात्र से ही वह स्वर्ग नहीं जायेगा। भगवान ने दुनिया को कर्म प्रधान बनाया है जो अत्यन्त गोपनीय है पर सिद्ध पुरूष को इसका आभास हो जाता है। वह उसी के अनुकूल रहकर जीवन व्यतीत करता है और मंजिल तक पहुँच जाता है।

अध्याय - 2

ग्राम-दिघिया

ग्राम दिघिया राँची से पश्चिम राँची-लोहरदगा रोड पर करीब 35 किलो मीटर पर बेड़ो थाने में है। यह बेड़ो थाने का एक नामी गाँव है। यह दो शीटों का मौजा है। इसके तीन भाग में धान खेत है। एक चौथाई में बस्ती, टाँड़ खेत और जंगल हैं। बस्ती जंगलों की तलहटी वाले समतल जमीन पर पूरब से पश्चिम लम्बा है। बस्ती से सटे पूरब और दक्षिण वाले जंगल बहुत पहले ही कट कर साफ हो गये हैं। हमारे देखते पूरब वाले जंगल में बचे साल के कई मोटे-मोटे पेड़ थे। अब वे भी कट गये। केवल कुछ महुँए और आम के पेड़ मौजूद हैं। दक्षिण वाले जंगल की जमीन में मात्र दो करम के पेड़ है जिनका नाम भगत करम है। गाँव से सटे हुए एक बहुत बड़ा बरगद का पेड़ है जहाँ शिकार चंडी अवस्थित है। यह बरगद पेड़ भी बूढ़ा होकर गिरने की स्थिति में है। सर्वे में यह जमीन गैर मजुरूआ दर्ज है जिसको हमने सरकार से बन्दोवस्त करा कर वहाँ घर बना लिया है। वर्त्तमान में अभी चार जंगल बचे हैं जो दक्षिण पूरब में हैं। पश्चिम-दक्षिण के जंगल का नाम केन्द पतरा है। दक्षिण के जंगल को दिगहा डोंगरी कहते हैं जो चिलधिरी गाँव के सीमाने पर है। तीसरा करम पतरा है और चौथा मंगरा पतरा कहलाता है। पतरा का अर्थ होता है जंगल। गाँव में तीन सरना स्थल और एक जोंख बड़ा है। सरना में पहान पूजा करते हैं और जोंख़ बड़ा में बरगद पेड़ के नीचे युवकों (धांगरों) का शिवलिंग स्थापित है। सरनों में एक बड़ा सरना है। जो सरना टोली के पश्चिम में है। दूसरा मुख्य गाँव के पश्चिम राँची-भंडरा चट्टी रोड किनारे में है और तीसरा सरना तुको गाँव के सीमाने पर चट्टी टोली में है। इसका नाम लट्टी झूड़ है। ये सभी उराँवों के धार्मिक स्थल हैं। गाँव के उत्तर-पूरब टिकरा में फादर लीवन्स का बनवाया हुआ चर्च था जो अब वह दिघिया, कुदारखो और कराँजी के सीमाने में चला गया। गाँव के उत्तरी छोर में तुको-चचकपी सीमा से ग्राम टिंगरिया बस्ती तक एक टिकरा है उसमें भी बहुत पहले जंगल था, वह खत्म हो गया है। उसमें केवल कुछ महुए के पेड़ हैं। उराँव में मुरम पत्थर के ऊँची जमीन को टिकरा कहा जाता है।

दिघिया गाँव के उत्तर में ग्राम टिंगरिया है दक्षिण दिशा में चिलधिरी मौजा है पूरब में कराँजी और कुदारखो पड़ते हैं तथा पश्चिम में तुको है। गाँव के एक तिहाई

भाग में धान की खेती होती है। इस एक तिहाई में गढ़हे और चौरा दोनों प्रकार के धान खेत हैं। गाँव सुखी और सम्पन्न है। गाँव के कोई भी आदमी बिना खेत के नहीं है चाहे वे क्यों न गरीब हों। यहाँ हरिजनों की आबादी नहीं है।

जंगल और टिकरा होने के कारण गाँव के क्षेत्र में पाँच नालायें बहती थी। पूर्वजों ने जंगल-झाड़ को काट कर नालों को बाँध बना-बनाकर बहुत मेहनत से खेत बनाया। इन नालों का विवरण इस प्रकार है - पहला नाला में तुको और चचकपी क्षेत्र का पानी बहता था। यह जोकी पोखर होकर बहता था इसे बाँध कर समतल बनाया और वे इसके पानी को लन्डरी और दहा चौरा के खेतों में ले गये। इस नाले का पानी दोनों तरफ के खेतों में बहता है। इसके पानी से भरपूर बरसाती खेती होती है।

दूसरा नाला तुको के भुटकू टोली अर्थात् खुट्टी टोली से निकली है इससे पखना सोकरा और जामुन चौरा के खेत पटते हैं। इस नाला का नाम चम्बोथ नाला है।

तीसरा नाला चरका टंगरा से निकलता है। इस नाले का पानी पखना सोकरा के धान खेतों को पटाता है।

चौथा नाला कठी सोकरा नाला है। इसका पानी नाले के दोनों तरफ के खेतों को पटाता है।

पाँचवा नाला अमराय सोकरा नाला है, यह नाला सेमर चौरा तथा तुरी चौरा तथा नगड़ा चौरा के खेतों को पटाता है।

पूर्वजों ने इन पाँचों नालों को ऐसा खेत बनाया है कि नालों का पानी ऊँची जमीन अर्थात् चौरा खेतों में बहता है। गाँव का तीन तिहाई जमीन धान खेतों में बदल गया है। गाँव में टाँड़ खेत बहुत ही कम हैं। धान खेत के एक छोर से दूसरे छोर तक नजर जा नहीं सकती है ऐसा लम्बा-चौड़ा धान खेत बिरले ही अन्य गाँवों में मिलता है। धान खेत लम्बे-चौड़े जगहों में फैला है। गाँव का कोई भी परिवार बिना खेत का नहीं है। यह खुशहाल बस्ती है। पहले मुख्य गाँव के अलावे पाँच टोले थे। लेकिन चार टोलों के लोग मुसलमानों के अत्याचार से गाँव छोड़कर अन्यत्र चले गये। वर्त्तमान में एक ही टोला बचा है। यह तुको के सीमाने में है। इसका नाम चट्टी टोली है। मुख्य गाँव और चट्टी टोली मिला कर यहाँ करीब दो हजार परिवार हैं हाल फिलहाल में मुख्य गाँव से निकल कर दो टोले बने हैं एक सरना टोली दूसरा टोंका

टोली। बेड़ो-भंडरा रोड गाँव होकर खेतों के बीचो-बीच जाता है।

मुख्य गाँव में उराँवों की संख्या ज्यादा है। यहाँ के भूंइहरों का गोत्र 'ख़ेस्स' है। गाँव में दूसरे-दूसरे गोत्र के रैयत भी बसे हुए हैं। रैयतों में तिरकी गोत्र के लोग हैं। ये 1800 ईस्वी में बगल के कुदारखो गाँव से आकर बसे। गाँव में सबसे पहले आकर भूंइहरों के बीच रहने के कारण दिघिया गाँव के ये जेठ रैयत हुए ये हैं चुन्नी, पैतु और बुदू। चुन्नी उराँव के लड़के बासु उराँव और गान्दूर उराँव थे। उनके वंशज हमलोग हैं। मिंज गोत्र के तीन परिवार भी बसे हुए हैं। ये हैं सुकरा, झीरगा, लेदा तथा मंगरू मिंज डुंड़का-विशु के पिताजी मंगरू मिंज थे। एक तिग्गा परिवार, जेंगा उराँव का है। डिगो, लकड़ा परिवार का है। कना-कूडा टोप्पो गोत्र वाले हैं, जतरू उराँव भी टोप्पो गोत्र का है। पहान टोली में तुम्बा का परिवार ख़लखो गोत्र का है। इतने ही परिवार के लोग दूसरे-दूसरे गाँवों से आकर ख़ेस्स गोत्र वाले भूंइहरों के साथ हैं। गाँव में ख़ेस्स गोत्रों के तीन खानदान भगत परिवार के हैं, ये हैं - मंगरा भगत, पारसनाथ भगत और सुखदेव भगत।

दिघिया गाँव में चार भूंइहर महतो परिवार के लोग हैं ये थे भीखू महतो, बेरा महतो, पतू महतो और बुधवा महतो। ये गाँव के शासक थे। यहाँ चार भूंइहर पहान परिवार के लोग भी हैं, ये हैं - कूबा पहान, इनके वंशज हैं - मंगरा पहान और कुशल पहान। दूसरे नम्बर में लिटी, बिशु, मगहू तथा सीमोन और जेम्स पहान।

तीसरे नम्बर में जीतू, मुड़हू और बिदाई। चौथे नम्बर में मंगरा भगत, पारसनाथ भगत और लूम्बा पहान हैं। ये गाँव में सरना धर्म के पुजारी थे। पहानों में दो परिवार के लोग मिशन धर्म में चले गये हैं। इन महतो और पहानों के अलावे गाँव में ख़ेस्स गोत्र के अन्य भूंइहरों की जनसंख्या भी है। गाँव में भूंइहरों की संख्या ज्यादा है।

आदिवासियों के अलावे इस गाँव में बहुत से अन्य-अन्य जाति के लोग भी बसे हुए हैं। इनमें तीन खानदान के अहीर परिवार हैं, ये हैं मंगरा अहीर, दासू अहीर, सीटवा और दशरथ अहीर। चीक बड़ाईक के तीन परिवार हैं, ये हैं छटू बड़ाईक, सामसिंग बड़ाईक और झूरन बड़ाईक। दो लोहरा परिवार के लोग भी हैं। दलया लोहरा निःसन्तान मर गया। भोटवा लोहरा के दो लड़के इनमें जगदेव लोहरा मर गया उनके परिवार के लोग हैं, बड़ा लड़का साहदेव जिन्दा है। महादेव लोहरा खत्री खटंगा से आकर बसा है। उसका लड़का गाँव का फार पजाता और लोहे का

अन्य औजार बनाता है। बनिया साहू में सिपटाहल साहू, गजा-बुधवा खानदान, कोल्हा साहू और सीताराम साहू के परिवार हैं। एक परिवार पांड़ (सवांसी) है। नन्दलू पांड़ और मकडू पांड़ के परिवार गाँव में हैं। चार जुलाहा परिवार के लोग हैं। ये हैं, अब्बी, पचन, छकन और सोहबालिया के परिवार है। चीक बड़ाईक संवासी (पांड़) और जुलाहा लोग कपड़ा बुनने का कार्य को छोड़ दिये हैं। तीन गोड़ाईत खानदान के लोग हैं। ये हैं - भूखन, लीबू के पिता सुखराम, भूखन गोड़ाईत के चार लड़के थे - गोविन्द, अर्जुन, भीम और नकुल इनका परिवार फला-फुला है। जगराम खानदान अलग है। एक खांची और टोकरी बनाने वाला भगवती, ओड़ तुरी परिवार का भी है। दो परिवार हजाम हैं। ये हैं - नंदलाल और जगा ठाकुर, इनके परिवार के लोग हजामत का काम करते आ रहे हैं। ये सभी कारीगर उराँव किसानों के साथ रहते आये हैं। इन्हें उराँवों ने अपने साथ रखा है। अन्य जातियों में तेली साव (साहू) की संख्या ज्यादा है। ये हैं जगरनाथ साव, बोलो साव, सरवन-गुदला, महेश और फोचो साव। दूसरे नम्बर में सोबरन साव है। इनके लड़के ये हैं - लक्ष्मण साव, डोमरा, टेमना और परना साव, तीसरा नम्बर में जीतू साव हैं जिनके लड़के हैं - हुलास साहू, दशरथ, सीवा और यदू साहू। चौथा में साम-गन्दिरा जिनके लड़के बैचना साव थे। इनके लड़के बीरेन्द्र और रमेश हैं। पाकल मेड़ी से आकर कोयरी परिवार तुको गाँव के पांड़े से पाँच एकड़ टांड़ खेत सरनाटोली में खरीदकर घर बना लिया है। चार मुसलमान खाँन परिवार के लोग भी बसे हुए हैं। ये हैं - मीर समसुद्दीन खाँ, कबरूद्दीन, मुहम्मद अली ओर मुहम्मद ठुपा। ये सन् 1800 ईस्वी के करीब में दिधिया गाँव में आकर बसे। इन्होंने महरू भासनन्दा, हाटू और कादोजोरा गाँव को नीलामी में लेकर आये। ये इन गाँवों में न बसकर दिधिया में बसे। ये तीन भाई थे। दो का वंशज नहीं चला केवल मीर समसुद्दीन का ही परिवार अपने सम्बन्धियों के साथ दिधिया में बसा है। नाचनी के लड़के के साथ इनके पाँच लड़के हैं। नाचनी के लड़के का नाम फागुवा है।

गाँव के भूंइहर आदिवासी किसान थे इसलिए कृषि कार्य या जीवन के जरूरी कार्यों को कराने के लिए इन्होंने कारीगरों को अपने साथ रखा। किसान उनकी सेवा के बदले फसल काट कर मिसनी के समय अनाज देते हैं। इस प्रकार उनकी खेती और जीवन का कार्य सुचारू रूप से चलता है। इस गाँव में हरिजनों की संख्या नहीं है।

दिघिया की चट्टी टोली जो तुको गाँव के सीमाने से सटा हुआ है इस टोली में बारहों जात के लोग हैं - मुसलमान, भूमिहार-बराहिल, दर्जी, तेली-साव, बनिया, कुम्हार, सिन्दुरिया, हलवाई, ठठेरा, पानेरी। इसी टोली के दिघिया क्षेत्र में साप्ताहिक बाजार लगता है। हरेक साल जतरा और मंडा भी इसी बाजार टाँड़ में बैसाख महीने के शुक्ल पक्ष की नवीं तिथि में लगते हैं। यह स्थल तुको गाँव से सटा हुआ है इसलिए बाजार और मेला, तुको के नामों से जाना जाता है। पश्चिम में इसका सीमान तुको के पांड़े तालाब के पूर्वी छोर से शुरू होकर तुको के दक्षिण अम्बा टोली के सीध में जाता है। खुट्टी टोली और आम्बा टोली दोनों तुको मुख्य गाँव से निकले हुए हैं। तुको के पांड़े तालाब से सटा हुआ उसके पूरब में जोकी पोखर है जो दिघिया गाँव के क्षेत्र में है। चट्टी टोली के लिए दिघिया गाँव का अलग सरना है। जो लट्टी झूड़ सरना कहलाता है। दिघिया में तीन सरना स्थल हैं उनमें दो दिघिया के मुख्य बस्ती में हैं।

गाँव में दो तालाब और दो बगीचे हैं। एक तालाब और बगीचे को रातू के महाराजा ने बनवाया था। जैसे जमीनदारी चली गयी वैसे ही महाराजा ने बगीचे के आम गाछों को कटवा कर उसके जमीन को गाँव के रैयतों के साथ बन्दोवस्त कर दिया। तालाब उनके मझीयस खेतों के ऊपर है। आम तालाब होने के कारण यह सरकार में भेस्ट कर गया। इसलिए महाराजा इसे बेच नहीं सके। जोकी पोखर रैयतों द्वारा बनाया गया है। आम तालाब होने के कारण इन्हें भी सरकार ने अपने अधीन कर लिया। गाँव के पूरब वाले बगीचे, गाँव वालों के उपयोग में है क्योंकि यह गैरमजुरूआ खास जमीन है लेकिन यहाँ पर के पेड़ भी सही सलामत नहीं हैं। कुछ कट गये हैं और कुछ बूढ़े होकर गिर रहे हैं। अब पेड़ लग नहीं रहे हैं।

फादर लीवन्स के द्वारा बनवाया गया प्राइमरी स्कूल उत्क्रमित होकर उच्च विद्यालय हो गया है। फादर विलियम होज ने पुराने मिशन को छोड़ कर दिघिया, कुदारखो और करॉंजी के सीमानों में जमीन खरीदकर पुराने गिरजा और स्कूल को भी खरीदी गई जगह पर ले गया। यहाँ एक लड़की स्कूल भी मिशन के द्वारा खोला गया है। मिशन के द्वारा पुराने गिरजा और स्कूल को उठा लिया गया, इसलिए यहाँ सरकार द्वारा प्रोजेक्ट स्कूल खोल दिया गया है। बगल के गाँव तुको में मिडिल स्कूल है जो सरकार के हाथों में है। इस प्रकार स्कूल की सारी सुविधा इस गाँव में हो गई है।

उराँवों के इस नामी गाँव में बाहर से आकर ब्राह्मण-पंडित-पाठक का एक परिवार बसा था। बाहर से आने वाला यह पहला परिवार था। इस परिवार के लोगों ने गाँव के सड़क किनारे तीन एकड़ में आम का बगीचा लगवाया। यह पांडे बगीचा कहलाया। यह पंडित परिवार 1800 ईस्वी में मुसलमान-पठान लोगों के दिघिया गाँव में बसने के कारण तुको गाँव में जाकर बसा। यह परिवार मुसलमानों के साथ बसना नहीं चाहा इन लोगों को संदेह हो रहा था कि ये मुसलमान हमलोगों के पीने वाले कुँवों में गाय की हड्डी डाल कर इन्हें हिन्दू धर्म से भ्रष्ट कर देंगे। सोचा, भला है कि ये बगल के तुको गाँव में क्यों न जाँय? ये दिघिया से जाकर चिलधिरी गाँव के जगरनाथ मंदिर में पूजा-पाठ करने जाया करते थे। यह मंदिर चिलधिरी गाँव के लालनाथ साहदेव के परिवार का हैं। यहाँ प्रत्येक वर्ष भादो के एकादशी में रथ मेला लगता है। दिघिया और चिलधिरी एक ही सीमाने पर के गाँव हैं। यहाँ से पूजा करने जाने में सुविधा थी। अब ये तुको गाँव से पूजा-पाठ के लिए चिलधिरी गाँव जाते हैं। जब तक ये दिघिया गाँव में थे। गाँव के किसी भी लोगों का कोई हानि नहीं किये। इन्होंने भलाई ही की।

महरू-भसनन्दा और हाटू-कदोजोरा गाँवों को महाराजा से नीलामी लेकर बिहार से आकर ये मुसलमान दिघिया बस्ती में बस गये। नीलामी लिए हुए गाँव जंगल-झाड़ों के बीच था। मीर समसुद्दीन के पिताजी तीन भाई थे। तीनों के लिए तीन घोड़े थे। इन्हीं घोड़ों में सवार होकर नीलामी में लिए गाँवों का दौरा किया करते थे। ये करीब 1800 ईस्वी में आकर दिघिया गाँव में बसे। दिघिया गाँव में इनकी जमीनदारी नहीं थी फिर भी उराँवों के मसना और मसना से सटे हुए तीन एकड़ जमीन को जोर-जुल्म से कब्जा कर धान खेत बनाया है। उराँव लोग लाचार होकर तालाब के पास वाले गैरमजुरूआ जमीन में मसना बनाया। मसना की जमीन बहुत छोटी है। बच्चों का मसना जो अलग होता है मुख्य मसना के बगल ही में पुराने छोर पर है। इस मुसलमान परिवार ने मसने से आकर नहाने धोने वाले कुँआ और पानी के डोबहा को भी दखल करके कूदर धान खेत बना लिया। यह करीब तीन एकड़ का जमीन पहान टोली और सरना टोली के बीच में है। यह जमीन मुसलमानों का मसना पावा और कुदर खेत कहलाता है।

गाँव के उत्तर में गाँव के लोगों को पीने के लिए एक चुँआ था। चुँआ के पूरब में लोगों के ठहरने एवं सामूहिक कार्यक्रम के लिए एक बड़ा भूभाग था, उसको

भी इन्होंने दखल करके धान खेत बना लिया। ऊपरी भाग में एक बड़ा वट-वृक्ष है जहाँ पर प्रत्येक वर्ष मंडा मेला लगता है। जगरनाथ मास्टर ने एक मंदिर भी बनवाया है।

बाहर से आये हुए पठान तीन भाई थे। जैसा पहले बतलाया गया है - तीनों के लिए तीन घोड़े थे। गाँव के पश्चिम-दक्षिण में घनघोर जंगल था। अभी भी छोटे-बड़े पाँच जंगल मौजूद हैं। खुदा न खास्ते पठानों का एक घोड़ा घर से छूट कर जंगल की ओर चला गया। बड़ा सरना के आस-पास में बसे हुए उराँवों ने इस घोड़े को नील गाय का बछड़ा जंगली जानवर समझ कर रात में मार डाला और उसके शिकार को चारों टोलों के उराँव परिवार के बीच बाँट दिया। ये इस शिकार के माँस को खा गये। घोड़े की खोज खबर होने लगी तो पता चला कि उराँवों ने रात के समय इसे जंगली जानवर समझ कर मार डाला और माँस को शिकार बना कर खा लिया। पता चलते ही गाँव में पठानों ने घोड़े को मारने और उनके माँस को खाने वाले परिवारों को खदेड़-खदेड़ कर मार-पीट करने लगे। डर के मारे चारों टोलों के ख़ेस्स परिवार के लोग अपने-अपने सगे-संबंधियों के यहाँ चले गये और वहीं बस गये। इन्होंने जंगल-झाड़ को काट कर खेत बना लिया। उस समय खेतों की कमी नहीं थी। जंगलों को खेत बनाने में झंझट भी नहीं था। उराँवों में ख़ेस्स परिवार के लोग पहले केवल इसी गाँव में थे।

इनमें से भाग कर बहुत से लोग सिसई थाने में बस गये हैं। ये अपना गोत्र धनवार (ख़ेस्स) लिखते हैं। कुछ लोग पूरब की ओर जाकर नगड़ी बस्ती के दक्षिण में बसे हैं, ये भी अपना गोत्र ख़ेस्स की जगह धनवार लिखते हैं। कुछ लोग लापूंग थाने में बसे हैं ये ख़ेस्स की जगह अपना गोत्र धान लिखते हैं। मुंडा में ख़ेस्स को धान कहते हैं। कुछ लोग लोहरदगा तरफ भी चले गये। इनमें कुछ लोग अपना गोत्र ख़ेस्स नहीं तो धनवार लिखते हैं। कोई-कोई अगल-बगल के गाँवों में बस गये हैं।

कुछ लोग, सिमडेगा, राउरकेला और मध्य प्रदेश में भी ख़ेस्स परिवार के लोग जाकर बसे हैं। ख़ेस्स, धनवार और धान गोत्र वाले सभी दिघिया गाँव के मूल-उराँव वासिन्दे थे। इनको चिढ़ाने के लिए लोग 'घोड़ खाइया' दिघियार कहते हैं। इस प्रकार दिघिया के आधे लोग गाँव के पठानों के मार-पीट और तंग करने से खेत-बारी छोड़कर दूसरी जगह भाग गये। इनके छोड़े हुए खेतों को गाँव के पठान, पांडे-ब्राह्मण और गाँव के मुख्य-मुख्य महतो, पहान और भूंइहर दखल कर लिये।

बगल के गाँव घघरा में बसे लोग यहाँ आकर खेती करते हैं नहीं तो खेत को बटाई में दे देते हैं। बाहर से आये पठानों ने दिघिया गाँव को बर्बाद कर दिया। अब गाँव के उराँव अपने हक हकियत को समझ गये हैं इसलिए उनका रोब-दाब और जुल्म आदिवासियों पर नहीं चलता है। ये उनको हेय की निगाह से देखते हैं।

फादर लीवन्स ने तोरपा में 1885 से 1887 तक काथलिक धर्म का प्रचार कर मुंडा और खड़िया परिवारों को ईसाई बनाने के बाद उनकी निगाहें उराँव आदिवासियों पर पड़ी। इन्होंने तोरपा में चर्च और लोअर प्राइमरी स्कूल बनाया। ये तोरपा क्षेत्र में करीब तीन वर्षों तक अथक परिश्रम करके 15,000 मुंडा लोगों को काथलिक बनाया। फरवरी 1888 में 2,500 खड़िया परिवारों को बपतिस्मा देकर काथलिक धर्म में लाया। करीब नब्बे प्रतिशत खड़िया परिवार के लोग रोम काथलिक हो गये। फादर लीवन्स 3 जून 1888 को तोरपा छोड़कर राँची आये। इन्होंने दिघिया में खेमा गाड़कर सारे उराँव क्षेत्र में धर्म प्रचार का बीड़ा उठाया। हालांकि दिघिया पारिस 1886 में ही शुरूआत हुआ था। फादर डीकोक यहाँ के प्रथम पारिस प्रीष्ट हुए थे। फादर हाँइगे की मदद से फादर डेस्मेट ने दिघिया क्षेत्र में 5,000 लोगों को ईसाई बनाया और 1888 मई तक में पुनः 6000 लोग काथलिक ईसाई बने। ईसाई बनाने में आर्च बिशप गुथौल्स का पूरा सहयोग था। ये रोम से आये पैसों को भेजते थे।

अब रही दिघिया गाँव की बात, काथलिक मिशन के आने के 45 वर्ष पहले से आकर जर्मन मिशन के पादरी दिघिया क्षेत्र और दिघिया गाँव में धर्म प्रचार कर रहे थे। पाँच वर्षों के बाद हेथाकोटा में दो उराँव परिवार जर्मन मिशन में आये। फिर चट्टी, टेंगरिया, खिरदा, चरिमा, चचकपी, कुदारखो और खत्री खटांगा में कुछ लोग जर्मन मिशन में आये। 45 वर्ष तक जर्मन पादरी अपने प्रचारकों के साथ दिघिया गाँव को रात-दिन छान डाले फिर भी एक भी उराँव जर्मन मिशन की तरफ नहीं झुका।

रोमन काथलिक मिशन के फादर डीकोक, हाँइगे और हगेन बेक रात-दिन अपने प्रचारकों के साथ जाकर लोगों के साथ काथलिक बनाने के लिए सम्पर्क रखते थे। गिरजा और स्कूल गाँव से सटा हुआ था फिर भी एक परिवार भी मिशन नहीं बना। दिघिया क्षेत्र के लोग तथा बीरू, बरवे, जशपुर, सिमडेगा और अन्य-अन्य जगहों से लोग दिघिया आकर बपतिस्मा लेकर ईसाई बनते थे। गाँव के चार महतो

और चार पहानों के शासन में गाँव संगठित था। फादर लीवन्स ने भी रात-दिन प्रयास किया पर फेल हो गया। गाँव रातू महाराजा के अधीन था इसलिए तोरपा और दिघिया के बाहरी क्षेत्रों के समान यहाँ केस मुकदमा नहीं था। बेठ-बेगारी और दबदबा का झंझट भी नहीं था, वे अपने सरना धर्म और संगठन में अडिग थे। गाँव सुखी सम्पन्न था। फादर लीवन्स का हथकन्डा इस गाँव पर नहीं चला। फादर लीवन्स बेल्जियम जाने के लिए 1 सितम्बर 1892 में निकले। उन्हें क्षय रोग हो गया था। वे यूरोप के रोम और अन्य जगहों पर दवा-दारू कराते रहे पर चंगा नहीं हुए। अन्त में 7 नवम्बर 1893 के अपराह्न ढाई बजे उनका निधन हो गया। धरती माँ ने अपने कोख में उन्हें सदा के लिए सुला दिया।

उनकी मृत्यु के बाद जमीन संबंधी मुकदमों में पैरवी करने वाला कोई पादरी नहीं रहा इसलिए काथलिक मिशन ने ईसाई बनाने का नया तरीका अपनाया। उन्होंने बच्चों को शिक्षा के मारफत काथलिक बनाने का फार्मूला अपनाया। फादर लीवन्स के समय ही सभी मिशन स्टेशनों में लोअर प्राइमरी स्कूल और गिरजा स्थापित कर दिये गये थे। दिघिया के संगठित और कट्टर उराँव लोगों को बहुत महीनी चालों से फुसला कर काथलिक बनाया गया। फादर लीवन्स के बाद उराँव फादर तैयार हो गये थे। उन्हें दिघिया का पारिस प्रीस्ट बनाया गया। इनमें मुख्य पीयुस ख़लखो थे जो रायडीह थाने के उराँव थे, बाद में ये जशपुर के बिशप बने। इनके परिवार के लोग दिघिया गाँव आकर मिशन का काम करने लगे। जिन्होंने चारों महतो और पहानों के घर में जाकर सम्पर्क किया। उन्हें उराँव भाषा में बोलकर उनके बच्चों को पढ़ाने के बहाने मिशन स्कूल में नाम लिखवाया और उनके बच्चों को बपतिस्मा देकर मिशन बनाया। इन्हीं बच्चों के मारफत चारों महतो और दो पहान परिवार मिशन हो गये। यह महीनी प्रलोभन था। उन्हें पढ़ाने के नाम पर ठगा गया। बच्चों को मदद करके वे ऊपर तक पढ़ाये नहीं, पर उन्हें केवल अक्षर का ज्ञान दिये। यह, गाँव के संगठित समाज को तहस-नहस करने का बड़ा प्रलोभन रहा। केवल इनका ध्यान पादरी बनाना था। भीखू महतो के लड़के लालू जिसका नाम बपतिस्मा के बाद बेंजामिन रखा गया था जिन्हें फादर बनाने के लिए कोलकत्ता भेजा गया। किन्तु उन्हें क्षय रोग हो गया। भगवान ने साथ नहीं दिया, इसलिए उन्हें फादरी से निकाल दिया गया। उनकी शादी पत्थल-कुदवा के जोसफिना से कर दिया गया। कुछ दिन के बाद लालू-बेंजामिन मर गया। जोसफिना विधवा हो गई जिसे बन्धू- अलफोस ने शादी कर लिया। इससे भी

कोई बाल-बच्चे नहीं हुए। बन्धू की पहली पत्नी से अंजू पैदा हुई थी। अंजू की माँ जोसफिना को शादी करने के पहले ही वह मर गई थी। बन्धू मरने के पहले लोअर पास करके सेना में गये थे।

गाँव में चार महतो थे जिनके बच्चों को पढ़ाने के लिए नामांकन किया गया था उनका विवरण इस प्रकार है -

1. भीखू महतो जिनके बच्चों को नामांकन मिशन स्कूल में किया गया था। गाँव का यह महतो परिवार का पहला परिवार ईसाई बना। वे बच्चे थे, लालू-बेंजामिन, बिरसा-अन्थोनी, भतीजा गब्रिएल, पैतू।
2. बेरा महतो इनके लड़के कैला और मतियस।
3. पतू महतो - इन के लड़के गरीबापतरस और जोन थे।
4. बुधवा महतो - इनके लड़के फोसे माईकेल पौलुस और जुएल थे। इनके परिवार को ओंड़का कह कर ईसाई बनाया।

लुकसा खानदान को दरहा भूत, इनके परिवार में है कहकर ईसाई बनाया गया। अब पहान खानदान में लूम्बा पहान के लड़के दानिएल और अलविस का नामांकन कराया। इसी प्रकार दूसरे पहान खानदान से सीमोन और जेम्स का नामांकन करा कर काथलिक बनाया।

इसी प्रकार भीखू महतो की बेटी बेरा खेस्सा के पास गाँव ही में रह गई थी उनके लड़के अलफोंन्स और बरना का नाम मिशन स्कूल में लिखवा कर पूरा परिवार को ईसाई बनाया। पतू महतो की दो लड़कियाँ गाँव में ही रह गई थी। एक डुडू गन्दूर के पास, इनके लड़के मंगरा-लुईस और अलविस को पढ़ाने के बहाने से समूचा खानदान को काथलिक बनाया। बेरा महतो की लड़की गाँव ही में डिगो लकड़ा के यहाँ रही। उनके परिवार को भी काथलिक धर्म में लाया गया। सीपिरिया खानदान के लोग भी मिशन बने। इनमें अंजेला सिस्टर हुई थी। इसी खानदान में गंदिरा के भाई चम्पा-जोसेफ को दिघिया में पढ़ाकर सन्त इग्नातियुस हाई स्कूल भेजा गया और वहाँ इनको ईसाई बनाकर पत्थलकुदवा में शादी करा दिया गया। पादरियों ने तिरकी परिवार पर भी हाथ लगा कर बुदू तिरकी के लड़के भीखा-जेम्स को स्कूल भेजा और इनके खानदान को ईसाई बनाया। इसी प्रकार जूरा के परिवार जो गन्दिरा और सीपिरिया खानदान का है। जूरा के मरने के बाद इनकी लड़कियों को मिशन स्कूल में भेजा और उनकी दोनों लड़कियों और उनकी माँ बेलहो को काथलिक धर्म में लाया।

मिंज परिवार में लेदा मिंज के लड़के राफेल और दोमनिक को स्कूल में नामांकन करा कर समूचे परिवार को ईसाई बना लिया। फादर पीयुस दिघिया छोड़ने के पहले कना-कूड़ा के लड़के महादेव के बेटे को यह कहकर स्नान दिया कि उस पर मेरा जश लगेगा यह ख्रीस्तान बनाने का षड्यंत्र रहा। उस नन्हें बच्चे का नाम, अपने नाम पर पीयुस रखा और ईसाई बना लिया।

फादरों ने हाथी घर के भोकरे और माँगा का नामांकन मिशन स्कूल में कराया, पर ये मिशन नहीं हुए। माँगा नाटा लड़का था इन्हें मिशन बनाने के लिए जोर-जुल्म किया, तब इन्होंने विदेशी फादर की दाढ़ी को पकड़ कर झूला-झूला था, जिससे इनको मार मिली। उन्होंने स्कूल छोड़ दिया। इनके चाचा भोकरे रसिक थे, ये अखड़ा खेलने में रम गये। इन्होंने स्कूल छोड़ दिया इनके लड़के पैतू ख़ेस्स और शंकर हैं। पैतू ख़ेस्स की एक लड़की केनरा बैंक में क्लर्क है। दूसरी लड़की पारा शिक्षक है।

मिशनरियों के स्कूल लेकर मिशन बनाने के कारण सरना परिवार वालों ने मिशन स्कूल में पढ़ाना ही बन्द कर दिया था। हाल फिलहाल में तुरी ख़ेस्स के लड़के-साहदेव को मिशन बनाकर पादरी बना लिया। इन्होंने अपने पिता के सारे परिवार वालों को मिशन बना लिया। इसी प्रकार पतू महतो के दूसरे दामाद सोमई ख़ेस्स के परिवार को भी ईसाई बना लिया है और एक बेटे के लड़के को फादर बनाया।

ऐसी परिस्थिति में भी ऊपर टोली और पहान टोली के ख़ेस्स भूंइहर और गौरों परिवार के पचास प्रतिशत लोग सरना धर्म मानने वाले बच गये हैं। इस गाँव के उराँवों की जनसंख्या दो भागों में बँट गई है। महतो अर्थात् गाँव के शासक वर्ग समूचे के समूचे काथलिक धर्म में चले गये जिसके कारण गाँव का संगठन टूट गया। समाज के धड़ को ईसाइयों ने काट लिया फिर भी उनका जड़ बचा हुआ है सरना समाज सम्भल जायेगा तो मूल जड़ से निकला नवगोजा सरना धर्म में पनप सकता है। धार्मिक कार्य के खेतों को जो उनके अधीन था ईसाइयों ने कब्जा कर लिया है।

गाँव में उराँव को छोड़कर दूसरी जाति के कोई भी लोग ईसाई नहीं बने हैं।

फादरों और सिस्टरों ने आधे मुख्य-मुख्य परिवारों को काथलिक बनाया। स्कूल भी खोल दिया गया था। इसलिए मिशन परिवार के लोगों को पढ़-लिखकर

बड़े-बड़े पदों में आसीन होना था। शिक्षा का दीप फादर लीवन्स द्वारा 1888 में ही जला दिया गया था। इस प्रकार करीब 135 वर्ष बीत गये। माननीय जिला जज पीयुस ख़ेस के सिवाय कोई पदाधिकारी नहीं हुए। ये हमारे साथ पढ़े। अभी हाल में बरना मास्टर की लड़की बरथेला डी.एस.ई. बनी हैं। कुछ लोग मास्टर मिस्ट्रेस और लिपिक बने हैं। अलफोन्स का लड़का मार्टिन पशुपालन विभाग में बड़ा बाबू है। सीपीरिया खानदान का एक लड़का अमीन है। जैसे मिशन की जनसंख्या प्रलोभन देकर बढ़ाने की रही वैसे मिशन का योगदान शिक्षा में बिल्कुल नहीं रहा। जज साहब की एक लड़की और लड़का बैंक में बैंक मेनेजर हैं तथा एक लड़की डाक्टर है। मांगो और झुबू शिक्षिका बनी। जोनसन तिरकी रेलवे में पुलिस इन्सपेक्टर है उन्हें पादरी बनाने के लिए मिशन पढ़ाया था। वह लेखक के खानदान का है।

सरना समाज के लोग तो मिशन स्कूल में पढ़ाना-लिखाना ही छोड़ दिये थे जैसे ऊपर बतलाया गया है। 1945 में मैं भीखू तिरकी और श्री पियुस ख़ेस्स दोनों सहपाठी दिघिया मिशन के मिडिल स्कूल के बाल वर्ग में पढ़ना शुरू किये। मैं दिघिया से मिडिल पास करके सन्त इग्नातियुस हाई स्कूल गुमला में अडमिशन लेकर सन् 1957 मार्च में मैट्रिक पास किया और सन् 1962 जून में सन्त जेवियर्स कॉलेज से बी.कॉम की डिग्री ली तथा सन् 1963 जुलाई में बैचलर ऑफ ला की डिग्री प्राप्त की। बिहार की ग्यारहवीं प्रतियोगिता परीक्षा में बैठ कर उत्तीर्ण होकर सन् 1961-62 में मजिस्ट्रेट बना लेकिन चीन और भारत के बीच युद्ध चलने के कारण 1963 ईस्वी के सितम्बर महीने में मेरी पोस्टिंग हुई। मिस्टर पीयुस ख़ेस्स हाई स्कूल के लिए सेन्ट जोन हाई स्कूल राँची गये। वहाँ से पास करने के बाद हम दोनों सन्त जेवियर्स और ला कॉलेज में साथ रहे। ये मुंसिफ माजिस्ट्रेट बने। मैं सन् 1996 के अप्रैल महीने में उपनिर्देशक कल्याण द.छो.प्र. राँची से सेवा निवृत हुआ। इसी साल मिस्टर पीयुस ख़ेस्स भी डिस्ट्रीक्ट जज औरंगाबाद से रिटायर्ड हुए। गाँव एवं बेड़ो थाना का मैं पहला ऑफिसर रहा। हमारे सरना धर्म में रह कर ऑफिसर होने से सरना धर्म वाले पढ़ना शुरू किये। पैतू ख़ेस्स अमर भगत, झिरगा ख़ेस्स, खिमिया ख़ेस्स सोतवा ख़ेस्स और हिरको ख़ेस्स बी.ए. पास किये। अमर भगत की लड़कियाँ और एक लड़का बी.ए. पास है। दोनों लड़कियाँ नौकरी में हैं।

ये पदाधिकारी नहीं बने पर किसी न किसी सरकारी सेवा में समायोजित हुए। श्री झिरगा ख़ेस्स दारोगा के पद में हैं। श्री अमर भगत राँची यूनिवर्सिटी में

कार्यरत थे। श्रीमती हिरको खेस्स टीचर्स ट्रेनिंग कॉलेज की शिक्षिका है। कुछ लड़के और लड़कियाँ झारखण्ड पुलिस में बहाल हुई हैं। हमारा बड़ा लड़का राजन कुमार तिरकी बैंक ऑफ बड़ौदा में चीफ मेनेजर के पद में आसीन है और उससे छोटा लड़का श्री शशि भूषण तिरकी रेलवे सेवा में कार्यरत है। एक भतीजा सुरेश तिरकी रेलवे में बड़ा बाबू है। सुखदेव भगत का लड़का गौरी भगत ए.जी. बिहार में कार्यरत था।

गाँव के मुसलमान परिवार में कोई भी उच्च शिक्षा प्राप्त नहीं किया है। गोड़ाईत परिवार में भीम राम नवाँ क्लास पास करके मिलिट्री में गये थे। इनके चार पुत्र हैं सबसे बड़ा दमोदर जो दारोगा से अभी हाल ही में सेवानिवृत हुए हैं। उनसे छोटा फाईनेंस विभाग में है जिसका नाम आनन्द राम है। उससे छोटा शंकर बैंक में ऑफिसर है। सबसे छोटा ग्रेजुएट है पर अच्छे पद में नहीं हैं।

तेली साव परिवार में जगरनाथ मास्टर गाँव का पहला पढ़ा-लिखा आदमी था। ये खत्री खटंगा और गुमला से पढ़कर रातू महाराजा के यहाँ बच्चों को महाराजा की कोठी में पढ़ाते थे। इसका सबसे बड़ा लड़का दिगम्बर बेसिक स्कूल का शिक्षक था। उससे छोटा शिव प्रसाद साहू अडभोकेट थे। इनके दोनों बेटे दुनिया में नहीं रहे। शिव प्रसाद साहू का एक लड़का मेडिकल रीप्रेजेनटेटिभ है। इन्हीं के दूसरे खानदान में बोलो साव का लड़का रामलखन साव वकील है। अलग तेली साव खानदान में बेचना साव का लड़का श्री बीरेन्द्र साव कल्याण विभाग में शिक्षक हैं। इनका छोटा भाई रमेश बी.ए. पास है पर नौकरी नहीं लगी। लोहरा परिवार में भोटवा लोहरा का बड़ा लड़का साहदेव नगरपालिका में टैक्स कलेक्टर था जो सेवा निवृत हो गया। बड़ाईक खानदान में हरकनाथ का लड़का कुछ पढ़ा-लिखा है। झुरन बड़ाईक खानदान में बाणासिंह बड़ाईक कुछ पढ़े लिखे थे। अहीर परिवार में सीटवा अहीर का लड़का मैट्रिक पास है पर वह सरकारी सेवा में नहीं है।

बनिया साव परिवार में रामदास का बेटा बिसेश्वर साहू कोपरेटिब बैंक के मेनेजर थे जो सेवा निवृत हो गये हैं। उससे बड़ा भाई किशोर स्वास्थ्य विभाग में प्रखंड स्तर पर कार्यरत रहकर सेवा निवृत हुए। गजाधर साव का लड़का मनीष कोपरेटिव बैंक में कार्यरत हैं।

अभी हाल में लोग शिक्षा और नौकरी का महत्व जान गये हैं इसलिए पढ़-लिख रहे हैं लेकिन सरकारी नौकरी पाना कठिन हो गया है। इसके लिए लोगों

को अथक परिश्रम करना होगा। पढ़े-लिखे लोगों को नौकरी पाने के अलावे रोजी-रोटी के लिए रोजगार के कामों में भी ढालना होगा। जिनके पास खेत है उनको खेती को कैश क्रोप में बदलना है। खेती में तरह-तरह की तकनीकी और सुविधाए हैं इसलिए खेती-बारी में भी जोर देना है। लोग संगठित होकर विकास के कार्यों पर बिचार-विमर्श करें। समय को बेफायदा नहीं गवाँवें। मेहनत करते रहें, मेहनत का फल मीठा होता है। नशापान को त्याग दें। नशापान करने से काम में हर्जा होता है। साथ-साथ लड़ाई-झगड़ा भी होती रहती है। नशापान बुराई की जड़ है। बाल-बच्चे भी बर्बाद हो जाते हैं। सभी बच्चे-बच्चियों को स्कूल भेजना आवश्यक समझें। उन्हें उत्साहित करें।

गाँव के चौमुहाने में गाँव का एक बड़ा नृत्य अखाड़ा है। जहाँ पर्व-त्योहार के सुवसरों पर रात-दिन नृत्य हुआ करते हैं। गाँव के सुहावन एवं मनोरंजन हेतु लड़के-लड़कियाँ रात में नाच-गान करती हैं। इसी समय कोटवार इन्हें गाने बजाने के ताल और राग का अभ्यास कराता है। उराँव संस्कृति को बचाने के लिए यह बहुत जरूरी है।

अध्याय - 3

राय साहेब बन्दीराम उराँव

बन्दीराम उराँव का जन्म बड़ा तालाब के किनारे राँची शहर के पुरानी राँची गाँव में सन् 1872 में हुआ था। इनके पिता का नाम बन्धु राम उराँव और माँ का नाम कुमिया था। यह पुरानी राँची का नामी परिवार था। खेत-खलियान का तो कहना ही नहीं सभी धान खेत एक नम्बर के थे। इनके पिताजी को अपने लड़के को पढ़ाकर बड़ा बनाना और गिरे हुए अनपढ़ लोगों के बीच जागृति लाना मुख्य ध्येय था। इनको पढ़ाने के लिए इनके पिता जी ने एक विद्वान मौलवी का जोगाड़ किया। मौलबी साहेब बहुत ही योग्य प्रखर बुद्धि वाले थे। उन्होंने उनके घर ही में पढ़ाने का बीड़ा उठाया। ये उन्हें उनके घर ही में जा-जा कर उर्दू, हिन्दी, फारसी और सरकार या स्कूल में पढ़ाने वाले विषयों को पढ़ाना आरम्भ किये। बन्दी राम उराँव बचपन से ही तीव्र बुद्धि वाले तेज तरार लड़के थे। वे मास्टर के पढ़ाये सभी विषयों का मनन बड़ी ध्यान देकर याद करते थे। चंचल और तीव्र बुद्धि वाले होने के कारण वे सभी पढ़ाई की बातों को मानस पटल में रखकर घोखते थे। इस प्रकार ये एक काबिल विद्यार्थी थे।

मास्टर साहब केवल किताबी ज्ञान ही नहीं देते थे पर दुनियादारी चीजों को भी बतलाते थे। उनकी छिपी हुई भगवान द्वारा दी बुद्धि और तकदीर को खोलते थे। पढ़ाई के बाद वे बतलाते थे कि कैसे जीवन यापन करें और समाज के बीच काम करके निःसहाय लोगों को कैसे ऊपर उठायें। उनकी तकदीर को कैसे खोलें। बन्दी राम बाबू पेड़ चढ़ने में महीर थे। यही उनके ऊपर बढ़ने और तरक्की करने का सन्देश देता था। ये उर्दू, हिन्दी और फारसी पढ़ने में माहीर हो गये। ये क्लास के सभी विषयों को भी पढ़कर सातवें क्लास का कोर्स पूरा कर मिडिल पास कर गये।

मास्टर साहब एवं उनके पिताजी की इच्छा से इनका नामांकन राँची जिला स्कूल के आठवें क्लास में हुआ। ये लगन से पढ़ते गये। इनके साथ गोपाल बाबू, मिरजा साहेब, मिस्टर तिवारी और अन्य-अन्य बड़े-बड़े घर के लड़के इनके क्लास में पढ़ते थे इनकी संगति से भी इनका ज्ञान बढ़ता था। ये बड़े लगन से नवीं क्लास तक पढ़ें। इसी बीच में इनके घर में समस्या उठ गई। घर में बँटवारा और लड़ाई

झगड़ा होने लगा। इनकी चिन्ता बढ़ गई। स्कूल और घर के बीच इनका ध्यान बँट गया। ऐसी हालत में इनको स्कूल छोड़ना पड़ा।

ये चिन्तित होकर घर में रहने लगे। मौलवी मास्टर साहेब के दिये गुरू वाणी को याद करके इन्हें लोगों की भलाई में काम करने की चिन्ता सताने लगी। अपने तो मैट्रिक भी पास नहीं कर सके पर समाज के लोगों को पढ़ाने का बीड़ा उठाया। अपने घर के पास ही चालीस-पचास मिट्टी की कोठरी बनवाया और देहात से आये इच्छुक लोगों को रखकर विभिन्न स्कूलों और कॉलेजों में पढ़ने के लिए भेजते थे। स्वयं गाँव के बाहर से आये और गाँव के लोगों एवं बच्चों को हिन्दी और उर्दू पढ़ाते थे। उस समय का नवाँ क्लास आजकल के बी.ए. पास के बराबर होता था। वह पुरानी राँची में स्कूल खोलकर पढ़ाने लगे। गाँव और बाहर से आये छात्र इन्हें मास्टर साहब कहने लगे। इतने पर भी इन्हें सन्तोष नहीं हुए। इन्होंने छोटानागपुर के उराँव एवं अन्य आदिवासियों के लिए एक शिक्षा समिति का गठन किया। उस समिति में दूर-दूर के नामी जाने-माने लोग समिति के सदस्य बने। इनमें बलकू उराँव, नरसिंग ख़लखो के बाबू जी, जन्ना गाँव के चापा हुरहुरिया गाँव के कयुस, दमड़ी भगत और छोटानागपुर के इने-गिने मुख्य-मुख्य लोग थे। यहीं रहकर गड़गाँव के महादिपा वकील, नरसिंग ख़लखो, हरिनंदन राम और उनके छोटे भाई राजेन्द्र पढ़े-लिखे और अच्छे-अच्छे ओहदे पर सरकारी सेवा में रहे। इन्हीं के कारण भरनो का महली परिवार आगे बढ़ा। गड़गाँव के महादिपा वकील बने। नरसिंग ख़लखो ने उपनिदेशक जनसम्पर्क के पद को सुशोभित किया। हरिनन्दन राम स्कूल इन्सपेक्टर के पद पर रहे और उनके छोटे भाई राजेन्द्र एक्साइज इन्सपेक्टर के पद को पकड़ लिये। इस प्रकार बहुत से लोग बन्दीराम उराँव के बनवाये छात्रावास पुरानी राँची में रहकर पढ़े-लिखे और सरकारी सेवा में बहाल हुए। आदिवासियों के उत्थान में इनका कार्य और योगदान समाज के लिए सराहनीय रहा। इनके छात्रावास में 300-400 लड़के रहते थे।

इनके साथ पढ़ने वाले गोपाल बाबू, मिरजा साहेब और तिवारी पढ़-लिखकर बड़े-बड़े आदमी बने। राय साहेब का तकदीर साथ नहीं दिया इसलिए इनको स्कूल छोड़ना पड़ा। परिवार के पालन-पोषण के लिए इन्होंने प्रेस में काम करना शुरू किया। सन् 1903 में सर्वे सेटलमेन्ट के कार्य की शुरूवात हुई। बन्दीराम उराँव ने अमीन का कार्य पकड़ लिया। सर्वे कार्य में पदस्थापित नये-नये

पदाधिकारियों को गाँव-घर, लोगों के बात-व्यवहार और नियम-कानून की जानकारी मास्टरों की तरह दिया करते थे, इसलिए बन्दीराम बाबू पदाधिकारियों के बीच बहुत लोकप्रिये हो गये थे। अमीन काम करते समय इनको जिलाभर के गाँवों में घूम कर समझने-बुझने का मौका मिला। इनको गाँव के लोगों से मिलने का भी अवसर प्राप्त हुआ। ये गाँव-घर के लोगों के बीच आदरनीय आदमी बने।

नापी कार्य के पूर्ण होने के बाद इन्होंने तहसीलदार का काम पकड़ लिया। इस काम को करते-करते जमीन-जायदाद के विषय में पूरी जानकारी हुई। उन्होंने यह भी जान लिया कि सूदखोर और जमीनदार कैसे आदिवसियों की जमीन को लूट लेते हैं जिस कारण आदिवासियों को खेत-बारी और गाँव छोड़कर कोड़ा-भोटांग और चाय बगानों में काम करने के लिए जाना पड़ता है। दबंग लोग कैसे आदिवासियों को परेशान करते हैं। इन सबकी जानकारी ये आदिवासियों को देने लगे। उनके खेत-बारी को लूटाने से कैसे बचाये। इसकी चिन्ता उन्हें सताने लगी।

खुदा-न-खास्ते इनकी भेंट एक ज्ञानी वकील और आदिवासियों के हितैषी राय बहादुर शरत चन्द्र राय से हुई। ये आदिवासियों के रीति-रिवाज, धर्म-कर्म, जीवन और संबंधित चीजों के विषय में लिखना आरम्भ किये। इनकी कई पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं जो उराँव और उनके धर्म और रीति-रिवाजों से संबंधित हैं। इनके इस लेखन कार्य में बन्दीराम उराँव का भरपूर सहयोग रहा है। ये शरत बाबू को गाँवों में घूमा-घूमाकर संबंधित विषयों की जानकारी कराते थे। जीवन भर ये भाई-भाई की तरह रहने लगे। ये एक दूसरे के बिना रह नहीं सकते थे।

सन् 1915 में टाना भगतों का प्रचार-प्रसार होने लगा। टाना धर्म की हवा-बयार इतने जोरों से चली कि सिसई, लोहरदगा, कुडू, मांडर, टुड़ी, चन्दवा, पलामू, हजारीबाग, बसिया, भंडरा और अन्य-अन्य जगहों में जा-जाकर जतरा टाना भगत और उनके अनुनाइयों की बैठक करने लगे। टाना भगतों के धर्म का संगठन बढ़ता और मजबूत होता गया। इसी बीच महात्मा गाँधी ने नारा लगाया - अंग्रेजों भारत छोड़ो। इन्होंने इस आन्दोलन को छोटानागपुर में भी फैलाया। टाना भगतों को संगठित देखकर इनको कांग्रेस पार्टी में मिला लिया। ये टाना भगत अंग्रेजों के कार्यों में सहयोग नहीं देने लगे। मालगुजारी देना बन्द कर दिया और दूसरे-दूसरे कामों में भी अड़चन डालना शुरू कर दिया। सरकार टाना भगतों के असहयोग आन्दोलन को कुचलना चाहती थी। उस समय बन्दी राम उराँव ही एक ऐसा आदमी थे जो टाना

भगतों को समझा-बुझा कर अंग्रेज सरकार की मदद कर सकते थे।

बन्दीराम उराँव टाना भगतों के बीच घूम-घूम कर सभा का आयोजन करने लगे जिसके कारण टाना भगतों का असहयोग आन्दोलन कमजोर पड़ा। टाना भगतों को इनके समझाने-बुझाने के कारण, अंग्रेज सरकार ने इनको राय साहेब बन्दीराम उराँव का ओहदा-तमगा दिया जिसके कारण ये लोगों के बीच इसी नाम से मशहूर हुए। लोग इन्हें राय साहेब बन्दीराम उराँव कहने लगे।

जीवकोपार्जन के लिए इन्होंने कपड़े के दुकानदारी का रोजगार शुरू किया। ये कलकत्ता से रेडीमेड कपड़ा मँगवाकर उचित दामों में बेचते थे। इनका दुकान आज-कल के ग्रेट मेडिकल होल के सामने था। इस धन्धे को इन्होंने करीब दस वर्षों तक किया। एक बार पर्व-त्योहार के समय के लिए 5000 रूपये का माल मँगवाया। यह माल कलकत्ता से राँची न आकर कराँची चला गया। लिखा-पढ़ी करने पर माल छः महीने बाद राँची वापस आया। बरसात का मौसम आ गया था, इसलिए सारा माल सड़-गल कर बर्बाद हो गया। कपड़ों के सड़ने-गलने से इनको भारी नुकसान हुआ। व्यापार करने की पूँजी ही खत्म हो गयी। इसी विपत्ति के समय ही में इनके एक लड़के बुधराम की मृत्यु हो गई। विपत्ति पर ही विपत्ति आ गई। ये व्यापार करने में लाचार हो गये। इनको भाग्य साथ नहीं दिया। इसलिए इन्होंने कपड़े का कारोबार छोड़ दिया।

रायसाहेब बन्दीराम उराँव की शादी स्कूल छोड़ने के बाद ही अरगोड़ा के पहना लिंड़ा की लड़की से बड़े धूमधाम से हुई थी। इनके पाँच बच्चे-बच्चियाँ हुईं। इनमें तीन लड़के और दो लड़कियाँ थीं। तीन लड़कों में छोटे दो लड़कों की मृत्यु हो गई। सबसे बड़ा लड़का बचा उसका नाम पहना था। इनका नाम अपने नाना के नाम में रखा गया था। ये पढ़-लिखकर कमिश्नर के कमिश्नरी ऑफिस में काम पकड़ लिये। बन्दी राम के जीवन में पहना के हाथों से सात बेटे हुए। वे सभी हृष्ट-पष्ट जवान हो गये। सबसे बड़े का नाम गनेश भगत था। महेश भगत इनके लड़के जिन्दा हैं। बाकी पाँच लड़कों का ब्योरा पता नहीं है।

इन्हीं के उम्र दराज व्यक्ति जो मांडर थाने के मुरगू गाँव के थे। मुरगू गाँव राँची-मांडर रोड पर बसा है। इस व्यक्ति का नाम जुएल लकड़ा था। इनका परिवार ईसाई धर्म में चला गया था इसलिए मिशन ने अपने खर्च से इनको राँची के बाद पढ़ने के लिए सन्त पाल कॉलेज कलकत्ता भेज दिया। ये वहाँ पढ़ने के बाद पादरी

बनकर राँची आये तो इनकी भेंट 1920 में राय साहेब बन्दीराम उराँव से हुई। इसी अवसर पर श्री लकड़ा की भेंट राय बहादुर शरत चन्द्र राय से भी हुई। शरत चन्द्र राय राँची के एक नामी वकील थे जो राय साहेब बन्दीराम उराँव की मदद से आदिवासियों अर्थात् उराँवों और उनसे संबंधित धर्म और उनके रीति-रिवाज पर किताब लिखने के लिए शोध कर रहे थे। इन दोनों से मिलकर जुएल लकड़ा को बहुत खुशी हुई।

राय साहेब बन्दीराम उराँव और जुएल लकड़ा ने आदिवासियों के संगठन और विकास के लिए नये बने गोस्सनर छात्रावास में एक बैठक का आयोजन किया। इस बैठक में बहुत से जाने-माने लोग शामिल हुए। बहुत विचार-विमर्श के बाद बहुत ध्वनि मतों के साथ छोटानागपुर उन्नत्ति समाज का प्रस्ताव आया। राय साहेब बन्दीराम उराँव को प्रस्ताव जँचा इसलिए ये राजनीति में प्रवेश कर जी-जान से छोटानागपुर उन्नत्ति समाज के लिए कार्य करने लगे। वे इस कार्य के लिए गाँव-गाँव में जाकर बैठक किये। इसलिये राय साहेब बन्दी राम उराँव का नाम चर्चा का विषय बन गया। सब लोग इनको जानने लगे। वे राँची में ही केवल नहीं पर दूसरे-दूसरे जिलों में भी घूम-घूम कर सभा का आयोजन किये। सभी गाँवों में ग्रेन गोला खोलवाये। सन् 1931-1932 में उन्होंने उन्नत्ति समाज के तरफ से एक "आदिवासी अखबार" निकालना शुरू किया। इस अखबार के कारण आदिवासियों में जागृति आ गई किन्तु पैसे की कमी के कारण अखबार का निकलना बन्द हो गया। इसी अवसर पर इन्होंने एक सभा भवन बनाने की योजना बनायी। इस भवन के बनाने के लिए इन्होंने चन्दा वसूलना शुरू किया। बहुत प्रयास के बाद करीब तीन हजार तक पैसा जमा हुआ। इन पैसों से हिन्दपीड़ी मुहल्ला में आदिवासी महासभा का सभा भवन बन कर तैयार हो गया। यह सभा भवन रायसाहेब के प्रयास से ही बना। यह सभा भवन अभी भी हिन्दपिड़ी में खड़ा है।

इसके बाद कई अलग-अलग सभायें हुई। अलग-अलग जिलों जैसे सिंहभूम और संथाल परगना के लोग अपनी-अपनी सभा बनाये, पर राय साहेब ने सभी जिलों में घूम-घूम कर लोगों को समझाया-बुझाया जिसके कारण उराँव मुंडा, हो, खड़िया और संथाल के लोग एक ही महासभा में शामिल हो गये। सबके लिए एक ही संगठन बना। इस संगठन के द्वारा एक सभा की बैठकी सन्त आलोइस स्कूल में हुई। इस सभा में रोमन, जर्मन, अंग्रेजी और सरना मिशन के लोग शामिल हुए।

यह सभा आदिवसी चरित्र सुधार के लिए बुलाया गया था। मिलिटरी के लोग आदिवासी लड़कियों पर जोर-जुल्म करते थे। लड़कियों की बचाइस के लिए सभा द्वारा काम किया जाता था। इसमें राय साहेब जोर-शोर से सक्रिय होकर काम किये। आदिवासी लड़कियों को सचेत किया। नशापान बन्द कराया और शिक्षा पर जोर दिया।

सन् 1939 में एक सभा की बैठक जिला स्कूल में हुई। इस बैठक में सरकार की ओर से डॉ. सच्चिदानन्द सिंह भाग लिये। इस सभा में छोटानागपुर को बिहार से अलग करने की बात उठी उस पर डॉ. सच्चिदानन्द सिंह ने विरोध किया। इस पर राय साहेब ने उठकर तमतमाते हुए कहा कि छोटानागपुर से प्राप्त पैसों का खर्च बिहार के क्षेत्रों में किया जाता है। यहाँ विकास के लिए कुछ भी पैसा नहीं दिया जाता है। इसीलिए यह क्षेत्र पिछड़ते जा रहा है। छोटानागपुर को बिहार से अलग कर दीजिये तो हमलोग इसे चमका देंगे। इस कमिटि में ठक्कर बप्पा भी थे। राय साहेब के छोटानागपुर को विहार से अलग करने की बुलन्द आवाज को सुनकर सभी मेम्बर ताली जोर-जोर से बजाने लगे। वे जीवन भर अलग झारखंड की माँग करते रहे।

राय साहेब बन्दीराम उराँव पहले से ही नगरपालिका के सदस्य रहे थे। इस दौरान में नगरपालिका के दूसरी जातियों-सदस्यों से अच्छा संबंध रखे हुए थे। इनके सुन्दर बात-व्यवहार से दूसरी जाति के लोग भी खुश थे। 1945 में असेम्बली का चुनाव हुआ उसमें ये खड़े होकर अच्छे मतों से जीत गये। ये अपने जीवन भर एम.एल.ए. रहे और क्षेत्र के लिए भरपूरा काम करते रहे। उनका विचार विशुनपुर के क्षेत्र में आश्रम खोलकर वहीं से जनता जनार्दन की सेवा करना था। वे आपने बुढ़ापे के जीवन को शान्ति पूर्ण से रखकर इसी आश्रम में बिताने का विचार रखते थे। वे शहरी जीवन से उब गये थे, इसलिए खुली हवा और शान्त वातावरण बुढ़ापे जीवन के लिए चाहते थे। लेकिन उनका यह विचार पूरा नहीं हो पाया। मनोकामना मन ही में रह गयी।

एक दिन वे पटने की बैठक में शामिल होकर राँची वापस आये। पहले की तरह वे खेत-बारी में घूम-घूम कर खेती-बारी देखकर घर वापस आये। शाम के समय देहातों से आये लोगों से बात-चीत किये। बात-चीत करते समय अचानक उनका गला बैठ गया। ऐसी हालत में वह खटिया पर लेट गए। बाहर से आये लोग

उनकी सेवा-श्रुषा किरने लगे, पर चिन्ता में पड़ गये। दौड़-धूप कर वे डाक्टर को बुलाये। डाक्टर आकर दवा-दारू किये और घर चले गये। सबेरे डाक्टर के आने के पहले उनकी मृत्यु हो गई। हो सकता है उनको दिल का दौरा हुआ होगा। उनकी मृत्यु की तिथि नौ सितम्बर 1951 थी। मृत्यु में इनको कोई तकलीफ नहीं हुई। इस प्रकार इनकी मृत्यु भगवान और धरती माँ की इच्छा से शुभ रहा। मृत्यु के समय इनकी उम्र 79 वर्ष की हुई थी। इतने दिनों तक जीकर इन्होंने अपने समाज के लिए खूब काम किया। इनकी पत्नी 69 वर्ष की उम्र में पहले ही मर गई थी। भरा-पूरा परिवार के बाल-बच्चों को छोड़कर ये धरती माँ की कोख में सदा-सदा के लिए सो गये।

इनका स्वभाव बहुत ही अच्छा था। ये बड़ों से बड़ों और छोटों से उनके मन के मोताबिक ही बात-चीत करते थे। इनकी बातों या विचारों से कोई नाराज नहीं होते थे। जो इनके पास आते थे उनको बार-बार मिलने का मन करता था। जीवन भर ये समाज के विकास और उत्थान के लिए ही सोचते रहते थे। सभा में बादल की गरजन जैसा ही गरजते थे। भाषण द्वारा लोगों को प्रभावित करते थे। सभा में अपार भीड़ रहती थी। राय साहेब बन्दीराम उराँव घर के कामों में बहुत रूचि रखते थे। वे खेती-बारी स्वयं कराते और इसकी देख-रेख स्वयं ही करते थे। हल भी चलाते और खेतों में काम करते तथा फसलों की कटनी-मिसनी अपनी उपस्थिति में कराते थे।

राय साहेब बन्दीराम उराँव जुएल लकड़ा से मिलकर राजनीति में आये। इन्होंने सर्वप्रथम उन्नत्ति समाज बनाया। यही आगे चलकर आदिवासी महासभा में बदल गया। कर्मठ नेता राय साहेब, इग्नेस बेक जे.सी. हेवार्ड, थेओदोर सुरीन, पौल दयाल, जुलियुस तिग्गा इग्नेस कुजूर और सुरेन्द्र नाथ बिरूवा की अगुवाई में सभा का काम आगे बढ़ा। सन् 1938 की आम बैठक में थेओदोर सुरीन अध्यक्ष और राय साहेब उपाध्यक्ष, सर्वसम्मिति से चुने गये। राय साहेब ने जिला स्कूल राँची की बैठक में सरकार के प्रतिनिधि डॉ. सच्चिदानन्द सिंह और ठक्कर बप्पा से छोटानागपुर, अलग राज्य की माँग की जिसको सभा के सदस्यों द्वारा तालियों की गड़गड़ाहट से समर्थन मिला।

आगे चल कर यही आदिवासी महासभा झारखंड पार्टी बनी। राय साहेब ने अथक परिश्रम करके चन्दा वसूला और हिन्दपिड़ी में आदिवासी महासभा के लिए

सभा भावन बनवाया। ये जीवन भर एक जुझारू नेता थे।

महात्मा गाँधी, नेहरू और राजेद्र प्रसाद की अगुवाई में भारत 15 अगस्त 1947 में स्वतंत्र हुआ। झारखण्ड बिहार में सम्मिलित था।

राय साहेब बन्दीराम उराँव के अह्वान पर चलकर झारखंड के नेताओं ने 15 नवम्बर 2000 को इसे बिहार राज्य से अलग करा लिया। श्री बाबूलाल मरांडी इस नये झारखंड के प्रथम मुख्यमंत्री बने और प्रभात कुमार प्रथम राज्यपाल हुए।

इस प्रकार राय साहेब बन्दीराम उराँव का देखा हुआ सपना साकार हुआ। ऐसीसूझ-बूझ और नेक विचार वाले आदमी समाज में बहुत कम होते हैं। भगवान ऐसे ही नेक आदमियों को समाज में भेजा करें।

* * *

अध्याय - 4

जतरा डंडी

जतरा और उनके गीतों को यहाँ रखा गया है। जेठ जतरा और गीत लड़के लड़कियों तथा समाज के लिए काफी महत्व रखता है, उनकी रंगीली दुनिया अपने ढंग की अलग गढ़ी होती है। उत्सव के लिए हरेक के चेहरों में मुस्कान रहती है। ये मयूर की तरह नाचते-गाते मुस्कुराते और जीवन का आनन्द लेते हैं। असल में इन्होंने ही आनन्द से जीना सीखा है। नाच-गान के लिए साथी, ढोल, नगाड़ा और मांदर का होना ही काफी है। ये शाम के समय से रात-भर नाचते-गाते हैं। आनन्द के कारण इनको थकान भी महशूस नहीं होती है। ये जतरे की तैयारी आठ-दस रोज पहले से ही करते हैं। अगर ये रोजी-रोटी के लिए गाँव से बाहर कोड़ा-कलकत्ता, भूटान, आसाम या कहीं भी बाहर गये होते हैं तो वे जतरा के अवसरों में अवश्य ही घर वापस आते हैं।

यहाँ जतरा गाने हैं जो इनके जीवन शैली, संस्कृति, प्रेम और खुशी को प्रदर्शित करती है। गानों के राग, धुन और नाच प्रकृति के वातावरण के अनुसार ही होते हैं। गानों और बाजों के उतराव-चढ़ाव प्रकृति के वातावरण पर ही निर्भर करते हैं।

यहाँ नागपुरी और उराँव जतरा गाने कुल मिलाकर 573 हैं। नाचने-गाने वाले लड़के-लड़कियों के लिए मन लगना स्वाभाविक है। समाज के अन्य लोगों को भी इनकी जानकारी निश्चित रूप से होगी। ये गानों की प्रसंशा करेंगे। भावी पीढ़ी के लिए यह मार्गदर्शक होगा। मैं श्री सोमरा तिर्की डांड़ कन्डेरिया थाना बेड़ो का आभारी हूँ जिन्होंने मुझे सहयोग किया। यह भुलाया नहीं जा सकता है।

जेठ जतरा डंडी

1. धीरे खेलू रे रसिका,
अखेड़ा दिलकाल जाय।
रासे खेलू रे रसिका,
अखेड़ा दिलकाल जाय।

2. केकरा बेटा दुर्जन शाय
झंडा लेले पालाकी में आवै।
रासोली का बेटा दुर्जनशाय
झंडा लेले पालाकी माँ आवै।।

3. भौंरो पांडे गणपात साय,
धीरे-धीरे राजी के मारै।
सांभइर लेबे भौंरो पांड़े,
धीरे-धीरे राजी के मारै।।

4. काहे रे अम्बा झरिया,
बसाल जाय।
चारों बारी रे बरांडो,
काहे रे अम्बा झरिया, बसाल जाय।।

5. बइनी लेखे दुलारो,
कहाँ पईबे गोपीनाथ राजा।
एके गोटा बईनी,
कहाँ पईबे गोपीनाथ राजा।।

6. सिरिम सीटा भेजोली के,
देखे दे हो बरोया राजा।

7. सपारू रे रसिका,
छति का चँदवा लवाकते आवै।
नौ जगाले रसिका,
छति का चँदेवा लवकाते आवै।।

8. भला रे धना मोदी,
उड़ाला चरई के मारै।
नौ जगाले धना मोदी,
उड़ाला चरई के मारै।।

9. नौर बली रे नवाड़ी,
बिरहोर के का हवल करैं।
नौ जगाले नवाडी,
बिरहोर के का हवल करैं।।

10. कहाँ पीले कहाँ नाही,
मोरा घारे हतेयर आवै।
छोंड़ी घारे मदा पीयय,
मोरा घारे हतेय आवै।।

11. टोटो रे खटेंगा,
भिंड़ी रोंया का टोपोरी पींधै।
नौं जगाले खटेंगा,
भिंडी रोंया का टोपोरी पींधै।।

12. का देवता मनाले गोपीनाथ,
पालकोटे सहारे सैकड़ों मारै।
सतखंडी मनाले गोपीनाथ
पालकोटे सहारे सैकड़ों मारै।।

13. मैना कड़ारू चोरी गेला,
पांचों भईया रे गुनाईन करैं।
सिलीजोना घाटीमा उताराला,
पांचों भईया रे गुनाईन करैं।।

14. गंगा नहाय गेले राजा,
ढाला तरवाइर राजा विसइर गेले।
आधो ना रती हो राजा,
ढाला तलवाइर राजा विसइर गेले।।

15. कंदिड़या रे मांदरी,
खोरी मां मुनगा झबराल जाय।
नौ जगाले मांदरी,
खोरी मां मुनगा झबराल जाय।।

16. हय चंपा फुली गेला
बिंरिदा बाने।
हय चंपा तोखा केरन,
बिंरिदा बाने।।

17. सदा गड़िया भईया रे,
लीला घोड़ा बंबेकल जाय।
नौ जगाले भईया रे,
लीला घोड़ा बंबेकल जाय।।

18. टीटू रे खांटेगा,
मदागोड़ी के का लगिन मारै।
खांटेगा डांड़े,
मदागोड़ी के का लगिन मारै।।

19. केकरा घोड़िया,
केकरा घोड़िया दुबा घांस जनामय।
राजा का घोड़िया,
राजा का बरिया दुबा घांस जनामय।।

20. कहाँ गेले हो पेलो कोटवार,
धांगोड़ीन रूसाला जाय।
कोड़ा गेले हो पेलो कोटवार,
धांगोड़ीन रूसाला जाय।।

21. मोरोसिली रे मदगामा,
भली चपा ले हरिण के मारै।
नौ जगाले मदगामा,
भली चपाले हरिण के मारै।।

22. लूकाले छिपाले,
रहाले बिरिंदा बाने।
बापा का परिया,
रहाले बिरिंदा बाने।।

23. केकरा भरिया,
राहे धीरे-धीरे लोराते आवै।
राजा का भरिया,
राहे मां धीरे-धीरे लोराते आवै।।

24. सिलागमी रे दराची,
भले भेला हो बेयासी डांड़े।
नौ जगाले दराची,
भले भेला हो बेयासी डांड़े।।

25. झाडा का बेनेया,
जातेरा डांड़े हिलाते आवैं।
नौ जगा ले बेनेया,
जातेरा डांड़े हिलाते आवैं।।

26. गांडा रे गंजाडी,
गोदो ले ले कुदाते आवे।
बाजेड़ा टोंका गंजाड़ी
गोदोन हिलाते आवे।।

27. लेंडो रे लोंडरी,
गड़ा गंजाड़ी छुटाल जाय।
नौ जगाले लोंडरी,
गड़ा गंजाड़ी छुटाल जाय।।

28. बारा बछारे जनी सीकार,
जानी का मुड़े पगारी बांधै।
नौ जगाले जनी सिकार,
जनी के मुड़े पगारी बांधै।।

29. हरियारा छातर धारू रे,
गोपी नाथ राजा।
छोटे लाल माझिला,
धारू रे गोपीनाथ राजा।।

30. पांचों भईया का बाहिन,
चाली गेला हो जोगियर सांगे।
नौ जगाले भइया का बाहिन,
चाली गेला हो जोगियार सांगे।।

31. सपारू रे तेलेंगा,
छति का चंदवा लवकते आवैं।
नौ जगाले तेलेंगा,
छति का चंदवा लवकते आवैं।।

32. सपारू रे जरिया,
कबेरा झंड़ा लूटाल जाय।
बरोय पाड़हा जरिया,
कबेरा झंड़ा लूटाल जाय।।

33. बरोया राजा,
बरा तारे हो गोली चालै।
बरा के मार हटाले,
बरा तारे हो गोली चालै।।

34. सिरिम सीटा भेजोली के,
देखे दे हो बरोया राजा।
नवा कनेया भेजोली के,
देखे दे हो बरोया राजा।।

35. बइनी लेखे दुलारो,
कहाँ पईबे गोपीनाथ राजा।
एके गोटा बईनी कहाँ पईवे,
गोपी नाथ राजा।।

36. रंकूजल हाथी उपारे,
हिरा राजा बइनी के मारै
एके गोटा बईनी,
हिरा राजा बइनी के मारै।।

37. बइनी पोसाल मैना,
कहे मैना रूसाल जाय।
एके गोटा बइनी,
कहे मैना रूसाल जाय।।

38. सुरूगुजा राजा,
कइसे हो जोगी भेला।
नौ जगाले राजा,
कइसे हो जोगी भेला।।

39. एके गोटा पउधा मां
हरि गेला नोकोरी मां।
बेटा तोरा जवानी,
हरि गेला नोकोरी मां।।

40. बईनी रोपल अम्बा,
कहे अम्बा झोलोरी खेलैं।
एके गोटा बइनी,
कहे बइनी झोलोरी खेलै।।

41. अहिरा रे महिरा,
गईया मां ठराकी टांगे।
नाम जगाले अहिरा,
गईया मां ठराकी टांगे।।

42. डुरियर के पुरियर के,
मारू रे खंटेगा डाँड़े।
नौ जगाले डुरियर के,
मारू रे खंटेगा डांड़े।।

43. बिसाही के भूतही के,
मारू रे खंटेगा डांड़े।
नौ जगाले बिसाही के
मारू रे खंटेगा डांड़े।।

44. कहे रे अम्बा झरिया,
धसाला जाय।
चारियो कोना बारी रे बरांडों,
कहे रे अम्बा झरिया धसाला जाय।।

45. दोंय तो राजा बऊराले,
सावन-भादो सिकारो खेलैं।
आधो ना राति बऊराले,
सावन-भादो सिकारो खेलै।।

46. का दुःखे राजा मर गेला,
बादारी लेखे बजना बजै।
दुःखे-सुखे राजा मर गेला,
बादारी लेखे बजना बजै।।

47. पिंजिरा का दिया निझि गेला, भरांडो डांड़े,
ले चलू तुको दिघिया।
पिंजिरा का दिया, निझि गेला, बरांडो डांड़े
ले चलू तुको दिघिया।।

48. हाथी के सिंगार करू राजा,
घोड़ा के रहे देऊ।
तुरियाम्बा-भरांडो डांडे,
घोड़ा के रहे देऊ।।

49. झंडा लागिन सिलागमि तुरी,
बिचे खोरी लेन्डो के मारै।
झंडा लूटले थइला टांगले,
थैला का रेशेम इड़ी भरी सोभे।।

50. हूका जे पियाय सोबरान साय,
टिकोली घोड़ो नाचाने आवै।
नौ जगाले सोबरान साय,
टिकोली घोड़ो नाचाते आवैं।।

51. पानी देगे आयो, पानी दे गे,
रसिका आयो प्यासे आवैं।
अधो न रति पानी दे गे,
रसिका आयो प्यासे आवे।।

52. हाथी रे केना भीठा नगेड़ा,
भईया चढ़ि होले भोलाय देबे।
भईया जे जिरी-हिरी खेलै,
भईया चढ़ि होले मोलाय देबे।।

53. कैरो ठाकुर के भईया मारै,
हरे राजी टुवारो भेला।
नौ जगाले ठाकुर मारै,
है रे राजी टुवारो भेला।।

54. धीरे बजाऊ रे मन्दरिया,
अखेड़ा दिलकाय जाय।
रासे बजाऊ रे मंदेरिया,
अखेड़ा दिलकाल जाय।।

55. खेलू खेलू रे रासीका,
पेटा का पानी रे न डोले देबे।
पेटा का पानी रे, सोना पानी,
पेटा का पानी रे न डोले देबे।।

56. के कारा राजी रे, लंगा योगी,
के कारा राजी रे, झंडा गड़ाया।
राजा का राजी रे, लंगा योगी,
राजा का राजी रे, राजा झंडा गड़ाय।।

57. कोन महीना गे नायो,
सोने सन करा पानी गिराल जाला।
चैत महीना गे नायो,
सोने सन करा पानी गिराल जाला।।

58. पी पियु राजा,
दूधा का छली लेखे कुइंया का पानी।
अधो राती राजा,
दुधा का छली लेखे कुइंया का पानी।।

59. हे काशीर बड़ाइक,
पखेना का बांध बंधाले मछारी का लोभे।
नौ जगाले कासीर बड़ाइक,
पखेना का बांध बंधाले मछारी का लोभे।।

60. ममी के मति मारू ममा,
बारेजन सुनू।
मामी के कोरा बरी लरिका,
मामी के मति मारू ममा, बारेजन सुनू।।

61. के अम्बा रोपय,
डिहारे तरे अम्बा रोपय, भले रे शोभय।
भइया अम्बा रोपय,
डिहारे तरे भले रे शोभय।।

62. बम्दा दुवारे राजा,
नौ सै भारिया थकाल जाला।
डेरा करू बसा करू,
नौ सै भारिया थकाल जाला।।

63. हरियारा देवान,
घोड़ा हाथी मोलायो देबे।
घोड़ा हाथी सै रूपैया,
घोड़ा हाथी मोलायो देबे।।

64. हे नुयाँ नैको,
बिरी में कै दिना राही।
बिरी में हजारो रूपैया,
बिरी में कै दिना राही।।

65. जशपुरिया नागापुरिया,
छोटे-छोटे पागरी बर्धे।
कहाँ पइबे रूवा सूता,
छोटे-छोटे पागरी बर्धे।।

66. अमालू घोड़ा के,
लेचालू हीरा राजा।
सोन बिलै दशाई डांड़े,
ले चालू हीरा राजा।।

67. कुवांर भइया के उपारे,
दीलय-दलय बकोली टैंइया।
कहां पइबे धंगोडिन,
दीलय-दलय बकोली टैंइया।।

68. हे धनूलाल,
धनु का ओरी तरे गुनानी कारय।
धनू का ओरी तरे सै रूपैया,
धनू का ओरी तरे गुनानी कारय।।

69. हैरे नया उबारो,
हृदय बासला कंनिया बेराला जाला।
हृदय बासला कंनिया सै रूपैया,
हृदय बासला कंनिया, बेराला जाला।।

70. नायो गे दुलारो,
का जनाम देले गे नायो।
छोटे में टुवारो,
का जनाम देले गे नायो।।

71. का जनम देले भगवान,
कलापी कलापी जीना चालय।
छोंड़ी जनम देले भगवान,
कलापी कलापी जिना चालय।।

72. कै अम्बा रोपाले राजा,
तीन कोरी अम्बा जागीर भेला।
सै अम्बा रोपाले राजा,
तीन कोरी अम्बा जागीर भेला।।

73. खिरकी दुवारे घोड़ा दौड़य,
लाखो महातो।
राजा घरे नौ जगाले,
खिड़की दुवारे घोड़ा दौड़य लाखो महतो।।

74. का बाते हराले राजा,
बेटा तोरा तरवरी सोटाय।
बाते-चीते हराले राजा,
बेटा तोरा तरवरी सोटाय।।

75. कोन देशे दियाले गे नायो,
नाहि दिशे नैयहारो देशा।
दूरा देशे दियाले गे नायो,
नाहि दिशे नैयहारो देशा।।

76. के रे पोसला मैना,
बेटा पुतौव लेखे सोभय।
नायो पोसला मैना,
बेटा पुतौव लेखे सोभय।।

77. बार पाके पीपर पाके,
सालो रे सुगा-मैना, रे चेरे-बेरे,
सलो सुगा मितान जोयर,
सालो रे सुगा-मैना, रे चेरे-बेरे।।

78. बशुवा का डांड़ी घाटे,
केंवरा का बगैचा लागाया।
चलू संवारो फूला लोरे,
बशुवा का डांड़ी घाटे, केंवरा का बगैचा लगाय।

79. सिन्दवारी बुदा तारे,
बालका लारिका कांदय।
डिंडा छोंड़ी नवां जनम,
सिन्दवारी बुदा तारे, बालका लारिका कांदय।।

80. डिंडा समय एड़ी धमाकय,
एके गोटा बेटा जनामय लोयोरो भेला।
बड़े दुखे बेटा जनामय,
दुखे-सुखे बेटी जनामय, लोयोरा भेला।।

81. हला-हला रे कोरोंजिया,
सिंगारला रे मेंजूरा के माराय।
नाम जगाले कोरोंजिया,
सिंगरला रे मेंजूरा के मारय।।

82. खंड़सुतिया बशु परेधाने,
आवे तो हारला जाअला।
धीरे-धीरे भैंसी मोलय,
आवे तो हारला जाअला।।

83. झका-माका रंथा चालय,
बरा तारे छेकाला जाला।
पूजा कारू रे देवघरिया,
बरा तारे छेकाल जाला।।

84. बरिसो रे कारी बदरिया,
बरिसो रे का बिलम्ब कारय।
मनावा का लोरा पानी चुवाय,
बरिसो रे का बिलम्ब करै।।

85. केकारा गोला बरेदा,
खीरा लरंग के लम्बुराते आवाय।
राजा का गोला बरेदा,
खीरा लरंग के लम्बुराते आवाय।।

86. खूटा उपारे खुड़िया धान पाकाय,
चलु संवारो बारवे राजी।
नाम जगाले खुड़िया धान पाकाय,
चलु संवारो बारवे राजी।।

87. काहे रे अम्बा,
झरिया में धासला जाला।
चारियो कोने झबारला डारी,
काहे रे अम्बा झरिया में घासला जाला।।

88. काहे रे कौवा सम्बलपुरे निन्दा आवाय,
भरी नगापुरे निन्दा नहीं आवाय।
भरी नगापुरे निन्दा नहीं आवाय,
काहे रे कौवा सम्बलपुरे निन्दा आवाय।।

89. बला छपारे केंवरा रोपाय,
सैयो केंवरा झबारला डारी।
सावन-भादो केंवरा रोपय,
सैयो केंवरा झबारला डारी।।

90. छेछारी देवान का बेटा,
हीरा धारू हो, गाबर के मारय।
नाम जगाले देवान का बेटा,
हीरा धारू हो गाबर के मारय।।

91. का कुटुर-कुटुर नायो गे,
तुम्बा का पानी ढराकला जाला।
प्रसा कुटुर-कुटुर नायो गे,
तुम्बा का पानी ढराकला जाला।।

92. काहे अम्बा धूलू रे मुलू,
काहे अम्बा नेवराला डारी रे।
जेकरो घरे बाढ़ाला बेटिया,
तहीं अम्बा नेवराला डाली रे।।

93. का लगिन देवरा मना तोरा कुमलाय,
मका लगिन मना सुखी गेला रे।
भूखे रे देवरा मना तोरा कुमलाय,
पिया से मना सुखी गेला रे।।

94. आयो पोसल मिंजूरा, बबा पोसल मिंजूरा,
से मिंजूरा बना चाइल गेला हो।
न मिंजूरा अन्न खाय, न मिंजूरा पानी पिये,
पंखी डोलते बना चाढ़य।

95. काहां से आबय कांसा रे बाकोला,
बांसा उपारे बैसय रे।
पूरबे से आवाय कांसा रे बाकोला
बांसा उपारे बैसय रे।।

उराँव जानने वालों के लिए कुँड़ुख़ में जेठ जतरा डंडी

1. गोबारी गड्डी नू हिनिवा चिंखा लागी,
पइरी बीरी गड्डी नू हिनिवा चिंख़ा लागी।
कल पेलो एररं बरकोय,
हिनिवा चिंख़ा लागी।।

2. पोन्डो चिटिख़ा भगिना,
मुनू झारा लेखा लागी।
तुम्बा नू पेसा भगिना,
मुनू झारा लेखा लागी।।

3. लेन्डो लुंडरी एंदेर भईया,
गुड़ूलू अनेम र'ई।
लेन्डो लुंडरी कोदय कसा केरा,
गुड़ूलू अनेम र'ई।।

4. एरा गे छम-छमारदी,
भूरा बारी कोदय र'ई।
पईरी बीरी छम-छमारदी,
भूरा बारी कोदय र'ई।।

5. ओनोय-मोंख़ोय मोख़ागे,
ननर चाली अम्बोय काला।
मांख़ा बीरी मोंखारो,
ननर चाली अम्बोय काला।।

6. उया कालोय हो भगिना,
आडो खोरी नू मेना लागी।
पइरी बारी हो भगिना,
आडो खोरी नू मेना लागी।।

7. डहू लवा कला हो भगिना,
बारिका इंजो हो अनेम र'ई।
पइरी बीरी कला हो भगिना।
बारिका इंजो हो अनेम र'ई।।

8. जिनो धरे नाले मरेचा,
नमागे उया कालोय।
पेलो धरे नाले मरेचा,
नमागे उया कालोय।।

9. पुरयो पेलो गे,
भुरीयो कमर चिया भईया, निगागे धर्म लगो।
बन बरहा लवागे,
भुरीयो कमर चिया भईया, निगागे धर्म लगो।।

10. खंटेगा पेलो गे,
खटोला कमार चिया भईया निंग्गागे धरम लागो।
पईरी बीरी कमार चिया भईया,
निंग्गागे धरम लागो।।

11. ख़ड़ेनता इंजो कोय,
किलकिला लवा लागी।
कला पेलो एरा गे
किलकिला लवा लागी।।

12. सत बेड़हा मनन् कन चापरा लवा लागी,
कला भाइया एरा गे।
कला भाइया एरा गे,
कनचापारा लवा लागी।।

13. अम्बा रसआ पेला भईया,
नदी नारा बिलिचा लागी।
पईरी बीरी अम्बा रसआ,
नदी नारा बिलिचा लागी।।

14. नलू-मालू तिला पाडू
घोड़ो मेय्या अरेगा लागी।
खेखेल किय्या पेलो र'ई,
घोड़ो मेय्या अरेगा लागी।।

15. हरे राटा हरे चरखा झला माला,
चलेरा लागी।
महल मा हो जुठन भाइया,
झला माला चलेरा लागी।।

16. नौरबली रे नौरी पेलो,
चितरा माकन ढेका तुरू लवचा।
टंगरा चुंज्जा केरा ता,
चितरा माकन ढेका तुरू लवचा।।

17. एका लेखा सुन्दर भाईया,
भूंड़ि वियन बिंड़ियो कामोय।
सोना लेखा सुन्दर भाईया,
भूंड़ि वियन बिंड़ियो कामोय।।

18. एका लेखा लन्डी पेलो,
भंडि लेखा बिंड़ियो र'ई।
पइरी बीरी लन्डी पेलो,
भंडि लेखा बिंड़ियो र'ई।

19. एका पेलो डन्डी पाड़ी,
कोमड़ख़ा मन्ने नू र'ई।
पइरी बीरी रिझर दी,
कोमड़ख़ा मन्ने नू र'ई।।

20. भेजा बेचागे रिझरदी,
किचिरी चढेरआ लागी।
पइरी बीरी रिझरदी,
किचिरी चढेरआ लागी।।

21. नम जूरतू बर'ई कोय
चिरा चिलपी बिलिचा लागी।
पइरी बीरी बर'ई कोय,
चिरा चिलपी बिलिचा लागी।।

22. बिसु सिकार बरा लागी,
तेला ढमिसन कमआ को पाडू।
बन बरहा लवा गे,
तेला ढमिसम कमा को पाडू।।

23. टोटो रे खांटेगा,
भिड़ी रोंया गहि टोपोरी अतनार।
नौ जगाले खंटेगा,
भिड़ी रोंया गहि टोपोरी अतनार।।

24. भाला रे सुसई गोजड़ा,
बियरख़ो दाहा ईंजो के मारै।
नौ जगाले सुसई गोजड़ा,
बियरख़ो दाहा ईंजो के मारै।।

25. मन्न आरगा पोलदी कोय,
कोमड़ख़ा डहुड़ा मंज्जा।
पइरी बीरी पोलदी कोय,
कोमड़ख़ा डहुड़ा मंज्जा।।

26. कोमड़ख़न मेन एरोय
जिया सालो।
कोमड़ ख़न मेन एरोय,
कोच्छा कमोय कोय, हे चेंड़ा पेलो।

27. असन कादी इसन बरदी
हया निंग्गा मल्ला कोय पेलो।
असन कादी इसन बरदी
हया निंग्गा मल्ला कोय पेलो।।

28. टोंड़सी गे ख़ादा,
पईरिम को रूसी मानी।
कोमड़ख़ा तोखा गे,
पईरिम को रूसी मानी।।

29. ओना-**मोख़ा** गे मला ता,
संगे **बेचागे** बराके बा'अदन।
जतरा पइरी मल्ला ता,
संगे बेचागे बराके बा'अदन।।

30. बोलो बारी उइया कादय,
हिलो-डोलो अम्बा के माना।
चाला टोंका उइया कादय,
हिलो-डोलो अम्बा के माना।।

31. हाबेड़ा गड्डी नू,
नागीन बोट चलेरा लागी।
गुचा भईया एरा गे,
नागीन बोट चलेरा लागी।।

32. उया ख़ोसा गे पोलोदय,
भेजा बेचागे रिझिरा लगदय।
पइरी बीरी पोलोदय,
भेजा बेचागे रिझिरा लगदय।।

33. कला गुइरे अडो बिछरा,
हरे बीड़ी अरेगा लागी।
पईरी बीरी अडो बिछरा,
हरे बीड़ी अरेगा लागी।।

34. चोआ बरगी चोआ को,
झिलमिल बीड़ी अरेगा लागी।
जतरा पईरी चोआ को,
झिलमिल बीड़ी अरेगा लागी।।

35. हरदी रंगा बीड़ी,
झिली-मिली बीड़ी।
बजा कोहा बीड़ी
झिली-मिली अरेगा बीड़ी।।

36. नूख़र दै कपेर दै,
तेलेंगर बर'आ लागनर।
ख़ोसा पिटा गे भइया रे,
तेलेंगर बर'आ लागनर।।

37. किर्रा भाईया पोलोय काला,
आगे नू टटेख़ा र'ई।
पइरी बीरी पोलोय काला,
आगे नू टटेख़ा र'ई।।

38. किर नंदिया एंदेर कादी,
मला किरोन उढ़ारी कालोन।
पइरी बीरी किर नांदिया
मला किरोन उढ़ारी कालोन।।

39. जैगीन ता जवान,
लवा भईया रे, हेजेड़े मानो।
पईरी बीरी जवान,
लवा भईया रे, हेजेड़े मानो।।

40. कुक निंघैय झकिड़ा
हया निंग्गा मल्ला कोय पेलो।
पईरी बीरी झकिड़ा
हया निंग्गा मल्ला कोय पेलो।।

41. चुंजा बलदी केंसा बलदी,
ने निंगन अगुवा मानो।
रम रमेरदी नलख बीरी,
ने निंगन अगुवा मानो।।

43. घोड़ो मेय्या नैगायो,
कुल्ला तुरू ओहारी मानोय।
रंय-रंय रा बिड़ा लागी,
कुल्ला तुरू ओहारी मानोय।।

44. घोड़ो लेखो अड्डो केरा,
जिया निंधै एका से लागी।
पईरी बीरी अड्डो केरा,
जिया निंधै एका से लागी।।

45. चो भोंग कोय लंडी पेलो,
तेलेंगर कुड्डी तू ला'ओर।
पईरी बीरी लंडी पेलो,
तेलेंगर कुड्डी तू ला'ओर।।

46. पुना खर्रपन उला मंखा,
बाहरी भोंसोड़ी र'ई।
माख़ा बीरी उला मंक्खा,
बाहरी भोंसोड़ी र'ई।।

47. ख़ई ओंदरकै कना ले,
हो'आ भईया रे, सेंदेरा टोंक्का।
पईरी बीरी पुना ले,
हो'आ भईया रे, सेंदेरा टोंक्का।।

48. सतबेड़हा पोजोरकी,
भेजा बेचा पोलोदन बादी।
भेजा बेचो बीरी पोजोरकी,
भेजा बेचा पोलोदन बादी।।

49. उईया खोसा-ख़ोसा गे पोलोदै,
निंगियो-निंब्बार केबा लागनर।
पईरी बीरी बलेदै,
निंगियो-निंब्बार केबा लागनर।।

50. उया-ख़ोसा गे पोलोदय,
भर कुक्क को बागिरका र'ई।
पईरी बीरी पोलोदय,
भर कुक्क को बागिरका र'ई।।

51. पईरी गोटी ख़न्देरदै,
ख़ल्ल निंग्है को मरेचा र'ई।
रिझ्झ धंवदै माख़ा बीरी,
ख़ल्ल निंग्है को मरेचा र'ई।।

52. झरा ओना-ओना कथन कमदै,
ख़ल निंग्है मरेचा र'ई।
पईरी बीरी कथन कमदै,
ख़ल निंग्है मरेचा र'ई।।

53. झरा ओना-ओना गोलन ब'अदै,
निंगदन घाँसी बिसा तईदय।
झरा ओना-ओना बेलन ब'अदै,
निंगदन घाँसी बिसा तईदय।।

54. एका लेखा नैंगय,
निंग्है निंगिदन बिच्चि बीसा तईदय।
पईरी बीरी एका लेखा नैगय,
निंग्है निंगिदन बिच्चि बीसा तईदय।।

55. नेखै तंगदा बिच्चि बीसी,
खुरी-खुरी बरा लागी।
पईरी बीरी बिच्चि बीसी,
खुरी-खुरी बरा लागी।।

56. झरा ओना-ओना कथन कमदै,
बेड़रा तो भईया नरिकै र'ओय।
मांख़ा बीरी कथन कमदै,
बेड़रा तो भईया नरिकै र'ओय।।

57. भेजा बेचा गे रिझिरकी,
अकू जानू बुझुरा लागदी।
डिंडम कोय रंडी मंजकी,
अकू जानू बुझुरा लागदी।।

58. उरूबस गहि तंगेदा,
भले एका भेसे बेसवा मंज्जा।
कोड़ा राजी केरा दरा,
भले एका भेसे बेसवा मंज्जा।।

59. मई कुकोय दुलारो,
डिंडा बारी चजेरा लागी।
सेलेम-सेलेम मना लागी,
डिंडा बारी चजेरा लागी।।

60. अखेड़ा बेचा कादी मई,
आलै निंगन पाड़ेगा लगनाय।
सेलेम-सेलेम मंद्दी मई,
आलै निंगन पाड़ेगा लगनाय।।

61. पुना ख़ई को फुहाड़ी,
चुल्ला कोंड़ा गोबारी र'ई।
पईरी बीरी फुहाड़ी,
चुल्ला कोंड़ा गोबारी र'ई।।

62. निन भाईया बरंगी,
एक बरगी झिका-झोड़ो नादैं।
भेजा बेचो बीरी बरगी,
एक बरगी झिका-झोड़ो नादैं।।

63. हेभेरका मुका भईया,
भले एका से छुटिरा लागी।
उल्ला-मांखा निझिरका,
भले एका से छुटिरा लागी।।

64. काठ गहि घोड़ो गे,
झगेड़ा को जतेरा टोंक्का।
बोबोरो रे बजेड़ा,
झागेड़ा को जतेरा टोंक्का।।

65. पोकोल किचरी रेंवा टंईया,
हरे ताची समय दिम केरा।
जतेरा पईरी किचिरी,
हरे ताची समय दिम केरा।।

66. हरे जोड़ी हरे पांती,
होटो गोंडोरी चिड़िगा लागी।
पईरी बीरी हेटे टेंव, चिड़िगा लागी
हरे जोड़ी चिड़िगा लागी।।

67. केंसोय-बेचोय भेजोली,
अड़ख़ा तोखा नीन अम्बोय काला।
पईरी बीरी भेजोली,
अड़ख़ा तोखा नीन अम्बोय काला।।

68. अम्बा चिंख़ा बोलो अम्बा चिख़ा,
टोंक्की नू बोलो डोम्बारी र'ई।
निंगियो बोलो बिच्चि,
टोंक्की नू बोलो डोम्बारी र'ई।।

69. भिजो बीनको बदी कोय,
घड़ी बिनको अरेगा लागी।
पईरी बीरी बादी कोय,
घड़ी बिनको अरेगा लागी।।

70. निंदर-चांदर बेल्ला आयो,
राजि एरा उरीखा लागी।
छातर धारू बेल्ला आयो,
राजि एरा उरीखा लागी।।

71. रदा चरेखा डिलिवन,
झुका से भईया ही चेंड़ा पेलोन।
सोने केरा ढिलवन,
झुका से भईया ही चेंड़ा पेलोन।।

72. हैरे एंग्है जावा,
जावाद एंग्है ही दसा मांजा।
सेवा हूँ नाना पोल'अन,
जावाद एंग्है ही दसा मांजा।।

73. भंड्डा अम्मन कुम्मोय कोय,
हजारों बान चलेरा लागी।
पईरी बीरी कुम्मोय कोय,
हजारों बान चलेरा लागी।

74. भंड्डा अम्मन कुम्मोय कोय,
हजारों आलर नंजारी नानोर।
पईरी बीरी कुम्मोय कोय,
हजारो आलर नंजारी नानोर।।

75. सोरही चौंवरन धुकदै,
गल्ले निंघहै रोपोड़ो र'ई।
पईरी बीरी धुकदै,
गल्ले निंघहै रोपोड़ो र'ई।।

76. आलै गा खारा सोभदै,
मुका निंग्है लोसोड़ो र'ई।
पेलो गने बेचदै,
मुका निंग्है लोसोड़ो र'ई।

77. पांचो परेगना भईया रे,
राजी नम्हैं बुड़िरा लागी।
अकिल मलेका गे भईया,
राजी नम्हैं बुड़िरा लागी।।

78. जिरी-हिरी बेचेदय,
अड्डो निंग्है एड़ेपा नू र'ई।
पेलो गने बेचदै,
अड्डो निंग्है एड़ेपा नू र'ई।।

79. लिखा-पाढ़ी बलदै,
राजी निंग्है बुड़िरा लागी।
थया मलका गे भईया,
राजी निंग्है बुड़िरा लागी।।

80. अकुन गा खारा केबदय,
पाचोय होले मुगुरा तू ला'ओन।
पईरी बीरी केबदै,
पाचोय होले मुगुरा तू ला'ओन।।

81. हरियारा मैना लेखेर दै,
आलर निंगन पाड़ेगा लागनर।
मोख़ारो पेलोन धरदै,
आलर निंगन पाड़ेगा लागनर।।

82. अकिल मनका मुका गे,
अकु जानू सै अकिल बारो।
पिसा बिदका मुका गे,
अकु जानू सय अकिल बार'ओ।।

83. एंदेर गे काल कटदै,
मुका निंग्है कालकता नू र'ई।
मुका गे काल कटदै,
मुका निंग्है कालकता नू र'ई।

84. पचेदय का पचगी,
पेलो बाती नीन अम्बोय नाना।
समय गा खारा केरा,
पेलो बाती नीन अम्बोय नाना।।

85. पसिंद ननकोय भुच-भुचिया,
ने गुसन भेजा बेचोय।
भेजा बेचा पोलदी,
ने गुसन भेजा बेचोय।।

86. बिजली उइयोय भेजोली,
भेजा बेचा नीन अम्बोय काला।
पईरी बीरी भेजोली,
भेजा बेचा नीन अम्बोय काला।।

87. एरा गे छमछमेरदी,
पल्ले निंग्है सिड़ो र'ई।
बेचा गे छमछमेरदी,
पल्ले निंग्है सिड़ो र'ई।।

88. सलै सेखा बिजला,
ओंदिम खोंदी पोजोरकै र'दै।
पईरी बीरी बिजला,
ओंदिम खोंदी पोजोरकै र'दै।।

89. समय केरका बातन,
अम्बोय तेंग्गा हे जोड़ी पेलो।
समय गा खारा केरा,
अम्बोय तेंग्गा हे जोड़ी पेलो।।

90. सत बेड़हा किचरिन,
ढिलंग नन कोय, हे चेड़ा पेलो।
भेजा बेचा पोलोय,
ढिलंग नन कोय, हे चेड़ा पेलो।

91. हरे-हरे जवान बेटा,
आयो मायन हिरिछा लागदै।
पेलो बातन मेनदै
आयो मायन हिरिछा लागदै।।

92. पचिका समई नू दुगा पाडू,
आगे धरा नू नरिय'आ लागदै।
पईरी बीरी दुगा पाडू,
आगे धरा नू नरिय'आ लागदै।।

93. कोरदै होले कोरा मुसा,
बिलिन तेभोन मुगरा तू ला'ओन।
मांखा बीरी कोरा मुसा,
बिलिन तेभोन मुगरा तू ला'ओन।।

94. है रे एंग्है मैना,
मैनाद एंग्है एकेसन केरा।
दुलारो मैना,
मैनाद एंग्है एकेसन केरा।।

95. सत लरिका मुका,
पच्चो जियन हिरिछा लागी।
मेतस करने पच्चो मुक्का
पच्चो जियन हिरिछा लागी।।

96. हरे-हरे एरखो,
उंदुल माला नासगो बादै।
समई गा खारा केरा,
उंदुल माला नासगो बादै।।

97. मई कुकोय रूनिया बिचमन ख़लनू,
सोनेरा मुदी खतेरा लागी।
पईरी बीरी बिचमन ख़लनू,
सोनेरा मुदी खतेरा लागी।।

98. पार बन्ना धोका-धोका,
पल्ल निंग्है सिड़ो कोय पेलो।
पईरी बीरी धोका-धोका,
पल्ल निंग्है सिड़ो कोय पेलो।।

99. अंबोय केबा ताची-ममू,
किर्रा बेचा एन अम्बोन काला।
पईरी बीरी ताची-ममु,
किर्रा बेचा एन अम्बोन काला।।

100. आयो किबी-किबी बबस हूँ केबदस,
हैयरे एंग्है जिया कोंचोनू र'ई।
आयो होले केबो कोय,
हैयरे एंग्है जिया कोंचोनू र'ई।।

101. अम्बा झरा ओना मेनदै का माला,
राजी निंग्है बुड़िरा लागी।
मंहगी राजी को बर'आ लागी,
राजी कीड़ा अंड़ेसा लगाी।।

102. निंगयो को बोलो सहिया नंज्जा,
ठठेरा बली नू सिंदिरी र'ई।
पईरी बीरी सहिया नंज्जा,
ठठेरा बली नू सिंदिरी र'ई।।

103. अम्बा चिंख़ा बोलो, अम्बा चिख़ा को,
निंगियो को बोलो खोरी कुदा केरा।
पईरी बीरी अम्बा चिंख़ा बोलो,
निंगियो को बोलो बिच्चि बीसा केरा।।

104. तुको पेलो तुकिया दरा चिच्चा,
र'ई माला पेलो गे खरा बिपात मांजा।
जतरा पईरी तुकिया दरा चिच्चा,
र'ई माला पेलो गे खरा बिपात मांजा।।

105. भेजा बेचनुम रिझिरकय,
अड्डो मांनख़ा उलाम र'ई।
जोड़ी पेलो गने रिझिरकय,
अड्डो मांनख़ा उलाम र'ई।।

106. भइर ख़ेबदा झिका चिलपी,
भेजा बेचो बीरी बिलीचा लागी।
पईरी बीरी झिका-चिलपी,
भेजा बेचो बीरी बिलीचा लागी।।

107. हीड़ी बरकोय बन्ना किचिरी पेलो,
निंग्है बिना रिझि मला लागी।
पईरी बीरी झिका-चिलपी,
निंग्है बिना रिझि मला लागी।।

108. अम्बा हेजेड़े अम्बा को,
बड़िन एंग्है ख़ंचेरा लागी।
घाड़िम-घाड़िम बड़िन एंग्हैन धरदै,
अम्बा हेजेड़े अम्बा को, बड़िन एंग्है ख़ंचेरा लागी।।

109. ओंद दाईगो बर दाईगो,
जोंखै गा नतेगा लागनै।
मांखा बीरी बर दाईगो,
जोंखै गा नतेगा लागनै।

110. कुटाम पेलोन उला कोरा चिया,
बाला पैंड़ा ती पोजोरकी र'ई।
जतरा पईरी उलाम कोरा चिया,
बाला पैंड़ा ती पोजोरकी र'ई।

111. छक-छक छतिया बिन्डो पागा,
साड़ी पेलो रिझिरा लागी।
पईरी बीरी बिन्डो पागा
साड़ी पेलो रिझिरा लागी।।

112. निंग्है रेशेम निंग्है फुदना,
एरा ते गुईरे सोकोय मानी।
भेजा बेचो बीरी निंग्है फुदना,
एरा ते गुईरे सोकोय मानी।।

113. जियन नरे-तिरे अम्बा नना भईया,
समय गोटी भेजा बेचोत।
ननतारा अम्बा नना जियन,
समय गोटी भेजा बेचोत।।

114. धीरे-धीरे तोकदै को,
पेलो गे को रिझि मला लागी।
जतरा पईरी तोकदै को,
पेलो गे को रिझि मला लागी।।

115. नीन जोड़ी छुटूरकै,
लाल मुंगन कुड़ोन दरा चि'ओन।
लाल मुंगा मला ता,
लाल मुंगन कुड़ोन दरा चि'ओन।।

116. पाडूस गहि गमेछा,
पेलो मैया लदेरा लागी।
भेजा बेचो बारी गमेछा,
पेलो मैया लदेरा लागी।।

117. भार तोलोंग फुदिना,
एरा-एरा गुइरे जिया दिम साली।
पईरी बीरी फुदिना,
एरा-एरा गुइरे जिया दिम साली।।

118. कोरोंज डहुड़ा निम डहुड़ा,
ला'ओन कोय पेलो रोपोड़ो मानोय।
पईरी बीरी निम डहुड़ा,
ला'ओन कोय पेलो रोपोड़ो मानोय।।

119. झरा ओना, ओना खरा बेकर केबदै
हूदी निंग्है किचिरिन नहियर कालोन।
उल्ला मांख़ा खरा खिदोर नदै,
हूदी निंग्है किचिरिन नहियर कालोन।।

120. निन जोड़ी कोड़ा कादय,
जतेरा बरो होले ने गुसन भेजा बेचोन।
जतेरा गे बरोन कोय पेलो,
ननतारा जिया निंग्है अम्बाके नाना।।

121. निन चाकड़दाली कोड़ा कादै,
ढिबा तइयोय झुटिया ख़ेदोन।
जतेरा गे ढिबा तइके,
ढिबा तइयोय झुटिया ख़ेदोन।।

122. एंग्गा हूँ चिया दादा,
झुबुलू टंइया।
निंग गूसन भेजा बेचोन,
एंग्गा हूँ चिया दादा, झुबुलू टंइया।।

123. चि'आ चम्पा मुद्दि एंग्हैन,
एन्देर-एन्देर ससुराल कालोन।
झरा मल्लाः - गुंडा मल्लाः
एन्देर-एन्देर ससुराल कालोन।।

124. भेजा बेचा बलेदन दादा,
भेजा धरोय का मला।
जतरा पईरी भेजा बेचा बलदेन दादा,
हरे दादा भेजा धरोय का मला।।

125. हू पेलो निंग्हैं का नेखय,
पईरी बीरी डोम्बारी गे काली।
हू चेंड़ा पेलो निंग्हैं का नेखय,
पईरी बीरी डोम्बारी गे काली।।

126. हरे पेलो हराही, बिजा ख़नेम को,
डुम्बारी गे काला लागी।
बिजा ख़नेम हराही,
डुम्बारी गे काला लागी।।

127. तूसा पावेन ती भालू चोचा,
बिन्डो भोंकांती पेलो एरा लगी।
पइरी बीरी गा भालू चोचा,
बिन्डो भोंकांती पेलो एरा लगी।।

गुमला-चैनपुर तरता जतरा डंडी

1. ने लवआ केरा,
गुदूम गुला मुइंया चोचा टोंगारी मइंया।
पेलो लवआ केरा,
गुदूम गुला मुइंया चोचा टोंगारी मइंया।।

2. सेन्देरा कादय भइया कारेगा कादय,
मझी-मझी भइया अम्बके माना।
सेन्देरा टोंका नू खारा मइर मानी,
मझी-मझी भइया अम्बके माना।

3. सेन्देरा अम्बा कला भइया,
पतेड़ा नू ओंटे हूँ मुइंय्या मल्ला।
मुइंया गा केरा,
सोहान पतेड़ा नू ओंटे हूँ मुइंय्या मल्ला।

4. डोल टोंका, पेलो गोहाइर अमके नाना,
डोल टोंका, पेलो गोहाइर।
खरा माइर मानी डोल टोंका पेलो,
गोहाइर अमके नाना।।

5. बिज बीन को ब'अदी का,
घड़ी बिनको आरेगा लागी।
पइरी बीरी ब'अदी का,
बिज बिनको आरेगा लागी।।

6. एकाइय्या कादय घुड़ा,
टोंका नू बादो मेना लागी।
पलामू कादय घुड़ा,
टोंका नू बादो मेना लागी।।

7. एन्देरालो ख़रख़ी कोय पेलो,
बनारी परेता नू सोहोड़ ब'ई।
पकेसा ख़रख़ी कोय पेलो,
बनारी परेता नू सोहोड़ ब'ई।।

8. ख़'ई ओन्दरका पुना कन्नन,
हो'आ भइया रे सेन्देरा टोंका।
बन बरेहा लव'आ गे,
हो'आ भइया सेन्देरा टोंका।।

9. अम्म ओंदोरा कादी का,
रासी चीपा गे लोभोरकी र'अदी।
पइरी बीरी कादी का,
रासी चीपा गे लोभोरकी र'अदी।।

10. फग्गू चन्दो ने ईरिया,
कुल्ला लेखा कोय अरेगा लागी।
फग्गू चन्दो पेलो ईरिया,
कुल्ला लेखा कोय अरेगा लागी।।

11. फग्गू गे हो'आ बरके,
मला होले भोंग्गोन की कालोन।
झरा मल्ला गुन्डा मल्ला
एकासे ससिरेर कालोन।।

12. इदिनन्ता डोल बेचा पोलकन,
हय एंग्है जुड़ीस भरिया केरस।
जुड़ी-जुड़ी बेचा पोलकन,
हय एंग्है जुड़ीस भरिया केरस।।

13. निन एरखो दुलारो,
बेल भरिया निन अम्बोय काला।
बेल भरिया ढिबा चिरिखी,
बेल भरिया निन अम्बोय काला।।

14. आली चेंप बरा लागी कोय,
कुम्बा नू कोर कोय, कोरके बादन।
जियन कायन ला'ओ कोय पेलो,
कुम्बा नू कोर कोय, कोरके बादन।।

15. लोहेरा पेलो एरा तो भइया,
चपुवा मइय्यां धमेसा लागी।
पइरी बारी एरातो भइया,
चपुवा मइय्यां धमेसा लागी।।

16. एकसन र'अदय को भइया,
ओड़ा लेखा ढूरा .गदय।
परेता झुमइर नू र'अदय को भइया,
ठेरे को ओड़ा लेखा ढूरा लगदय।

17. खतरदी होले खतर मदागी,
मला होले एड़ेपा कालोन।
पइरी बीरी खतर मदागी,
मला होले एड़ेपा कालोन।।

18. पाड़ा बेचा को भइयारे मोरा,
पेलो निंग्है कोहिरा लेखा र'ई।
पइरी बीरी भइयारे मोरा,
पेलो निंग्है कोहिरा लेखा र'ई।।

19. रिम-रिम रन बिड़ा लागी,
मदागी पेसा गे र'ई।
पइरी बीरी बिड़ा लागी,
मदागी पेसा गे र'ई।।

20. एकाइय्या कादय घुड़ा,
टोंका नू बादो मेना लागी।
पालामू कादय घुड़ा,
टोंका नू बादो मेना लागी।।

21. एन्देरा लो ख़रख़ी कोय पेलो,
बनारी परेता नू सोहोड़ ब'ई।
पकेसा ख़रख़ी कोय पेलो,
बनारी परेता नू सोहोड़ ब'ई।।

22. ख़ई ओन्दोरका पुना कन्नन,
हो'आ भइयारे सेन्देरा टोंक्का।
लीला माकन लव'आ गे,
होआ भइयारे सेन्देरा टोंक्का।।

23. अम्म ओन्दोरा कादी का,
रसी चिपा गे लोभोरकी र'अदी।
पइरी बीरी कादी का,
रसी चिपा गे लोभोरकी र'अदी।।

24. कोटाम पेलो डांडा उदूर,
उदूर बरवे आरेगा लागी।
ढकेना बीसागे डांडा उदूर,
उदूर बरवे आरेगा लागी।।

25. एन्देर ओड़ा चींखी कोय पेलो,
खुटा मइंय्या छोय पपा ब'ई।
पियो मैना चींख़ी कोय पेलो,
खुटा मइंय्या छोंय पपा ब'ई।

26. चांवरा तो लोंग को घेरा चन्दवा,
एरोन को जोंख़ायो फुलाई निंगहयन।
पइरी बीरी को घेरा चन्दवा,
एरोन को जोंख़ायो फुलाई निंगहयन।।

27. बरदय होले बरा भइया,
परेता मुंज्जा राजीनू र'अदय।
भेजा बेचा गे बरा भइया,
परेता मुंज्जा राजीनू र'अदय।।

28. छोटानागपुर हीरा बरवे,
एन्देर गे बरवे बिरिंग-बिरिंग।
अरखी झरा ती डुबल र'ई,
एन्देर गे बरवे बिरिंग-बिरिंग।।

29. एका पेलो मनेख़ा ख़ापी,
चे'ओलो गड्डी डिपाती हियोरे ब'ई।
चेंडा पेलो मनेख़ा ख़ापी,
चे'ओलो गड्डी डिपाती हियोरे ब'ई।।

30. बरवे धरा नू सुगा लेखा हंकदय,
भइया एंग्है ब'अदी कोय पेलो।
पइरी बीरी सुगा लेखा हंकदय,
भइया एंग्है ब'अदी कोय पेलो।।

31. हे बारोया पाडू,
पोल्लोय पाड़ा बारोया पाडू।
कीड़ा ती नारे मारेकय बारोय पाडू,
पोल्लोय पाड़ा बारोया पाडू।।

32. बांस पहर सपारंग उले,
बदाली मुरेनन मुर्रा लागी।
राजियर सेन्देरा केरार,
बदाली मुरेनन मुर्रा लागी।।

33. एंड़दिम बुझुरो ओय यो अयंगो,
एंग्गा गे रली ख़ेन्दर ची'अय।
पेल्लाय जोंख़य झमरना तोकोनय,
एंग्गागे रली ख़ेन्दर ची'अय।।

34. अना को झड़ी लेबेरे,
धोती निंग्है झोरोगो मानी।
तीनम डेब्बम पेलो धरेदय,
धोती निंग्है झोरोगो मानी।।

35. चानुम-चानुम नैगायो,
बेलर लेखा बेंजेरा लागदय।.
ख़द्दी पइरी नैगायो,
बेलर लेखा बेंजेरा लागदय।।

36. ने ख़दरो बरेदर का,
काड़ेमानू मुरूली र'ई।
बबु तम्बस बरेदस का,
काड़ेमानू मुरूली र'ई।।

37. एका पेलो मैना पोस'ई,
काड़ेमा नू पिंजिरा र'ई।
चेंड़ा पेलो मैना पोस'ई,
काड़ेमा नू पिंजिरा र'ई।।

38. कंके रालिन ख़ेंदोय नांयग,
पिताली ही रालिन पोल्लोय ख़ेंदा।
रली केरा लोहड़दगा,
पिताली ही रालिन पोल्लोय ख़ेंदा।।

39. हय निंग्है चिरा चिलि पी,
सेरेतेना लवचा कोय पेलो।
तीनम डेब्बम पेलो धरदै,
सेरेतेना लवचा कोय पेलो।।

40. घघेरान्ता चमेरा महतो,
निंगदा पेलो मला र'ई।
निंगीदा उया कालो का,
निंगदा पेलो मला र'ई।।

41. पतर चंगिया छैला पेलो,
ख़ेसेर हेद्दे नू चीलिपी र'ई।
नेकन धर'ओय नेकन अम्बोय,
ख़ेसेर हेद्दे नू चीलिपी र'ई।।

42. दुबर सिंडी बाड़ा मूली,
किर्र एराय कोय बरोया पेलो।
पइरी बीरी बड़ा मूली,
किर्र एराय कोय बरोया पेलो।।

43. कूरकी पुजुरकी कोय... अंगलो,
आंगल की र'अदी।
भेजा बेचा काला गे कूरकी पुजुरकी को आंगलो,
आंगल की र'अदी।।

44. एका लेखा भौंरो पेलो कोय,
अड्डा जगा लग्गो का माला।
काला बरा पाही मानो कोय,
अड्डा जगा लग्गो का माला।।

45. एका लेखा ओन्डोरी मुक्का,
जोंख़ासिन नारेमा लागी।
बेक मलका घोड़ो दाना,
जोंख़ासिन नारेमा लागी।।

46. चींचो बोलो कुन्दुरकय ललु भयारे,
गुडलू बुसऊ नू र'अदय।
पइरी बीरी कुन्दुरकय भइयारे,
गुडलू बुस'ऊ नू र'अदय।।

47. नाम ओन्डोरिन अमके तेंग्गा,
सिम्बी बटागी नू डेरांगो र'ई।
पइरी बीरी अमा के तेंग्गा,
सिम्बी बटागी नू डेरांगो र'ई।।

48. नमा ओंडोरी अरेगा पोल्ली,
कोम'अड़ेख़ा डहुड़ा मंज्जा।
पइरी बीरी अरेगा पोल्ली,
कोम'अड़ेख़ा डहुड़ा मंज्जा।।

49. एन्देर अड़ख़ा पेलो रसाड़ी फोरन,
खुड़ी नू गमा-गमा र'ई।
कोम'अड़ेख़ा पेलो रसाड़ी फोरन,
खुड़ी नू गमा-गमा र'ई।।

50. एन्देर ओड़ा भर्र आना चोच्चा,
घंटो लेख'ओ पलामू केरा।
नाल ओड़ा भर्र आना चोच्चा,
घंटो लेख'ओ पलामू केरा।।

51. डुमरी जागीर कोय बारोया पेलो,
डुमुरी जागीर कोय बरोया पेलो।
डुमरी नाले नू नाल ओड़ा चींखिया,
डुमुरी जागीर कोय बरोया पेलो।।

52. जोड़ी-जोड़ी अड्डो भोंगा,
पटा चूगो बीरी जोंख़ायो चिंख़ा मुही मानदय।
पइरी बीरी अड्डो भोंगा
पटा चूगो बीरी जोंख़ायो चिंख़ा मुही मानदय।।

53. एका उल्ला एख़ा खतेरो,
टेरी-टेरी ओड्डा मांसिया लागी।
पइरी बीरी एख़ा खतेरो,
टेरी-टेरी ओड्डा मांसिया लागी।

54. चो लन्डी चुंज्जा कालय,
हरे बीड़ी आरेगा लागी।
ओन्दा जुनू बबुसिन पाका,
चुंज्जा गे एवं घाड़ी लागो।।

55. पच्चियस का पेलो, पुन्डियस कोय,
घड़ी-घड़ी पेलो नैयहरा कादी।
संया दुलारो जन्म जूगा,
नायों दुलारो पेलो एवं उल्ला रा'ओ।

56. कुम घटी नू हीरा बझेरा,
कला भइया रे हीरा एर्र बारा।
हीरान बीसोंय, पेलो ख़ेंदोय,
कला भइया रे हीरा एर्र बारा।।

57. मुर्रा लगी मुर्रा लागी,
भन्डार कोंड़ा मुर्रा लागी।
कुड्डीन धर'ओय टोंगएन धर'ओय
भन्डार कोंड़ा मुर्रा लागी।।

58. चोतोर बारी बरदन कोय,
ख़ेडन नोड्डय ब'अदन, मिन्दी का माला?
पैरी ना पुतबारी बरदन कोय,
ख़ेडन नोड्डय ब'अदन, मिन्दी का माला?

59. इदिनन्ता पुना बरेखा,
मूक्कोन्दी चोतोर मानी।
किता किचरीन मइय्या कूरय कोय,
मूक्कोन्दी चोतोर मानी।।

60. हरे नाल ओड़ा
इन्ना मला डूर'ओय ता एका'उला ता डूर'ओय?
सावन केरा भादो बरेचा,
इन्ना मला डूर'ओय ता एका'उला ता डूर'ओय?

61. नेका गे उइया कादय,
नेका गे आरेजन नन्दय।
निंग्गयो-निम्बा मला बेन्जोर,
नेका गे आरेजन नन्दय।।

62. चि'ई नासगो गुड़लू पइंचा,
गुड़लू मानो होले कीरत'ओन चि'ओन।
सुन्दर मूती कनयन पाही नना कादन,
गुड़लू मानो होले कीरत'ओन चि'ओन।।

63. हो-हो रे गोली गाया,
गोली गाया किर्रोय का माला?
जोंख़ासिन ठौकम ईरया,
घोड़ो लेख'आ बमकारा बोंग्गा।।

64. कला भइयारे अड्डो बिछिर'आ,
हो'आ भइयारे टोंगरी मइय्या।
पार गंगा उया कालागे,
हो'आ भइयारे टोंगरी मइय्या।।

65. अम्बा चींख़ा बोलो अम्बा ओलेखा,
निंग्गयो को बोलो, झरिया नू बेंज्जेर'आ लागी।
इरिन्डी ही मड़ेवा पुतड़ी ही डहुड़ा
निंग्गयो को बोलो, झरिया नू बेंज्जेर'आ लागी।।

66. सिरासिता नाले नू,
कला धरामे छछेड़ा बेचा।
लिली भूली खैरी कुटीन,
हो'आ धरामे छछेड़ा बेचा।।

67. एका लेखा निंगीड़ी मनी,
निंग्है हेद्दे-हेद्दे नू भेजा बीची।
ताची ममु निंगडी मनी,
निंग्है हेद्दे-हेद्दे नू भेजा बीची।।

68. कोंको डुम्बारी पंज्जा,
बिज्जा ख़नेम पेलो डुम्बारी गे काली।
हू पेलो निंग्है का नेखै,
बिज्जा ख़नेम पेलो डुम्बारी गे काली।।

69. अम्म जुरू बर'ई,
चीरा चिलपी बिलीचा लागी।
पइरी बर'ई का,
चीरा चिलपी बिलीचा लागी।

70. पोक चुरी कोय पेलो,
टेकोली कुड़'आ गे ननेम र'ई।
ननेे मेर खेंदोय कोय पेलो,
टेकोली कुड़'आ गे अनेम र'ई।।

71. एका पेलो कोय मयदेवन,
मय देवन पेलो गे लिली फुदिना रेवां पेंच्छो।
पइरी बीरी एका पेलो कोय मयदेवन,
पेलो गे लिली फुदिना रेवां पेंच्छो।।

72. दुलारो बलारो टटख़ा,
खारा दुलारो खतेरा लागी।
कीड़ा अम्म ओनका बीरी,
खारा दुलारो खतेरा लागी।।

73. टटेख़ा मंजरारा पेलो,
धीरीजा नानय कोय।
कड़ेमा नू बेक मरीचा दोलो कान्तो,
धीरीजा नानय कोय।।

74. एन्देर बाच'अन दई गो,
लई लगाब'अन।
जोंख़य ता जोंख़य लेखेरनय,
एन्देर बाच'अन दई गो, लई लगाब'अन।

75. नीन उरबनी इ'उंद उला केबोय,
पेलो गने बेचोन अरा बर'ओन।
केबोय अरा मन्डी गा चि'ओय,
पेलो गने बेचोन अरा बर'ओन।।

76. निंग्है पाइड़कान पेलो पाड़िया,
पोल्लोय कोय धनामोदी पेलो।
पइरी बीरी धना मोदी पेलो,
पाड़ा पोल्लोय कोय पेलो।।

77. डिन्डा गुटी चिल पिन मंज'ओय,
पिसा कोय पेलो रोपोड़ो मनोय।
पइरी बीरी चिल पिन्न मंज'ओय,
पिसा कोय पेलो रोपोड़ो मनोय।।

78. हलु-मलु तिला पाडू
घोड़ो मैय्या नरि'आ लगदय।
खे़खे़ल किय्या पेलो पाड़ी,
घोड़ो मैय्या नरि'आ लगदय।।

79. पालकोट पेलो को खरा दुलारी,
घोरना हेद्दे नूं बरातो को ब'ई।
पईरी बीरी को खरा दुलारी,
घोरना हेद्दे नूं बरातो को ब'ई।।

80. निंग्गन एरदन एरदन कोय,
मला एथेरदी एक्सन र'अदी।
पद्दानू खूरी नूं एरदन कोय,
मला एथेरदी एक्सन र'अदी।

81. चुंजा केरकी कोय पेलो,
चुंजना अड्डा नूं गुनाइन नन्दी।
झिका-बिटला खलब केरा,
चुंजना अड्डा नूं गुनाइन नन्दी।।

82. एन्देर गे पेलो कबरा खे़रन अरगतादी,
जोंख़र पेल्लर भेजा मला धरनर।
पईरी बीरी भेजा मला धरनर,
अदिगेम पेलो कबरा खे़रन अरगतादी।।

83. कंक गहि घोड़ो नूं,
ने अरगो नेहालू पेलो।
कंक गही घोड़ो नू,
महतोस अरगोस नेहालू पेलो।।

84. बलि कम'आ हो, बलि कम'आ,
पेलो एड़पा डंगलो र'ई।
जोंख़ एड़पा रिंगी चिंगी,
पेल्लो एड़पा डंगलो र'ई।।

85. राजा हो राजा जगरनाथ,
राजी निंग्है नूं लरेका मंज्जा।
निंग्है राजी बुन्डू तमाड़,
राजी निंग्है नूं लरेका मंज्जा।।

86. भौंरोनता गनपत राय,
राजिन धीरे-धीरे पिटतादस।
लोकनाथ साय भइया रे,
राजिन धीरे-धीरे पिटतादस।

87. पचिका समय, समई नू पचागी,
तिरियोन नरिय'आ लागदै।
जतरा पैरी पचागी,
तिरियोन नरिय'आ लागदै।।

88. डन्डा उदुरदै पचागी,
तोलोंग नू फुदिना र'ई।
पचिकै का पचागी,
तोलोंगन घिड़य'आ लागदय।।

89. टंगेरा चुंजा केरन दईगो,
सोराही कुदाव'ई।
पैरी बेरी दुईगो,
सोराही घोड़ो कुदाव'ई।

90. उइया कादै रे,
हिलो-डोलो अम्बाके माना।
लेले बारी उइया कादै
भईया रे हिलो-डोलो अम्बाके माना।।

91. चो दिया बिजिया,
रईमाला तुसा गा बतिया दरा केरा।
पइरी बीरी चो दिया बिजिया,
रई माला तुसा गा बतिया दरा केरा।।

92. अड्डा चाजय भेजोली,
ने गुसन भेजा बेचोय।
भेजा बेचा पोलोदी,
ने गुसन भेजा बेचोय।।

93. हिरा गंगा भईया रे,
नम्हैं दसा ही दसा मांजा।
पांचों भईयर पांचों तरा भईयारे,
नम्हैं दसा ही दसा मांजा।।

94. परेता मईया हकेदन जोड़ी,
ख़ेख़ेल किय्या मिंदीरी का माला?
पईरी बीरी हकेदन जोड़ी,
ख़ेख़ेल किय्या मिंदीरी का माला?

जदुरा गीत

1. जदुर दिना जादुर खेलब माय,
मठा दिना मठा खेलब
तोर माय के भेईज देबे लादुरा
साँझी खान खेलब जादुरा।।

2. जदुरा बेचा-बेचा, किचिरी एंग्है रंगेचा,
मला कालोन दादा, ढिब्बानूम चि'ओय।
मनी अडीनू डली ढिब्बा र'ई,
मला कालोन दादा ढिब्बानू चि'ओय।
जदुरा बेचा-बेचा जोड़ी जोंख़म गाने रितयारन,
मला कालोन दादा ढिब्बानूम चि'ओय।

3. बैरंगी घोड़ो बली गुसन बरेचा,
उला कोरय बा'दन मिन्दी का माला।
घाँसी खोया गे चाला गुसन बा'नर,
उला कोरय बा'दन मिन्दी का मला।।

4. बरै-बरैय बा'दन गडी तरा कादी,
ख़ेबदन धरोन झिका मुद्दीन।
गाड़ी गुसन ईरकन कोय रगा-बगा पार,
बना तुसा गुसन, ईरकान कोय जोरायना बिलिचिया दे।।

5. एका तरा ख़राख़ी कोय, जोड़ी ढाक जोड़ी डम्भा,
एका गुसन मेंदरी कोय, तेहनेने जोड़ा पेंडरे।
पुरूब तरा ख़राख़ी कोय, जोड़ी ढाक जोड़ी डम्भा,
पछिम तरा मेंदरी कोय, तेहनेने जोड़ा पेंडरे।

गुचे कोय एरा कालोत, जोड़ी ढाक जोड़ी डम्भा,
गुचे कोय मेना कालोत, तेहनेने जोड़ा पेंडरे।।

6. नेका-नेका जोंख़र काका होय,
ओन अँगली मुदिन होचर।
ची'ओर होले ची'ओर काका होय,
मला होले तेंगोन चि'आने।।

7. अखेड़ा नू जुरूब-जुरूब बेचनाय,
एड़ेप्पानू ने हूँ माला।
नुंदुल हूँ बेचा माला केरन,
हरे समय काला लगी।

8. हैरे भाला, हैरे भाईयासिन चिनहा पोल्लन,
हैरे भाईयासिन लाखा पोल्लन।
बारोय धारा नू चिनहा पोल्लन,
तेरोय धारा नू लाखा पोल्लन।।

9. कोने पहारे हरिना चारेला,
कोने पहारे मिंजूरा झालकेला।।2।।
बुन्डू पहारे हरिना चारेला,
तमाड़ पहारे मिंजूरा झालकेला।।2।।
जा तो मईया देईख आवे, हरिना चारेला,
जा तो मईया सुईन आवे मिंजूरा झालकेला।।2।।

10. कहाँ केरा झाली मन्देरा रे,
कहाँ केरा रंगल तिरियो।।2।।
बुन्डू केरा झाली मन्देरा रे,
तमाड़ केरा झाली रंगल तिरियो।।2।।

11. कहाँ रे बाजे, जोड़ी नगेरा बाजे,
कहाँ रे बाजे हो तम्बा हूँ ना संखा बाजे।।2।।
बुन्डू बाजे हो, जोड़ी नगेरा बाजे,
तमाड़ बाजे हो, तम्बा हूँ ना संखा बाजे।।2।।
बुन्डू राजा पूजा करे हो, जोड़ी नगेरा बाजे,
तमाड़ राजा दर्शन करे हो, तम्बा हूँ ना संखा बाजे।।2।।

12. रधे-सुगा आयला हरियारा हो,
कोने सुगा आयला पीयरा।
रधे-सोने सुगा आयला, हरियारा हो,
रूपे सुगा आयला पीयरा।
रधे-डारी मा बईसल सुगा, डारी टूट गेल हो,
पाता मा बईसल सुगा पाता झईर गेल।।

13. रधे-कोने गछे लवाकै रति भगजोगनी हो,
कोने राछे लवाकै हरियारा सुगा।
रधे-डांड़े मां पले मईया, लुसुर-लुसा फूल हो,
के तोरा लाईन देत'उ नेडईर खोसा।
राधे-भाई तोरा लाईन देत'उ लुसुर-लुसा फूल हो,
संईया तोरा लाईन देत'उ नेडर खोसा।।

14. जदुर खेलाथिस मइया,
झुटिया नईबाजे ला।
छुछे गोड़े खेला थी दादा,
झुटिया घरे आहे।।

15. जदुर खेले मोहों जावों दादा,
झलिया मिंजूर लेखे सपराल अहि।।2।।
आधो राती मोहों जाबों दादा,

झलिया मिंजूर लेखे सपराल अहि । ।2 । ।

16. जदुर दिना जदुर खेलब मइंया,
मठा दिना मठा खेलब ।
आजू तो रहाबे गे मइंया,
काली तो जबे ससुराइर ।

17. लिपि-लिपि चराई तमान बात बोलेला । ।2 । ।
मारू रे दमेदा चिढ़्ढा मेसा झोर रे । ।2 । ।

18. जोतली नावा जोत, बुनाली गोड़ा धान
सखी रे कुकुरा डाँवारों डाईब देल । ।2 । ।
रोपा तो रोपा भेल, बुना तो सुना भेल,
सखी रे लेवा तो बाकी चईर गेल । ।2 । ।
कैसे पोसब छ'उवा-पुता, कैसे छुटब रीन बरन
सखी रे कुकुरा डाँवारो डाईब देल । ।2 । ।

जदुरा लुझरी

1. के बाबू लाल बाबू रे, दुयो भाई लाले लाले,
कें'उझर कर रानी बड़ा सुन्दर ।
कें'उझर बिहा जायला,
छोट भैया हाथी नूपारे, बड़ भैया घोड़ा ऊपारे ।
कें'उझर कर रानी बड़ सुन्दर,
कें'उझर बिहा जायला । ।

2. कोने डाईर सुतल रे कोयलो,
कोने डाईर जगल रे कोयलो ।

आजू का दिना रे कोयलो, बगीचा कराले सोहान।
अम्बा डाईर सुतल रे कोयलो,
निमा डाईर सुतल रे कोयलो।
आजू का दिना रे कोयलो,
बगीचा करले सोहान।।

3. केंदल ढुठू बईसल रे ढिचिवा,
ननें-नाने हंका पारले।
अधो रति बईसल रे ढिचिवा,
ननें-नाने हंका पारले।
भिनसारे बईसल रे ढिचिवा,
ननें-नाने हंक पारले।।

4. छाक छकिया बिन्डो पगारिया चांदेवा,
झाले सोभै, देख आलों देख आलों।
धनी गोड़े-मुड़े फुला झाबराय,
हिलेला हिलेला मंदरखो डोलेला।
डोलेला डोलेला मंदरखो डोलेला।
हरादिया हरदिया गुलईची हरादिया,
जनम दिया, जनम दिया, मंदरखो जनम दीया।।

5. बनझार पोड़ेला, लंभा छ'उवा डेगेला।
नदी नला सोखेला, पुठी मछर झालकेला।
जा तो मंईया देख आबे लंभा छ'उवा डेगेला।
जा तो मंईया सुईन आबे पुठी मछर झालकेला।।

6. कहांइरियो ददा तेलेंगा,
कहांई रियो ददा मांगेला।
बुन्डू रियो ददा तेलेंगा,

तमाड़ रियो ददा मांगेला।
टिप-टिपो रानी महाला भीतारे
चल जाबे रेदा ठाकुर, धिरे चालबे।
बंगला का रानी बेटी बड़ा रिझवार
किन दे हो ददा झाल मांदरा।।2।।

माठा

1. कुबुस-कुबुस बुढ़िया जे पूछे लागल जातेरा
कहिया बबू लगाउ जातरा - हाय हाय।।2।।
आजू तो एकादशी, कालू तो द्वदशी,
परसु दिना लगाउ जातरा।।2।।

2. कहाँ से सिरिजला, माटी केरा मंदेरा,
कहाँ सिरिजला, माठा खेल - हाल हाय।।2।।
पूरबे सिरिजला माठी केरा मंदेरा
पछिमे सिरिजला माठा खेल।।2।।

3. टोंगरी के तरे-तरे हुदू-हुदू बाँसा - हाय रे,
सैयो बाँसा फेके नाने डाईर - हाय रे।।2।।
से बाँसा काटी काईट मुरली मोय बनालो,
से मुरली ननने बिगल राग, हायरे।।2।।

4. हियो रे हियो बछारू,
काहे हियो पछुवाय।।2।।
ना हियो पछुवाय, ना हियो चारा खाय।।2।।
ना हियो पानी पीये, कहे हियो बैठले तावइर।।2।।

5. बुने बुनालो दैया, एरंडी सरैया - हाय रे,
डांड़े बुना लो लोटनी । ।2 । ।
लोटनी का साग दैया, उलटी-पलाटी - हाय रे,
तोराईया के लगे माया-मोह, हाय रे । ।2 । ।

6. जोड़ी रे रसिका, मति जाबे परादेश,
रसिका मोरी जावे भूखे रे प्यास । ।2 । ।
ना मिले कचा पानी, ना मिले बासी भात,
रसिका मोरी जाबे भूखे रे प्यास । ।2 । ।

7. डंड़ घाटे बुनालों सुरगुजिया,
लालो मइया, फुला तोरे जाय - भला । ।2 । ।
लालो मइया फुला तोरे जाय,
फुला-फुला के तोराबे गे लालो मंइया । ।2 । ।
कंड़ारी के मति भांगबे । ।2 । ।
एका कंड़ार कान तारे, दुइयो कंड़ार खोसा तरे,
तीन कंड़ार सुन्दर, मइंया गे भला । ।2 । ।

8. उबाकला गे मइंया गंगा - जमुना पान,
उबाकला गे किया-सिन्दुर ।
तेल भेला असे - दशे,
सिन्दूरा भेल'उ दुरारे मई, किया भेल डोम्बारी का फूल ।
भला किया भेल डोम्बारी का फूल । ।2 । ।

9. डींडा गे धंगोड़ी, डींडा गे धंगोड़ी,
टंगेरा मा कुटे झमर,
भला टंगेरा मा कूटे झमर-झमर । ।2 । ।
हथा मा अंगोठी, गोड़ा मा धुंगूरा,
टंगेरा मा कूटे झमर-झमर । ।2 । ।

10. छोंड़ी जे कूटै, कांड़ी न दिलकै,
बुढ़िया कूटे भूसा उइड़ गेल । ।2 । ।
बुढ़िया जे कूटे कांड़ी जे दिलकै,
कूटे भूसा उइड़ गेल भला । ।2 । ।

11. एका अम्बा हरियारा, एको अम्बा पियारा,
एको अम्बा सिन्दुरा पहिराय । ।2 । ।
कचा अम्बा कसा लगे, पकल अम्बा मीठा लागे,
पकाल अम्बा बड़ी रे सवाद । ।2 । ।

12. जतेरान ती किरों बिरी मघा पूंप खतेरा,
एरा जोड़ी पेसर ओंदरा, कला जोड़ी पेसर ओंदरा । ।2 । ।
पेसा गा पेसोन जोड़ी, जूठा पूंप ब'ओर,
कला जोड़ी पेसर ओंदरा । ।2 । ।

13. सुरूगुजा राइज राजा, सुरूगुजा देश रे,
सुरूगुजा फूले लाले-लाल, हाय रे भला
सुरूगुजा फूले छातना । ।2 । ।
जा तो गे लालो मंईया,
फूला-फूला के तोरी लानबे, कंड़ारी के मति भांगबे । ।2 । ।

14. मुर्गा बोले नाझो बोले,
पहारो तरे मिंजूर बोले । ।2 । ।
मुर्गा बोले नाझो बोले,
अहर राती बोले, पहर रति बोले,
पहारो तरे मिंजूर बोले, मुर्गा बोले नाझो बोले । ।2 । ।

झूमर

झूमर रसिक के अन्तराल की भावनायें हैं जो सही रूप में प्रफुटित होकर सारे जमीन में प्रगट होकर सुनने वाले के दिल को छूकर उद्‌गार में तहलका मचाती है।

1. रधे हो हो तब कैरोगढ़ सुना भेला,
बंगेला भीतारे रानी कदै, तब कैरोगढ़ सुना भेला।
अना-धना पोड़ी गेल, सोना रूपा दगा देल,
कैरोगढ़ सुना भेला, बंगेला भीतरे रानी कदै।
तब कैरोगढ़ सुना भेला।
राजा हूँ मरी गेल, बंगेला हूँ धंसी गेल,
तब कैरोगढ़ सुना भेला, बंगेला भीतारे रानी कदै,
तब कैरोगढ़ सुना भेला।।

2. राधे हो हो तब मंदोरिया मति आबे भिरे,
लाइग जता'उ झुटिया का ठेसा तब मंदेरिया भाई,
मति आबे भिरे।
लाइग जता'उ झुटिया का ठेसा, तब मंदेरिया भाई,
मति आबे भिरे।।

3. रधे हो हो तब कैसे खेलब आगे-आगे,
आबे भींजला नागेरा नहीं बाजे,
तब कैसे खेलब आगे-आगे।
आगे हूँ ससुर, पीछे हूँ भैंसूर,
तब कैसे खेलब आगे-आगे।
रधे हो हो, तब कैसे खेलब आगे-आगे,
आबो भींजाला नागेरा नहीं बाजे,
तब कैसे खेलब आगे-आगे।।

4. कोन छैला आबे मैना खोजार गोई, अईग लागो,
मैना गेलौ गेलौ गोई गन्दुर सांगे, मैना गेलौ गन्दुर सांगे।
रम छैला आवै मैना खोजार गोई, अईग लागो,
मैना गेलौ गेलौ गोई गन्दुर सांगे, अईग लागो,
मैना गेलौ गेलौ गोई गन्दुर सांगे।
छोट-मोट मैना, मुठा भाईर डंडा गोय, अईग लागो।
मैना गेलौ गोय गन्दुर सांगे। ।2।।

5. छोटे-मोटे अखेरा, मझखोरी अखेरा नहीं दिसै,
बबु छैला छोकरवा नहीं दिसै हो होरे नहीं दिसै,
बबु छैला छोकरवा नहीं दिसै।
लील रंगल गमेछा, मठ रंगल धुतिया नहीं दिसै,
बबु छैला छोकरवा नहीं दिसै, हो होरे छैला छोकरवा नहीं दिसै।।

6. अंगरी का बिछिया गिर पारले ददा, हेराय गेला। ।2।।
अंगारी का बिछिया गिर पारले ददा, हेराय गेल
हाय-हाय कीन दे हो ददा हेराय गेल। ।2।।

7. हो, हो रे, चुहचुहिया बोले, नाझो बोले,
हो होरे मुर्गा बोले नाझो बोले,
पहारो तरे मिंजूर बोले,
अहर रति बोले, पहर रति बोले,
पहारो तरे मिंजूर बोले,
मुर्गा बोले नाझो बोले।।

8. हो होरे कैसे खेलब आगे-आगे,
फुटला मंदेरा नहीं बाजे, तब कैसे खेलब आगे-आगे।
अधो रति खेलब, पहर रति खेलब, कैसे खेलब आगे आगे।
फुटला मंदेरा नहीं बाजे, तब कैसे खेलब आगे-आगे।।

9. रधे, हो हो रे, मैला भेला सारो,

डंडा का लुगवा मैला भेला,
अधा रति भेल, पहर रति भेल,
मैला भेल सारो, डंडा का लुगवा मैला भेल।।

10. राधे हो हो रे के हिका कहाँ जाला,
पुछीला तो चालो नहीं कराला भाई,
के हिका कहाँ जा ला।
आधो राती जाला पहर राती जाला,
के हिका कहाँ जाला,
पुछी ला तो चालो नहीं कराला भाई,
केहिका कहाँ जाला।

11. रूगड़ा के कतई जाड़ लागे जे बन माझे,
रूगड़ा के कतई जाड़ लगे।
बन केरा सराई ढुठू पसंगी लगाय,
उलाटी-पलाटी आईग सेके जे बन माझे,
रूगड़ा के कतई जाड़ लागे।

12. रेलगाड़ी कइसाना सुन्दर,
चालू देखे जाब।।2।।
रेलगाड़ी कइसाना नाकीमान,
चालू देखे जाब।।2।।
भीतारे तो आईग - पानी,
बहारे तो लोहा - लूती
चले लागल बदारी समान,
चालू देखे जाब।
काठा का सजा-बजा, लोहा का चक्का,
चले लागल बदारी समान,
चालू देखे जाब।।

13. राधे काला चि'आ भइया,
छैला सिंगार पेलोन कला चि'आ।
राँची-लोहरदगा झुटिया खेंदागे,
कला चि'आ भइया, छैला सिंगार पेलोन कला चि'आ।।

14. छोटे-मोटे कुड़िया पुरबे द्वार.... हैरे हाय,
तहंय छैला खोलाला कींवार.... हेरे हाय,
तहंय छैला खोलाला कींवार।
एको हथे छैला, ढलारे तलवार, हैरे हाय,
एको हथे छैला, खोलाला कींवार।

15. एका पेलो गहि समय दिम केरा, हैरे हाय,
गंगा नू बिडिंयो बोहारा.... हैरे हाय।
यमुना नू तड़ाकी बोहारा.... हैरे हाय।
चेंड़ा पेलो गहि समय दिम केरा.... हैरे हाय,
गंगा नू बिडिंयो बोहारा..... हैरे हाय,
यमुना नू तड़ाकी बोहारा।

16. राधे हो हो रे ददा, बेचा बलदन ददा,
नदिया-जुरियर लेखा बेचा बलदन ददा।।2।।
धरा-धरा जोंख़र धरा-धरा पेल्लर,
नदिया-जुरियर लेखा, बेचा बलदन।।2।।

17 राधे पोलोय बेद्दा जोड़ी, एग्हैं लेखा,
जोड़ी सीन पोलोय बेद्दा।
राँची-लोहोरदगा जोड़ी बेद्दा कालोय,
पोलोय बेद्दा जुड़ी।
एग्हैं लेखा जोड़ीसीन पोलोय बेद्दा।।

18. राधे सुइंतु पेलो जन्म लंडी,
जोंख़य ही मंड्डिन गीला नंज्जा, तब
आधा मांख़ा नंज्जा तरा मांख़ा नंज्जा,
सुइंतु पेलो जनम लंडी
जोंख़य ही मंड्डीन गीला नंज्जा,
तबं सुइंतु पेलो जन्म लंडी।।

19. हो हो रे ख़ेता ओज्जा बलेन,
तरा ओजेन तरा ढेंकोय मनी,
तब ख़ेता ओज्जा बलेन।
उसस की बरेचस, ढीम दिना लावचस,
ख़ेता ओज्जा बलेन।।

राज गांगपुर-उड़ीसन ता चाजिका
ठड़िका कुँडुख़ डंडी

1. साल भइरता जावां पूपन्
ओन्दा दादा झोकदाय का माला रे
ओन्दा दादा झोकदायदा का माला।

मन लगो झोकए दादा
मन माया मल लगो माला झोके
मन माया म्ल लगो माला झोके।

2. साल भइरत कराम सेवा
दादा होए मेख़ोए का माला रे
दादा होए मेख़ोए का माला।

माया लगो मेख़ोए दादा
मन माया मल लगो माल मेखोए रे
मन माया मल लगो माल मेखोए।

3. एंग्हैंती हाड़ी बेचा बहिन
तोलेंगन तेरेख़ा लगीदी रे
तोलेंगन तेरेख़ा लगीदी।

माला तिरख़ोन दादा भाई रे
निग्घाए हेदे हेदे नू बेचोन रे
निग्घाए संगे संगे नू बेचोन।

4. अम्मु चिकोए मन्डी चिकोए
चांड़ें अखेड़ां का-लोत रे
चांड़ें अखेड़ा का-लोत।

एहाया जोड़ी जोंखस एरा-जोंहा लगदस
चांड़ें अखेड़ा का-लोन रे
चांड़ें अखेड़ा का-लोन।

5. गोला नाडी जनम लंडी
रेचा कमोन ढेलेवा बेचोन
रेचा कमोन ढेलेवा बेचोन।

पएरी बारी जनम लंडी
रेचा कमोन ढेलेवा बेचोन रे
रेचा कमोन ढेलेवा बेचोन।

6. पालगंजा मालगंजा
कुन्दुरिन कबु कमा लगी रे
कुन्दुरिन कबु कमा लगी।

पएरी बारी पालखंजा मालखंजा
कुन्दुरिन कबु कमा लगी रे
कुन्दुरिन कबु कमा लगी।

7. सर्गीपाली नू जातेरा मन्जा
गुचा जोड़ी बेचागे का-लोत रे
गुचा जोड़ी बेचागे का-लोत।

खेर चींखो बिजो बिरी
गुचा जोड़ी एड़ेपा का-लोत रे
गुचा जोड़ी एड़ेपा का-लोत।

8. कालीकताती किचिरी बारचा
कला नेरेख़ो ख़ेन्दा चिया रे
कला नेरेखो ख़ेन्दा चिया।

खेन्दा हुँ ख़ेन्दोन मालाहुं ख़ेन्दोन
नासगो खेल ख़ेन्दोन ब'आ-लगदन रे
नासगो खेल ख़ेन्दोन बा'लगदन।

9. गुमला नू लड़ाई चोंचा
कला भया बाते नानोए -
चीते नानोय।

बाते नानोए चीते नानोए
जानी एरानू लिखोए पढ़ोए रे
जानी नेरानू लिखोए पढ़ोए।

10. पइलकोट नू नाम नेतिया
काला भाया नाम नेरा बरोए रे
काला भाया नाम नेरा बरोए।

पाएरी बारी नाम नेतिया
काला भाया नाम नेरा बरोए रे
काला भाया नाम नेरा बरोए।

11. गाईबोरा बंगेला तालसेरा थाना कोए
निग्है नामे पारबतिया रे,
निग्है नामे पारबतिया।

पाएरीबारी गाईबीरा बंगेला तालसेरा थाना कोए
निग्है नामे पारबतिया रे,
निग्है नामे पारबतिया।

12. रांचीती लोहोरदगा बानापराती सिमडेगा।
गुचाय पेलो कादिन का माला रे,
गुचाय पेलो कदिन का माला।

लाल लाल फीता दया खोसा भइर शोभाय
साइनो पाउडर बिनू शोभाय रे
साइनो पाउडर बिनू शोभाय।

13. कलीकताति बीड़ी नारेगा लागी
जोड़ी कंड़ेसा नाला लागी रे
जोड़ी कंड़ेसा नाला लागी।

ना आयो एरा केरा-ना बाबा एरा केरास
जोड़ी कंड़ेसा नाला लागी रे
जोड़ी कंड़ेसा नाला लागी।

14. किलकिला किजिंर केला ओलेकेरा भाठी रे
माया तुरू उंखियन केरान रे
माया तुरू उंखियन केरान।

रौरकेला किजिंरकेला ओले केरा भाठी रे
माया तुरू उंखियन केरान रे
माया तुरू उंखियन केरान।

15. एका लेखे निगिडी मानी भाया रे
निग्हैं हेदे हेदे नू बीची रे
निग्हैं हेदे हेदे नू बीची।

ताची मामू निगिडी मानी भाया रे
निग्हैं हेदे हेदे नू बीची रे
निग्हैं हेदे हेदे नू बीची।

16. एका तारती लाल कोकरी चींखिया
नेका तारा ठोर तंग्है र'ई रे
नेका तारा ठोर तंग्हैं र'ई।

पुरूब तारती लाल कोकरी चींखिया
पछिम तारा ठोर तंग्हैं र'ई रे
पछिम तारा ठोर तंग्हैं र'ई।

17. एका तारती फाफा पोंक बरचा
मानी पूंपन चरा लागी रे
मानी पूंपन चरा लागी।

पुरूव तारती फाफा पोंक बरचा
मानी पूंपन चरा लागी रे
मानी पूंपन चरा लागी।

18. एका तारती चांटी पोक बरा लगी
परमारे तेरेंम रेसेम मानी रे
परमारे तेरेम रेसेम मानी।

पुरूब तारती चांटी पोक बरा लागी
परमागे तेरेम रेसेम मानी रे
परमागे तेरेम रेसेम मानी।

19. एका तारती पानी कौवा बारचा
तूसा नू डोंगा लगाबचा रे
तूसा नू डोंगा लगाबचा।

पूरूब तारती पाइन कूवा बरचा
तूसा नू डोंगा लगाबचा रे
तूसा नू डोंगा लगाबचा।

20. एका तारती ख़ेल बरालगी माया रे
मैना पेलो बरा लागी रे
मैना पेलो बरा लागी।

पूरूब तारती ख़ेल बरा लागी भाया रे
मैना पेलो बरा लागी रे
मैना पेलो बरा लागी।

21. एका राजी पेलोगे
चिरा चिलिपी मैना जोड़ो रे
चिरा चिलिपी मैना जोड़ो।

बारो राजी पेलोगे

चिरा चिलिपी मैना जोड़ो रे
चिरा चिलिपी मैना जोड़ो।

22. एका पेलो डोरो चोंख़ा केरा
डोरी माइंया नुकूरा लागी रे
डोरी माइंया नुकूरा लागी।

चेंड़ा पेलो डोरी चोंख़ा केरा
डोरी माइंया हिलो डोलो नुकूरा लागी रे
डोरी माइंया हिलो डोलो नुकूरा लागी।

23. एका पेलो कूगा लागी
गल्ले नू लाले र'ई रें
गल्ले नू लाले र'ई।

चेंड़ा पेलो कूगा लागी
गल्ले नू लाले र'ई रे
गल्ले नू लाले र'ई।

24. एका तारती बीड़ी नारेगा लागी
जोड़ी कार्डेसा नाला लागी रे
जोड़ी कार्डेसा नाला लागी।

पूरूब तारती बीड़ी नारेगा लागी
जोड़ी कार्ड़ेसा नाला लागी रे
जोड़ी कार्ड़ेसा नाला लागी।

25. एका पेलो पैसा धारी रे
काड़ेमानू छोनोर ब'ई रे
काड़ेमानू छोनोर ब'ई।

चेंड़ा पेलो पैसा धारी रे
काड़ेमानू छोनोर ब'ई रे
काड़ेमानू छोनोर ब'ई।

26. एका पेलो बीड़ी नूनी
गोटा सहार बिल्ली मानी रे
गोटा सहार बिल्ली मानी।

चेंड़ा पेलो बीड़ी नूनी रे
गोटा सहार बिल्ली मानी रे
गोटा सहार बिल्ली मानी।

27. एका लेखा सुन्दारी पेलो
डाली ढीबन कीरिता लागी रे
डाली ढीबन कीरिता लागी।

जानी जातिया माला बुझार
डाली ढीबन कीरिता लागी रे
डाली ढीबन कीरिता लागी।

28. बंगालता बंगालिन पेलो
चूँजनासा बालेदन ब'ई रें
चूँजनासा बालेदन ब'ई।

हूसानिम केंतेर हूसानिम चालनी
चूँजनासा बालेदन बःई रे
चूँजनासा बालेदन बःई।

29. बेचोन बेचोन बादी पेलो कोए
बेच-दिका जीयन झूलाबादी रे
बेच-दिका जीयन झूलाबादी।

पायरी न पुतबारी बेचोन बेचोन बाची पेलो कोए
बेच-दिका जीयन झूलाबादी रे
बेच-दिका जीयन झूलाबादी।

30. लिया लिया बादी पेलो
लिया देले छौवा खेले रे
लिया देले छौवा खेले।

टूपली/खोंएचा को लिया सिरायो गेल रे
छौवा कान्दे केंहेंर केंहेंर रे
छौवा कान्दे केंहेंर केंहेंर।

31. गेन्दा गेन्दा बादी पेलो कोए
हरियारा गेन्दा बारा लागी रे
हरियारा गेन्दा बारा लागी।

आगड़ माला सागड़ माला केंवरा का लास रे
तोरते खोंसाते गेन्दा मैलाए रे
तोरते खोंसाते गेन्दा मैलाए।

32. तीन लइरका नम्बारी पेलो
डिएडा जोंख़ासिन धारी रे
डिएडा जोंख़ासिन धारी।

निग्गंन माला उइयोन पेलो कोए
हारा भइर मनेखन उइयोन रे
हारा भइर मनेख़न उइयोन।

33. खिलबिरी पूँइदा पेलो कोए
खेंसो पियार लेखे नेथेरा लागी रे
खेंसो पियार लेखे नेथेरा लागी।

आमके तेंग्गाए जोड़ी जोखायो
खेंसो पियार लेखे नेथेरा लागी रे
खेंसो पियार लेखे नेथेर लागी।

34. ठुमुक ठुमा खोसा पेलो
हुदी पेलोन पाही नानोत रे
हुदी पेलोन पाही नानोत।

कालातको भाया मेनेके बारके
चियोर होले पाही नानोत रे
चियोर होले पाही नानोत।

35. माटारता पेलो भाया रे
मटर मुटुर नेरा लागी रे
मटर मुटुर नेरा लागी।

खोड़ीता पेलो भाया रे
रटम रटम बेचा लागी
रटम रटम बेचा लागी।

36. गुच कोए पेलो र'आ निदा कालोत
माला कादन भाया चोतोर मानो रे
माला कादन भाया चोतोर मानो।

सोना लेखे जीया पूँप लेखे किचरी
माला कादन भाया चोतोर मानो रे
माला कादन भाया चोतोर मानो।

37. तिरियो बिरियो पेलो
ने नूला र'ओ रे
ने नूला र'ओ।

कापड़ेंता सिंदरी पेलो
जनम युगा लगीन र'ओ रे
जनम युगा लगीन र'ओ।

38. बागराए खोसराल पेलो
किचिरिन झलेर कुराए रे
किचिरिन झलेर कुराए।

निग्हैं जोड़ी जोंख़ास नेरा जोंहा लगदस
किचिरिन झलेर कुराए रे
किचिरिन झलेर कुराए।

39. सागर माख़ा पेलो बिचिया
नुंगुड़गे नेलेचा लागी रे
नुंगुड़गे नेलेचा लागी।
आयो बाबा केबोर कोड़ोर रे।

40. नीन कोए पेंलो केबेना पेलो
मुनगा चोंखा गे कादी रे
मुनगा चोंखा गे कादी।

हेएर हार पका ला'ओर
कोए जियाकन वेशे लागी रे
कोए जियाकन वेशे लागी।

41. होरमरही पेलो रिंगीचिगी पेलो
नम्हैं पेलो डलांगी र'ई रे
नम्हैं पेलो डलांगी र'ई।

ओन्टे नेकेला मुनु भाई रे
नम्हैं पेलो डलांगी र'ई रे
नम्हैं पेलो डलांगी र'ई।

42. सहरता पेलो भाया रे
लिलि माला फूदेना र'ई रे
लिलि माला फूदेना र'ई।

कीर नेरा बीडीन एरा को
जोड़ी पेलो हिके का माला रे
जोड़ी पेलो हिके का माला।

43. बेंजरना पेलो चिमचिठ र'ई रे
डिंडा पेलो पोटोर र'ई रे
डिंडा पेलो पोटोर र'ई।

बेंजरना पेलो कानछी नजाइर नेरो रे
डिंडा पेलो भारी नजाइर नेरो रे
डिंडा पेलो भारी नजाइर नेरो।

44. एरागे रिंगीचिंगी पेलो भाया रे
कीड़ाती भले सोकोए मानी रे
कीड़ाती भले सोकोए मानी।

कीड़ाति जिड़ी बुटी मूखा
कीड़ाती भले सोकोए मानी रे
कीड़ाती भले सोकोए मानी।

45. इदनता पुना पेलो
डहारिती नानतरा काली रे
डहारिती नानतरा काली।

ऋलातोको भाया कीरिता ओन्दा
मनाबके बुझाबके रे
मनाबके बुझाबके।

46. बरायतो पेलो बेचोत रे
राजी राजी बेचा काओत रे
देशे देशे बेचा काओत।

समय भारी बेचोत रे
राजी राजी बेचा काओत रे
देशे देशे बेचा काओत।

47. निदना बरेखा पेलो
गोड़ खुन्दी चोतोर मानी रे
गोड़ खुन्दी चोतोर मानी।
घुंघुं निग्हैएन जातेना नानाए कोए
पछाली बारेखा र'ई रे
पछाली बारेखा र'ई।

48. हंसा हंसा बादी पेलो कोए
हंसा निंग्है घोरनी र'ई रे
हंसा निंग्है घोरनी र'ई।
हंसा निंगागे रे चरा चियो कोए
हंसा निंग्हैं घोरनी र'ई रे
हंसा निंग्हैं घोरनी र'ई।

49. छोटे एसन डेम्बू पेलो कोए
घड़ी बिनु नरेगा लागी रे
घड़ी बिनु नरेगा लागी।
नरेगा चिया भाया नरेगा चिया रे
देशे देशे नेरा लागी रे
राजी राजी नेरा लागी।

50. निंगदा पेलो माला र'ई रे
एरा एरा जीया सही रे
एरा एरा काया सही।

निंग्गन माला उइयोन कोए
हारा भारी मनख़ा उइयोन रे
हारा भारी मनख़ा उइयोन।

51. अम्मू ओन्दरा कादी पेलो
खाड़ नूला गडरकी र'अदी रे
खाड़ नूला गडरकी र'अदी।

जोड़ी जोख़स क'अस
धीरे धीरे नरेगा लागी रे
धीरे धीरे नरेगा लागी।

52. तारकुला पेलो तारकुटी मना कोए
रीझवर पेलो बरा लागी रे
रीझवर पेलो बरा लागी।

पएरी बारी तारकूला पेलो तारकुटी मानी रे
रीझवर पेलो बरा लागी रे
रीझवर पेलो बरा लागी।

53. एड़ेपानू केबो केबो आयो
अखेड़ानु नमाके के-बा यो
अखेड़ानु अमाके के-बा।

अखेड़ानू जोड़ी जोंखस र'आदस
अखेड़ानु नमाके के-बा यो
अखेड़ानु नमाके के-बा।

54. आयो गे दुलार बलारो
कोन देशे गे आयो कनिया मांगे रे
कोन देशे गे आयो कनिया मांगे।

जीया निग्हैं धीरज नाना भाया रे
भंएसी नागपुरे कनिया मांगे रे
भंएसी नागपुरे कनिया मांगे।

55. अकुन आयो केबोए अकुन आयो कोढ़े
अकुन आयो एक्सन कालोन रे
अकुन आयो एक्सन कालोन।

नुरखोन कि कोड़ा राजी चली कोन यो
निराजीन राजी माल ब'ओन यो
ई देशेन देशे माला ब'ओन।

56. किबिदी रे आयो किबिदी किबिदी
दिनी राती आयो बाबा केबदाए
सगारो राती बाबा केबदाए।

उरूखोन कि कोड़ा राजी चली कलोन यो
ई राजिन राजी माला ब'ओन गो
ई देशेन देशे माला ब'ओन।

57. पुना पुना बारी आयो
बिटिची परमाला बादी यो
बिटिची परमाला बादी।

इदना माला पीखना आयो
खूड़ी डहारे केबा कालोए यो
तूसा डहारे केबा कालोए।

58. आयो बाबा बेंजिका मुक्का
कौवा लेखे मौखरो र'ई रे
कौवा लेखे मोख़रो र'ई।

मानेता बेंजिकन मुक्का
लाले गुँजर पेलो र'ई रे
लाले गुँजर पेलो र'ई।

59. जोंख रावो यो डींगर रावो यो
सोड़ा मंडी नलख़ नानोय रे
सोड़ा मंडी नलख़ नानोय।

सोड़ा मंडी ओनोय पारेता नरगोए
पारेता नु धीरिजा नानोय रे
पारेता नु धीरिजा नानोय।

60. आयो बाबा रानर गे
लाले लाल फीता मांगब रे
लाले लाल फीता मांगब।

नायो मोरी गेलांए बाबा सिराए गेलांए
कहां पार्बी लाले लाल फीता रे
कहां पार्बी लाले लाल फीता।

61. झारा ची तो आयंग झारा ची तो आयंग
झारा चीयोए तबे डांडी पाड़ोन रे
झारा चियोए तबे डांडी पाड़ोन।

नुनुम खेता मुनु झारा
सागर माख़ा डांडी पाड़ोन रे
सागर माख़ा डांडी पाड़ोन।

62. झारा झारा बादी पियो गो
निंग्गागे ने झारा चि'ओर रे
निंग्गागे ने झारा चि'ओर।

भाई मालर बन्धु मलार पियोगो
निंग्गागे ने झारा चि'ओर गो
निंग्गागे ने झारा चि'ओर।

63. समाधी समाधी बदाए भाया रे
नेगाने समाधी नानोए रे
नेगाने समाधी नानोए।

भाई माला बन्धुमाला
नेगाने समाधी नानोए रे
नेगाने समाधी नानोए।

64. कोइलो पहारे समाधी जोराए
कदाय बरदय का माला रे
कदाय बरदय का माला।

उन्दुल केरकन खेर माला पीटियर
न'उलामतिम जनम माला कादन रे
न'उलामतिम जनम माला कादन।

65. झिमिर झिटा चेंप पुइयां लागी
समाधी एन्देर गे चांएदी रे
समाधी एन्देर गे चांएदी।

स्माधिस गे जोड़े मारी कुल्ला
समाधी एन्देर गे चांएदी रे
समाधी एन्देर गे चांएदी।

66. निन भाया खेलनासा बालदए
पेलो निंग्हैं निजीकी र'ई रे
पेलो निंग्हैं निजीकी र'ई।

ची लगो भाया गामेछा किचरी
बनाचिना कुर बेचो रे
रिगिबिगी झपर बेचो।

67. सिरिमाला डोंगा घाटे
नसगो नहियार कादी रे
नसगो नहियार कादी।

डोंगा मइंया अमके अरगा नासगो
डोंगा माया नादरसा बानर रे
डोंगा माया नादरसा बानर।

67. एन्देर गे लालु भाया रे
ख़ेसो बदाली र'ई रे
ख़ेसो बदाली र'ई।

मनुखारिन पीठि बुद्धि ननजा
ख़ेसो बदाली र'ई रे
ख़ेसो बदाली र'ई।

68. नीन को जोंखए साधु र'ओन बचकए
पेलो हेदे हेदे नु मनदाए रे
पेलो हेदे हेदे नु मनदाए।

साधु साधु नामाबा रे
नेलबेन्जा बिजो हेलेरे जातियर धारोर रे
नेलबेन्जा बिजो हेलेरे जातियर धारोर।

69. ख़ेल ख़ेन्दा कादय भाया रे
मुंडा पींडि पींडि कादाए रे
मुंडा पींडि पींडि कादाए।

नामा काला भाया कीरा काला भाया
नदी नारा बेलेचा लागी रे
नदी नारा बेलेचा लागी।

70. बेलासी टाड़ा मुंड़ा नु
ठुडु फूला बगीचा र'ई रे
ठुडु फूला बगीचा र'ई।

कालातोको भाया तोखके ओन्दरके
भइर खोसा पांडारू नानोत रे
भइर खोसा पांडारू नानोत।

71. नागेड़ा चवड़ा नू
जोड़े तेताली र'ई रे
जोड़े तेताली र'ई।
काला तो भाया मेन्के बरके
चि'ओर होले पाही नानोत रे
माला होले माला नानोत।

72. नागेड़ा टोंका नू भाया रे
बीनको बिलिचा लागी रे
बीनको बिलिचा लागी।
पएरी ना पुतवारी भाया रे
बीनको बिलिचा लागी रे
बीनको बिलिचा लागी।

73. कुसारी बटागीनु बन बैंसा कोरचा
दादा होए ने लावा लागी रे
दादा होए ने लावा लागी।
नीन धारोए तीर धनु एन धारोन बन्दूकन
दादा होए ने लावा क'ओर रे
दादा होए ने पीटा क'ओर।

74. सीम्बी बटागी नु
एन्देर ओड़ा चींख़ा लागी रे
एन्देर ओड़ा चींख़ा लागी।
एन्देर ओड़ा चींख़ा का भाया रे
पुना पेलो चींख़ा लागी रे
पुना पेलो चींख़ा लागी।

75. तीसीगा पींडि नू
मानी पोक नखेड़ा र'ई रे
मानी पोक नखेड़ा र'ई।
काला तोको भाया तोख़के नोन्दरके
मानी पोक नखेड़ा र'ई रे
मानी पोक नखेड़ा र'ई।

76. तूसा पाबे नु नेड़ेपा र'ई रे
कनुम बरनुम एरा लागी रे
कनुम बरनुम एरा लागी।
पान बीड़ी चिया एंग्गन होन बचकाए
कनुम बरनुम एरा लागी रे
कनुम बरनुम एरा लागी।

77. किसगी पींड़िनु रे
मानी पोक नरेखा र'ई रे
मानी पोक नरेखा र'ई।
निगिंदर पेलो माला र'ईयो
नेरा नेरा जीया साही रे
नेरा नेरा जीया साही।

78. झिन्तो पटियानु सीन्दरी लागिया
किया नेरो बारी रसरस नानिखोरे
किया नेरो बारी रसरस नानिख।
किया हातले साहीदन पेलो
किया नेरो बारी र'सरस नाचिख रे
किया नेरो बारी र'सरस नाचिख।

79. केंसा टोंका नु कोदे ढेमा ढेमा मोख़ार
गुँडुचा ख़ोया लागी रे
गुँडुचा ख़ोया लागी।
खोयोत नानति झारा बाकोत,
भया बहिन समाधी नानोत रे
भया बहिन समाधी नानोत।

80. गुड्डीनु तूसा ढिप्पा नु
धीरे-धीरे अरेगा लागी रे
रासरासे अरेगा लागी।
छैला जोंखस एरा जोंहा लगदस
धीरे-धीरे अरेगा लागी रे
रासरासे अरेगा लागी।

81. तूसा पाबे नु गुलाची र'ई
गुचा जोड़ी लेवेधोए चियोए रे
गुचा जोड़ी लेवेधोए चियोए।
लेवेधोए चियोए होले
निंग्हैं गने भेजा बेचोन रे
निंग्हैं गने भेजा बेचोन।

82. डिंडा समयनु डंडा नु घुन्सी
हांरे समय काला लागी रे
हांरे समय काला लागी।
पइरी ना पुतबारी डंडा नु घुनसी
हयरे समय काला लागी रे
हयरे समय काला लागी।

83. चाली बाली नू गोंए जोर बाछकन
केवोए का माला रे
केवोए का माला।
केबोन हूँ केबोन माला हूँ केबोन
नेरेखो सखुन मानोए का माला रे
नेरेखो सखुन मानोए का माला।

84. डिंडा नु काड़ेमानुम घुनसी
हांरे समय काला लागी रे
हांरे समय काला लागी।
जिया कानन माला झखेनन आयो
समय कानन झखा लगोन यो
समय कानन झखा लगोन।

85. कूम घाटी नू हीरा बझ्रा
काला भया हीरा नेरा बारा रे
काला भया हीरा नेरा बारा।
हीरा बीसोए मूका खेन्दोए
हीरा मूका नेनुला र'ओ रे
हीरा मूका नेनुला र'ओ।

86. घड़ी घड़ी होवा बारदय
निंग्हैं गुसन माला र'अदन रे
निंग्हैं गुसन माला र'अदन।
निंग्हैं डाली ढीबन हो'आको हेजड़े
निंग्हैं गुसन माला र'अदन रे
निंग्हैं गुसन माला र'अदन।

87. डहारे नू का लगियन
संख घान्ट मेन्देरा लागी रे
पितर घान्ट मेन्देरा लागी।
बेलासी राजीनू पूजा मंज्जा
संख घान्ट मेन्देरा लागी रे
पितर घान्ट मेन्देरा लागी।

88. रान्डी पाचो तगंदा बड़े लंगचंगिया
टोंगरी चढ़ाले हांक दियाए रे
टोंगरी चढ़ाले हांक दियाए।
एको हंक्न हांकाए दुइयो हांकन हांकाए
तीनो हांकन ख़ोसा दिलाकाए रे
तीनो हांकन ख़ोसा दिलाकाए।

89. ख़ाद ख़रन खोख़ा नानय कोए
रीझन आगे तारा नानय रे
रीझन आगे तारा नानय।
पइरी ना पुतबारी ख़ाद ख़रन ख़ोख़ा नानय कोए
रीझन आगे तारा नानय रे
रीझन आगे तारा नानय।

90. ने ख़दररे नासागो बादर
नेग्गांगे नेरेख़ो माना रे
नेग्गांगे नेरेख़ो माना।
र'आगे र'अनर रे
गंगा हेदेनु र'अनर रे
समुदर हेदेनु र'अनर।

91. पाते चोंख़ा केरान दिया
नेन्दोला एक पोकन बाचा रे
नेन्दोला एक पोकन बाचा।
पिसादूर ने रेन दिया
बांडी मुदेर कपारकी र'ई रे
बांडी मुदेर कपारकी र'ई।

92. जोड़ी जोड़ी जामु पंज्जा
गुचा जोड़ी जामु मोख़ा कालोत रे
गुचा जोड़ी जामू मोख़ा कालोत।
जामू मन धसेरा केरा लोड़ोदगा केरा
मूली राजी चलान मंज्जा रे
मूली राजी चलान मंज्जा।

93. देरासिका पाड़ा बेचाको
बीड़ी नरेगा लागी रे
बीड़ी नरेगा लागी।
पइरी बारी पाड़ा बेचाको
बिड़ी नरेगा लागी रे
बिड़ी नरेगा लागी।

94. नेखए नालर झाला फुलारे
मानी बाटकी झिकझोड़ो रे
मानी बाटकी झिकझोड़ो।
नम्हैं नालर झाला फुलारे
मानी बाटकी झिकझोड़ो रे
मानी बाटकी झिकझोड़ो।

95. मानी बीसका ढीबन चांडे चीकोए
माई कड़ारू ख़ेन्दोत रे
माई कड़ारू ख़ेन्दोत।
ख़ेन्दा हूँ ख़ेन्दोत माला हूँ ख़ेन्दोत
दादा हो नेरा बेचागे ख़ेन्दोत रे
दादा हो नेरा बेचागे ख़ेन्दोत।

96. नीन भाया ख़ेल ख़ेन्दा कादए
बन्धा पिंडि पिंडि कादए रे
बन्धा पिंडि पिंडि कादय।
आमा काला भाया कीरीकाला भाया
नदी नारा बिलिंचा लागी रे
नदी नारा बिलिचा लागी।

97. गुचा भाया आड्डो बिछरा पारागांग उइयागे र'ई
उइयागे र'ई भाया रे
डहारेनु पातेड़ा र'ई।
लगे डाइर टूटे खूर लगे पखन फूटे
बेरिया ढराकाला जांएला रे
बेरिया ढराकाला जाएला।

98. छोटे एकन र'अदन दादा,
आम्बोए बीसा रे,
आम्बोए बीसा।
निग्हैं चाली बाली दादा
चुनूज बेचोन रे
केंशोन बेचोन।

99. ओन खंडा कीचिरी गे
काल बइनी नूराखा कलोय रे
काल बैनी नुराखा कलोय।
कीड़ा राजी कलन, तीन पैला नीदोरन
निंग्गन दादा माला निरिकन
निंग्गन दादा माला निरिकन।

100. पांच भाया र'अदर दादा
नोकाए माला बादर निजए माला बादर
नोकाए माला बादर निजए माला बादर
निग्हैं मान तिरू दादा होए
चाली नू निजीकन रे
बाली नू नुकियन।

101. एन्देर डांडी पड़िकन जोड़ी
घड़ी घड़ी हुकुम बारी रे
घड़ी घड़ी हुकुम बारी।
कोड़े डांडी पड़िकए जोड़ी
घड़ी घड़ी हुकुम बारी रे
घड़ी घड़ी हुकुम बारी।

102. गुचा भाया खेल ओंदरा
करमा तारेगे कालो रे
करमा तारेगे कालो।
पएरी ना पुतबारी खेल ओंदरा भाया
कारेमा तारागे कालोत रे
कारेमा तारे कालोत।

103. बेलार ही मठा मइंया
बिल्ली लाघेरा लागी रे
बिल्ली लाघेरा लागी।
कूबा बेलास भले केबस
बिल्ली तेबेरा केरा रे
बिल्ली तेबेरा केरा।

104. नंम्है चाली बाली दादा
कोकोरेचो झलेर रे गेन्दा पुइन्दा रे
कोकोरेचो झलेर रे गेन्दा पुइन्दा ।
पुइन्दा गा लागी भाया रे
नेतोको नावेरे नुएँ रे
नेतोको नावेरे नुएँ।

105. झिमिरझिटा चेंप पुइंया लागी
समादी नेन्देरगे चाईंदी रे
समादी नेन्देरगे चांईंदी।
समाधिस गे जोड़ा भइर कुल्ला
समादो नेन्देर गे चांईदी रे
समादो नेन्देर गे चांईदी।

106. टाठेख़ा मनन बका लावा लागी
सूगा टांयां ख़तेरा लागी रे
सूगा टांयां खतेरा लागी।
काला तोगे भाया पेसके नोन्दोरके
पेलो गे सूगा टांया कामोत रे
पेलो गे सूगा टांया कामोत।

107. बारा तो बहिन बेचोत रे
आयो बाबा नेरागे बारोर रे
आयो बाबा नेरागे बारोर रे
माखानता एरियार
पएरिन्ता नायो बाबा नेरागे बारोर रे
पएरिन्ता नायो बाबा नेरागे बारोर।

108. एंग्गन गा दादा लोशोड़ी बादाए
नान अन्का का माला रे
नान अन्का का माला।
पएरी ना पुतबारी लोशोड़ी बादाय
दादा नान काओन रे
दादा नान काओन।

109. ताची ताची बादाए ब'आ
बोलो र'अदन का कादन रे
बोलो र'अदन का कादन।
नीन मामुगे माने माला बरचा
बोलो कादन का र'अदन रे
बोलो कादन का र'अदन।

110. मामु हो मामु रे
नम्हैं नेड़ान तेलेंगार होनर रे
नम्हैं नेड़ान तेलेंगार होचर।
होवागे चिया भगीना
नम्हैं नेड़ा ढेरे नेखन र'ई रे
नम्हैं नेड़ा ढेरे नेखन र'ई।

111. संगे संगे रहचकन चम्पा माली
निरे डाब मुली चोतोर मान रे
निरे डाब मुली चोतोर मान।
फांगुन चान्दी नेदी
जोड़ी नीन नेकातारा रे
जोड़ी नीन नेकातारा।

112. नेकाया कादी भाया रे
चांडे कीर्रो का माला रे
चांडे कीर्रो का माला।
कीरी हू कीर्रो माला हूँ कीर्रो
जिया निम्हैं धरेजा नाना रे
जिया निम्हैं धरेजा नाना।

113. चेंपादगा पुइंया लागी चालीदगा चोतोर मानी
लेवा ख़ेसन सेवा नानोत रे
लेवा ख़ेसन सेवा नानोत।
लेवा ख़ेस पानी होले
भाया बहिन समाधी नानोत रे
भाया बहिन समाधी नानोत।

114. दादस गा भारी माया नानोस
नसगो कुमाया नानी रे
नसगो कुमाया नानी।
नाड़ा जाघा लागाचित नासगो
निग्धैं चाली नेदुर बारी रे
निग्धैं चाली नेदुर बारी।

115. डिंडा भारी काड़ेमानु घुनसी
हंरे समय काला लागी रे
हंरे समय काला लागी।
जीया कालान माला झकोए
समय कालन झका लागी रे
समय कालन झका लागी।

116. तेताली मूली नू
गरिया बारिया डिबा र'ई रे
गरिया बारिया डिबा र'ई।
नामके तेंग्गागा कुदा मंजोरा गो
लुकायते छपाए पाएबते नानोत रे
लुकायते छापायते नानोत।

117. तेताली मूली नू रे
ढ़िचुआ बाड़ा सुन्दर र'ई रे
ढ़िचुआ बाड़ा सुन्दर र'ई।
जोड़ी पेलो नेरे ढ़िचुआ नेरेन्
ढ़िचुआ बाड़ा सुन्दर र'ई रे
ढ़िचुआ बाड़ा सुन्दर र'ई।

118. तेताली मूली नू रे
एका सुन्दारी पेलो र'ई रे
एका सुन्दारी पेलो र'ई।
जोंख़स हूँ छैला पेलों हूँ छैली।
छैला सुन्दारी पेलो र'ई रे
छैला सुन्दारी पेला र'ई।

119. तेताली मूली नू यो
छैला सुन्दारी पेलो र'ई रे
छैला सुन्दारी पेलो र'ई।
काला तोको भाया मेनके बरके
चियोर होले पाही नानोत रे
माला चियोर होले दोसर बेदोत

120. तेताली मूली नू यो
बिनको बेलेचा लागी रे
बिनको बेलेचा लागी।
सरागे ते नितिया धरती नू उकिया
पेलो नेलेचा लागी रे
पेलो नेलेचा लागी।

121. कांक बेदा केरान झुरी बेदा केरान
हारे नदी छेकेरान केरान रे
हारे नदी छेकेरान केरान
कीया बोहा बचा मइया बेदा केरा
कीया मइया भसियो लगेन रे
कीया मइया भसियो लगेन।

122. डाहू मनन्ता डाहू टेटेंगा
हिलो डोलो नमाके माना रे
हिलो डोलो नमाके माना।
पएरी बारी डाहू टेटेंगा
हिलो डोलो नमाके माना रे
हिलो डोलो नमाके माना।

123. नेड़पा कमा भाया नेड़ेपा कमा भाया
नम्हैं नेड़ेपा बांगला नेड़ेपा रे
नम्हैं नेड़ेपा बांगला नेड़ेपा।
नीन र'ओय खटियानू, नीन र'ओए मचिया
नम्हैं नेड़ेपा बांगला र'ई रे
नम्हैं नेड़ेपा बांगला र'ई।

124. हाय एंग्धार कपार किसमेत
कुकेबारी रांड्डी मन्जन रे
कुकेबारी रांड्डी मन्जन।
फुटाला बासन कांसेरा घरे रे
छूटल जानी माय बापा घरे रे
छूटल जानी माय बापा घरे।

125. नीन भाया रे घुनुसी कामदए
पेलर हेदे हेदे नु र'अदय रे
पेलर हेदे हेदे नु र'अदय।
पेलर ही लोभे घुनुसी कामदय
पेलर हेदे हेदे नु र'अदय रे
पेलर हेदे हेदे नु र'अदय।

126. खूड़ी कूदनागे खोइर बूला बादी आयो
डंडी पड़ेनागे गीतारू बादी यो
डंडी पड़ेनागे गीतारू बादी।
पएरी बारी खोइर बुला बादी आयो
डंडी पड़ेनागे गीतारू बादी यो
डंडी पड़ेनागे गीतारू बादी।

127. एन्देर ओड़ा फुरदिना चोचा
सेमालिनु उकिया
तेतालिन्ती चोचा।
रांची लोहोड़दगा बापू रे जनम जुगा कीर्रो का माला रे
रांची लोहोड़दगा बापू रे जनम जुगा कीर्रो का माला
गुंडुर ओड़ा फुंरदिना चोचा-सेम्बालीनु उकिया रांची लोहरदगा।

128. नेकाया कादए जोड़ी
नुजरोए खतरोएए लाजरोए कीरोए का माला रे
नुजरोए खतरोए-लाजरोए कीरोए का माला।
सासुरेर कादय जोड़ी
नुजरोए खतरोए-लाजरोए कीरोए का माला रे
नुजरोए खतरोए-लाजरोए कीरोए का माला।

129. मेत मल्का एड़ेपा माया
चरियो कोने जोरोमानी रे
चरियो कोने जोरो मानी।
पारता राटाख़मी माला ख़ोयोन यो
चरियो कोने जोरोमानी यो
चरियो कोने जोरोमानी।

130. तेताली मुलीनु भाया
बीनिको बिलिचा लागी रे
बीनिको बिलिचा लागी।
काला तोको भाया नेरके बारके
जोड़ी पेलो हिके का माला रे
जोड़ी पेलो हिके का माला।

131. जोख़ र'ओ डिंगर र'ओ
पेलो डिंगर नामाके र'आ रे
पेलो डिंगर नामाके र'आ।
पेलो डिंगर बड़ा उरांठी।
पेलो डिंगर नामाके र'आ रे
पेलो डिंगर नामाके र'आ।

132. होरमारी एरा एरा बीसकी आयो
एंग्गन आयो बालाकी बीसा रे
एंग्गन आयो बालाकी बीसा।
पूरूब कालके आयो पछिम कालके
एंग्हैं सासुरेर नमाके काला यो
एंग्हैं सासुरेर नमाके काला।

133. इ समय काला लागी रे
दोसर समय कीरो का माला रे
दोसर समय कीरो का माला।
चन्दा सूरजा कीरो रे
मनुशा रे माला कीरो रे
मनुशा रे माला कीरो।

134. छोटे बोड़ा नु ख़ेल ख़ेन्दकए
कोहां परदोए मुका ख़ेन्दोए रे
कोहां परदोए मुका ख़ेन्दोए।
मुका गने नलख नाना को
ख़ेलनू हेबेड़ा चिया रे
ख़ेलनू हेबेड़ा चिया।

135. इदना बेंजराए जोड़ी
बागजुगनी लेखे लेखेरनु बारोए रे
बागजुगनी लेखे लेखेरनु बारोए।
पएरी बारी बेंजरोए जोड़ी
बागजुगनी लेखे लेखेरनु बारोए रे
बागजुगनी लेखे लेखेरनु बारोए।

136. जोड़ी जोड़ी रहचकन जोड़ी
चम्पा माली चोतोर मानी रे
चम्पा माली चोतोर मानी।
अकुनगा जोड़ी बेजेंरकन र'अदय
अकुन गा जोड़ी चाल माला ननदाय रे
अकुन गा जोड़ी चाल माला ननदाय।

137. करम चान्दो नेदान जोड़ी
संगे संगे र'ओत रे
संगे संगे र'ओत।
बेंजाता चान्दो एदोत जोड़ी
नीन एका तरा एन एक तरा रे
नीन एका तरा एन एक तरा।

138. डिंडा समय बड़ा पीरित माया
मुखाना छोड़ाए देबे रे
मुखाना छोड़ाए देबे।
आधा राती बड़ा पीरित माया
मुखाना छोड़ाए देबे रे
मुखाना छोड़ाए देबे।

139. एन्देर गे लोसोर लोसोर दी
एन्देर गे चाल माला नानदी रे
एन्देर गे चाल माला नानदी।
बोंग्गा बुद्धि लोसोर लोसोर दी
एन्देर गे चाल माला नानदी रे
एन्देर गे चाल माला नानदी।

140. खेल खेन्दा कादय भाया रे
बन्धा पिंडी पिंडी कादय रे
बन्धा पिंडी पिंडी कादय।
अमा काला माया रे कीरा काला भाया रे
नदी नारा बेलेचा लागी रे
नदी नारा बेलेचा लागी।

141. जोड़ी जोड़ी र'अचकत
जोड़ी लिखा-पढ़ी बालेदन ब'ओए रे
जोड़ी लिखा-पढ़ी बालेदन ब'ओए।
आकुगा जोड़ी बेजेंरा लगदाय
मने मने लिखा पढ़ी रे
मने मने लिखा पढ़ी।

142. हाय एंग्हैं कपार किसमइत
डिंडा बारी छडारी मंजन रे
डिंडा बारी छडारी मंजन।
राजी दुनिय छडरी मानी
डिंडा बारी छडरी मंजन रे
डिंडा बारी छडरी मंजन।

143. गड्डी ख़लनू भाया कादय
रूनिया डाले चींख़ा लागी रे
रूनिया डाले चींख़ा लागी।
चींख़ा गा लागी भाया रे
गीला नाडो नेलेचा लागी रे
गीला नाडो नेलेचा लागी।

144. एड़ेपा कमा भाया एड़ेपा कमा भाया रे
नम्है नेड़पा बांगला र'ई रे
नम्है नेड़पा बांगला र'ई।
नीन चुतोय पटियानु एन चुतीन खटियानु
नम्है नेड़पा बांगला र'ई रे
नम्है नेड़पा बांगला र'ई।

145. चेंप बरचा चोतोर मंजा
लेवा ख़ेसन सेवा नानोत रे
लेवा ख़ेसन सेवा नानोत।
लेवा खेस पानो हीले
भाया बहिन समाधी नानोत रे
भाया बहिन समाधी नानोत।

146. एन्देर चेंप पुईं एन्देर खड़ नीन्दी
दादा होए नेंगन पार नाना रे
दादा होए नेंगन पार नाना।
एंग्गन पार नानोए होले
संगे संगे भेजा बेचोत रे
संगे संगे भेजा बेचोत।

147. भेजा बेचनागे केवेदी नासगो
भेजा बेचनान माला आम्बोन रे
भेजा बेचनान माला आम्बोन।
केबोर कोड़ोर मांडी चियोर
भेजा बेचनान माला अम्बोन रे
भेजा बेचनान माला अम्बोन।

148. जोड़ी जोड़ी राचकत
चम्पा मूली चोतोर मानी रे
चम्पा मूली चोतोर मानी।
नाकूगा जोड़ी बेंजेंरा लगदय
चम्पा मूली सूना मानो रे
चम्पा मूली सूना मानो।

149. परता मइंया पड़िकन जोड़ी
ख़ेख़ेल किंया मेनेदय का माला रे
ख़ेख़ेल किंया मेनेदय का माला।
मेनागा मेंजकन जोड़ी
तनि निकन झोकागे पोलकन रे
तनि निकन झोकागे पोलकन।

150. मादागी निंग्गन कीर नेराए
नसगो खोसा झुलुरका लेखे लागी रे
नसगो खोसा झुलुरका लेखे लागी।
पएरी बारी कीर नेराए
नसगो खोसा झुलुरका लेखे लागी रे
नसगो खोसा झुलुरका लेखे लागी।

151. खूड़ी नु कुहुड़ कूटा बेचनर
एंग्गन दादा सासुरेर ताइदय रे
एंग्गन दादा सासुरेर ताइदय।
इन्ना माला कादन नेला माला कादन
नेलेबेंजा बीजो होले काओन रे
नेलेबेंजा बीजो होले काओन।

152. खद्दखरन खोखा नाना कोए
रीझन आगे तारा नानाए रे
रीझन आगे तारा नानाए।
पएरी बारी ख़ोख़ा नाना कोए
रीझन आगे तारा नानाए रे
रीझन आगे तारा नानाए।

153. छाई छतर बाड़ा मूली नू
कीचरी कोलेरा लागी रे
कीचरी कोलेरा लागी।
कोलेरा चिया जोड़ी खातेरा चिया रे
नकुन जोड़ी समय दिन केरा रे
नकुन जोड़ी समय दिन केरा।

154. गड्डी ख़लन भगेड़ा नन्जा
दादा होए नुटेका पाटोए रे
दादा होए नुटेका पाटोए।
नुटे पाटोन जीया दुरू केरा पटोए कोए
दादा होए नुटेका पाटोए रे
दादा होए नुटेका पाटोए।

155. साइस सासुर र'आनर गे
नोरेनो कथान तेंग्ग रे
नोरेनो कथान तेंग्ग।

साइस सासुर मलेका
होरे बेकारे लागी रे
होरे बेकारे लागी।

156. पांच भांया न'अदए दादा
कसेरा कुला टयन ख़ेन्दोन रे
कसेरा कुला टयन ख़ेन्दोन।

कुलाटयन माल ख़ेन्दोन दादा
कसेरा कुला टयन ख़ेन्दोन रे
कसेरा कुला टयन ख़ेन्दोन।

157. निंग्है र'अना गुठी दादा
तिखिल दऊड़ा नाधे मानी रे
मंडी काटटू नाधे मानी।

एंग्गन बिसोए होले दादा
चलीनु छाटेका गाड़ोए रे
चलीनु छाटेका गाड़ोए।

158. खूड़ीन्ता जवान खदिस तुंठी वेसे र'आदस
खूटा लेखे निजिके र'आदस रे
खूटा लेखे निजिके र'आदस।

गेच्छान्ता जवान खादीकुला वेशे नेथरदस
तीना डेबा मुटेरा लगदस रे
तीना डेबा मुटेरा लगदस।

159. राजी नु राजी करम मंज्जा
हाय नेंग्गेदा कीचरी गे चोंखी रे
हाय नेंग्गेदा कीचरी गे चोंखी।
आऊर बरना पेठानन बरचीतो बीटीगो
निग्गागे रिंगीचिंगी दउड़ानुम खेदोन रे
निग्गागे रिंगीचिंगी दउड़ानुम खेदोन।

160. नुखुर नुखुर बाना चाखरदी
नुजो बारी नायांगो बा'अदी रे
नुजो बारी नायांगो बा'अदी।
पएरी बारी बाना चाखरदी
नुजो बारी नायांगो बा'अदी रे
नुजो बारी नायांगो बा'अदी।

161. एन्देरगे होने कान्दाए भाटू
मांडी मानोका बेशेमनदाए रे
मांडी मानोका बेशेमनदाए।
कीरा तो भाटू कान्डो नु नुका
कुन्ना मांडी रहाड़ी दाली रे
कुन्ना मांडी रहाड़ी दाली।

162. कोंर जोरिना भगीना
सिंगाराला मेंजुरा के माराए रे
सिंगाराला मेंजुरा के माराए।
पाएरी बारी रीना भगीना
सिंगाराला मेंजुरा के माराए रे
सिंगाराला मेंजुरा के माराए।

163. खेल खेन्दा कादाय दादा
मुंडा तारा किन्दिराला जांएला रे
मुंडा तारा किन्दिराला जांएला।
से मुंडा किन्दिर किन्दिर भरूवा उठाए रे
जानी के चाइर कोड़ा माराए रे
जानी के चाइर कोड़ा माराए।

164. बेंजेरना सिघे ढुकुदिम बेस रे
खरेचा बरेचा माला लागी रे
खरेचा बरेचा माला लागी।
पएरी ना पुतबारी ढुकुदिम बेस रे
खरेचा बरेचा माला लागी रे
खरेचा बरेचा माला लागी।

165. जनम जनम एके जनम
कुके जनम नमाके चिया रे
कुके जनम नमाके चिया।
कुके जनम खराखिल पइत रे
कुके जनम नमाके चिया रे
कुके जनम नमाके चिया।

166. रांडी पाचो तंग्गेदा बड़े लांग चंगिया
टोंगरी चढ़ाले हांक दियाए रे
टोंगरी चढ़ाले हांक दियाए।
एके हांकन हांकए दुइयो हांकन हांकाए
तीनो हांकन खोसा दिलाकाए रे
तीनो हांकन खोसा दिलाकाए।

167. चिकन फौड़ा एन्देर काल-दाए
गुचा जोड़ी कीरतागे का'ओत रे
गुचा जोड़ी कीरतागे का'ओत।
नीन खाई बोंग्गाली नहियर
गुचा जोड़ी कीरतागे का'ओत रे
गुचा जोड़ी कीरतागे का'ओत।

168. इ समय काला लागी
दोसर समय कीरो का माला रे
दोसर समय कीरो का माला।
चान्दो सुरूजा समाय कीरो रे
मनुख समय माला कीरो रे
मनुख समय माला कीरो।

169. नेखाए नालार झाल्ला फूला रे
मानी बटकी झिकझोड़ रे
मानी बटकी झिकझोड़।
नम्है आलार झाला फूला रे
मानी बटकी झिकझोड़ रे
मानी बटकी झिकझोड़।

170. भाई भाई नुं काटा पूजा मंजर
नाम बहिन गोतनी नू पेरेम र'ओत रे
नाम बहिन गोतनी नू पेरेम र'ओत।
पएरी बारी काटा पूजा मंजर
नाम बहिन गोतनी नू पेरेम र'ओत रे
नाम बहिन गोतनी नू पेरेम र'ओत।

171. डांडीनुम पड़ोए डांडीनुम पड़ोए
हियाखोल डांडीनुम पड़ोए रे
हियाखोल डांडीनुम पड़ोए।
पएरी बारी डांडीनुम पड़ोए
हियाखोल डांडीनुम पड़ोए रे
हियाखोल डांडीनुम पड़ोए।

172. समाधी सामधी बादय
नेगने सामधी नानोए रे
नेगने सामधी नानोए।
भाई माला बन्ध माला भाया रे
नेगने सामधी नानोए रे
नेगने सामधी नानोए।

173. सिरिमाला डोंगा बाटे
नसगो नहियारो कादी रे
नसगो नहियारो कादी।
डोंगा भइया नामके नरगा
नसगो डोंगा मइयां नादरसा बानर रे
नसगो डोंगा मइयां नादरसा बानर ।

174. पूर्बेत कोरोंजो मूली
डिग्री लागोका माला रे
डिग्री लागोका माला।
लगा हूँ लागो माला हूँ लागो
दासो रूपिया लागो रे
दासो रूपिया लागो।

175. इदिनाता राजी कीड़ा
झइली बिनको नरेगा लागी रे
झइली बिनको नरेगा लागी।
नरेगा नुरूखा भाया
झइली बिनको नरेगा लागी रे
झइली बिनको नरेगा लागी।

176. डिंडान्ती उइयोन उइयोन बचकाए जोड़ी
नकुन जोड़ी चाल माला ननदाय रे
नकुन जोड़ी चाल माला ननदाय।
नकुन गा जोड़ी बेंजेरकन बाचकए
नकुन जोड़ी चाल माला ननदाय रे
नकुन जोड़ी चाल माला ननदाय।

177. छक छक र'अन बिंडो पगारिया
जोड़ी पेलो हेलेरा लागी रे
जोड़ी पेलो हेलेरा लागी।
नेकन धारोय नेकन आम्बोए
जोड़ी पेलो हेलेरा लागी रे
जोड़ी पेलो हेलेरा लागी।

178. ख़ेल ख़िन्दकाय लालु भाया रे
मुका ख़िन्दका वेशे लागी रे
मुका ख़िन्दका वेशे लागी।
ख़ेल खोटरा लालु भाया रे
मुका केचका वेशे लागी रे
मुका केचका वेशे लागी।

179. बांस मालका पारेता भाया रे
हाथी जोड़ा नरेगा लागी रे
हाथी जोड़ा नरेगा लागी।
नरेगा चिया जोड़ी नरेगा चिया रे
रांजी नेरा नरेगा लागी रे
देशे नेरा नरेगा लागी।

180. बांस पाती बेचा कादय
पेलो नजाइर आमाके नाना रे
पेलो नजाइर आमाके नाना।
खेल होके झंइझ होके
पेलो नजाइर आमाके नाना रे
पेलो नजाइर आमाके नाना।

181. रन रन बिड़ा लागी
मदागी खतेरा लागी रे
मदागी खतेरा लागी।
खतेरा चिया जोड़ी खतेरा चिया रे
पेलोगे पेसागे भारी मन लागी रे
पेलोगे पेसागे भारी मन लागी।

182. हिदेनु बिसोए दादा
चली बाली चोतोर मानी रे
चली बाली चोतोर मानी।
गेच्छानु बिसोए दादा
बारो बछरनु नुन्दुल बारोन रे
तेरो बछरनु नुन्दुल बारोन।

183. हारे नेग्गेदा बिजोली
नेंग्घए संगे भेजा बेचो रे
नेंग्घए संगे भेजा बेचो।
चिरा चिलपी मैंना जोड़ी
असीना गोसन भेजा बेचोन रे
असीना गोसन भेजा बेचोन।

184. नेकागे नूया कादय माया
नेकागे भरिया कादय रे
नेकागे भरिया कादय।
निंग्यो निम्बा माला बेंजोर होले
नेकागे भरिया कादय रे
नेकागे भरिया कादय।

185. गुच़ बिजोली कोओत कोए
चाटी निंग्घए खारा रीझ लागी रे
चाटी निंग्घए खारा रीझ लागी।
नम्हैं जोंखर केरार
चाटी निंग्घए खारा रीझ लागी रे
चाटी निंग्घए खारा रीझ लागी।

186. छोट बोड़ान पाहीनना बरचार
आयो एकासे नानोए यो
आयो एकासे नानोए।
पुना किचारी पुना दौड़ा
ओथरोए हेबड़ोए चियोए रे
ओथरोए हेबड़ोए चियोए।

187. छक् छक् रन र'आदन छम् छम् र'आदन
नेनुला बिड़िदो एरोए रे
नेनुला बिड़िदो एरोए।

पंचारिन ओकतोन सांए रूपिया डाली डिबन गनोए
नेनुला बिड़िदो एरोए रे
नेनुला बिड़िदो एरोए।

188. टंग टंगरन चान्दो बिल्ली
बेंजरोए का ढुकु कोरोए रे
बेंजरोए का ढुकु कोरोए।

पंचारिन ओकतोन पांच जूता लाओए
ढुकु कोरोन नेन्देर नानोर रे
ढुकु कोरोन नेन्देर नानोर।

189. खेर चींखो बिजोबारी
गुचा जोड़ी नखेरा का'ओत रे
गुचा जोड़ी नखेरा का'ओत।

पएरी बारी बिजो बारी
गुचा जोड़ी नखेरा का'ओत रे
गुचा जोड़ी नखेरा का'ओत रे।

190. ख़ेंसो ख़ेसो नेरेदी कोए आयंग
ख़ेंसो ख़नन हुड़ोन धारा चियोन रे
ख़ेंसो ख़नन हुड़ोन धारा चियोन।

पइरी बारी नुरेदी कोए आयंग
ख़ेंसो ख़नन हुड़ोन धारा चियोन रे
ख़ेंसो ख़नन हुड़ोन धारा चियोन।

191. ईदिनाता राजी कीड़ा
काटे मन्नन धाजा हेचा रे
काटे मन्नन धाजा हेचा।
जोंख़ासिन धराए कुम नड़खा तोखाए कोए
राजी कीड़ा नेनोला र'ओ रे
राजी कीड़ा नेनोला र'ओ।

192. नेकाया कादी लोसोड़ रे फोसोड़ रे
नेकाया कादी छमर छमर रे
नेकाया कादी छमर छमर।
सासुरेर कादी लोसोड़ रे फोसोड़ रे
नहियारो कादी छमर छमर रे
नहियारो कादी छमर छमर।

193. चल सुकरा हिले लेद्रा
बेचा बलेदन ब'ई रे
बेचा बलेदन ब'ई।
पएरी बारी हिले लेद्रा
बेचा बलेदन ब'ई रे
बेचा बलेदन ब'ई।

194. बेचना गे दादा रिसरिसिदाय भला
डिंडा र'अना गोटी बेचोन गो
डिंडा र'अना गोटी बेचोन।
पएरीबारी दादा रिसरिसिरदाए भला
डिंडा र'अना गोटी बेचोन गो
डिंडा र'अना गोटी बेचोन।

195. बाप रे बा'अदन चांवरसी मलका
तिन ढेबुआ नम्बारो पेलो रे
तिन ढेबुआ नम्बारो पेलो।
गोला आडोन बिसोए चांवरसी खेन्दोए
तिन ढेबुआ नम्बारो पेलो रे
तिन ढेबुआ नम्बारो पेलो।

196. बीरू केसलपुर भागेंड़ा ननजा
नूया नामा काला भाया रे भरिया काला रे
नूया नामा काला भाया रे भरिया काला।
गोलर गे नूया काला रे
पेलार गे भरिया कादए रे
पेलार गे भरिया कादए।

197. जाशपुरिया बेलास रे
नवरन पेसा माला चीदस रे
नवरन पेसा माला चीदस।
पेसागा चीदस भाया रे
बराबइर बटेरा ननदन रे
बराबइर बटेरा ननदन।

198. रांची कादाय लोहोड़दगा कादय
नेन्देर बाते गे कादय रे
नेन्देर बाते गे कादय।
बाते चिते गंवार भाया
रसल साहेब के माराए रे
रसल देवान के माराए।

परिचय

नाम - भीखू तिरकी

पिता - बासु उराँव

माता - घसनी उराँव

जन्म तिथि - 15 अप्रैल, 1938

साबिक पता - ग्राम-दिघिया, पोस्ट-तुको, थाना-बेड़ो, जिला-राँची।

शिक्षा - इंगलिस मिडिल स्कूल, दिघिया, संन्त इग्नातियुस हाई स्कूल, गुमला, सन्त जेवियर्स कॉलेज, राँची, छोटानागपुर ला कॉलेज, राँची।

शैक्षणिक योग्याता- बी.कॉम., बी.एल.

व्यवसाय - बी.पी.एस.सी. 1963 मजिस्ट्रेट

पदस्थापन- क्षत्तिपूर्ति पदाधिकारी हजारीबाग 1963-65, सहायक बन्दोवस्त पदाधिकारी शाहाबाद एवं रिलीफ ऑफिसर भभुआ 1966-67, प्रखण्ड विकास पदाधिकारी सह अंचलाधिकारी बरकट्ठा हजारीबाग उदवन्त नगर आरा, हरिहरगंज, पलामू 07.09.1968-21.11.1976 प्रशासक डोरंडा नगरपालिका 30.11.1976-19.11.1980, आप्त सचिव करमचन्द भगत, कबिनेट मंत्री, बिहार सरकार, 19.12.1980-15.08.1983, भूमि सुधार उपसमार्हता चक्रधरपुर, सिंहभूम 19.12.1983-03.12.1986, डिपुटी कमिश्नर परिवहन सह सचिव आर.टी.ए., सहारसा 10.12.198.-23.02.1991, उपनिर्देशक कल्याण द.छो.प्र. राँची 25.03.1991-30.4.1996

सेवा निवृत्ति - 30.04.1996 उसके बाद सदस्य कंजुमर्स कोर्ट 1998-2003 तक

कृत्तियाँ -

1. उराँव सरना धर्म और संस्कृति - 2011
2. उराँव सीखें-2013
3. कुँड़ुख़ चोन्हा कत्थ टूड़ - 2014
4. कुँड़ुख़ पुरखर गहि लूरगर कत्था - 2015
5. पुरखर गहि तिंगका खीरी अरा बुझौवल - 2016

PUBLISHER :-

Jharkhand Jharokha

Shop No. D.G. 03, New building, New Market
Ratu Road, Ranchi (Jharkhand),Pin-834001
Mob. - 09973112040, 09471160792
E-mail : jharkhandjharokha@yahoo.com

ISBN : 978-93-85595-58-5

978-93-85595-58-5

मूल्य : 200.00 रू.